व-विचार-माला — के. कादवे
मंगल-विचार
नागपुर प्रकाशन, नागपुर १

मंगल-विचार

लेखक :
ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे.

❁

अनुवादक :
विद्याधर जोहरापुरकर एम्. ए.
नागपुर २.

[प्र]थमावृत्ति १९५९

卐

मूल्य ढाई रुपया

दै व वि चा र मा ला. क्र. –३

विषयानुक्रम

—०—

प्रकाशक—
अशोक दिगंबर धुमाळ
नागपुर प्रकाशन
सीताबर्डी, नागपुर १

मुद्रक—
ल. म. पटले
रामेश्वर प्रिंटिंग प्रेस
सीताबर्डी, नागपुर १

मंगल विचार

प्रकरण १

प्रास्ताविक

हजारों वर्षों के इतिहास का अनुभव है कि किसी भी राष्ट्र, समाज या व्यक्ति के लिए रक्षक के रूप में एक वर्ग की जरूरत होती है। यदि यह वर्ग नहीं हो तो राष्ट्र या समाज के जीवन में और व्यक्तियों में अव्यवस्था फैलती है। खून, डकैत और गुंडागर्दी शुरू हो जाती है और सब जगह गडबड का वातावरण पैदा होता है। ऐसी अव्यवस्था न हो और समाज व्यवस्थित और सुखी रहे तथा अपराध करने की प्रवृत्ति समाज में न फैले इसी लिए दंडविधान (क्रिमिनल प्रोसीजर कोड) का निर्माण होता है। इसी दंडविधान के पालन के लिए पुलिस की नियुक्ति होती है। पुलिस का वह छोटासा डंडा और उसकी काली पोशाक यह सरकार की दंडशक्ति का एक प्रतीक है।

मनुष्य के शरीर का निर्माण हुआ—उसे चैतन्य प्राप्त हुआ कि उसकी सुरक्षा के लिए और वृद्धि के लिए शक्ति की जरूरत होती है। इसी प्रकार राज्य और प्रजा का गठन होकर जब राष्ट्र निर्माण होता है तब उसमें भी वृद्धि और और सुरक्षा के लिए शक्ति की जरूरत होती है। मनुष्य में शक्ति न हो तो वह मृतवत् होता है, उसका कोई उपयोग नहीं होता। इसी प्रकार राष्ट्र में सामर्थ्य न हो तो वह राष्ट्र के रूप में अधिक समय तक नही टिक सकता। इसी लिए पुलिस और सेना का गठन करके राष्ट्र की शक्ति संगठित की जाती है।

ग्रहों के समूह में भी प्रायः ऐसी ही व्यवस्था है। सूर्य यह शरीर और आत्मा का प्रतिनिधि है और चंद्र मन या जीव का। इसका संयोग होने पर उन्हें जिस शक्ति की जरूरत होती है उसी शक्ति का प्रतिनिधि मंगल है। सामर्थ्य कितना भी प्राप्त हो, हाथी जैसी शक्ति क्यों न हो, उसके प्रयोग के लिए बुद्धि की जरूरत है। बुद्धि का ही प्रतिनिधि बुध है। यह बुद्धि अपक्व होती है। यही जब प्रगल्भ होती है तब ज्ञान का रूप धारण करती है जिससे वह अपने स्वयं शक्ति से बहुत कार्य कर सकती है। इसी ज्ञान का प्रतिनिधि गुरु है। काम करके थक जाने पर आनंद और समाधान प्राप्त करना जरूरी होता है। थकावट दूर कर के कलाओं द्वारा आनंद देने का यह कार्य शुक्र करता है। इस प्रकार सुख से जीवन बिताने पर अन्तिम समय आता है। जीवनसमाप्ति के इस कार्य का प्रतिनिधि शनि है।

ग्रहों की इस व्यवस्था में शक्ति का प्रतिनिधि जो मंगल है उसी का इस पुस्तक में विचार करना है।

प्रकरण २

मंगल का स्वरूप

मंगल को पृथ्वी का पुत्र कहा गया है। ग्रहों के कुटुम्ब में रवि पृथ्वी के पिता के स्थान में है और चन्द्र माता के स्थान में है। इस लिए मंगल में रवि और चन्द्र दोनों के गुणों का कुछ कुछ मिश्रण पाया जाता है। अब इसके विषय में शास्त्रकारों के मतों का परिचय देते हैं।

आचार्य – शरीरलक्षण–वक्रः नात्युच्चो रक्तगौरः । यह बहुत ऊंचा नहीं होता । वर्ण कुछ लाल और गौर होता है । सूर्य का लाल वर्ण और चन्द्र का गौर वर्ण इन दोनों का यह मिश्रण हुआ । सत्वं कुजः--सत्व यह इसका गुण है । क्षितिसुतो नेता–यह सेनापति है । अतिरक्तः-बहुत लाल होता है । समज्जा भौमः–मज्जा धातुपर अर्थात मस्तिष्क पर इसका अधिकार है । स्थान -अग्नि, वस्त्र–जला हुआ, धातु–सुवर्ण, ऋतु-ग्रीष्म, रुचि–कडवी इस प्रकार इसके अन्य विशेष हैं ।।

कल्याणवर्मा – चेतः सत्वं धराजः, कुमारः सेनापतिः, दिशा–दक्षिण, पाप, देवता–अरुण तथा कार्तिकेय, पुरुष, वर्ण–क्षत्रिय, रुचि-कडवी, स्थान-अग्नि, वस्त्र-दृढ, धातु–सोना, दिन, ऋतु–ग्रीष्म, वेद-सामवेद, लोक–तिर्यक् लोक, इस प्रकार मंगल का स्वरूप है।

वैद्यनाथ – सत्वं भौमः, कुजो नेता, संरक्तगौरः, ताराग्रहो धरासुतः । यह ग्रह तारात्मक है। मंगलः पापः–यह पाप फल देता है । आरःपृष्ठेनोदेति सर्वदा यह नित्य ही पिछले भागसे उदय होता है। क्ष्माजो चतुष्पदौ–यह चौपाया है । कुजो भवति शैलाटविसंचरन्तः–पर्वत और जंगलों पर इसका अधिकार है। बालो धराजः–यह बाल है। आरःशाखाधिपः–यह शाखाओं का स्वामी है । वर्ण–आरक्त, द्रव्य–सुवर्ण, देवता–कार्तिकेय, रत्न-प्रवाल, वस्त्र-जला हुआ, दिशा–दक्षिण, ऋतु–ग्रीष्म, स्थान–अग्नि, प्रदेश लंका से कृष्णा नदी तक, वर्ण–क्षत्रिय, गुण–तम, पुरुष, तत्त्व-तेज, धातु-मज्जा, रुचि–कडवी, दिन । अथोर्ध्वदृष्टिर्भौमः–इस की दृष्टि ऊपर होती है । शनिना महीसुतः–यह शनि के द्वारा पराजित होता है ।।

मंगल के बलवान होने के स्थान इस प्रकार हैं—आरः स्ववारनग-भागदृगाणवर्गे मीनालिकुंभमृगतुंबरयामिनीषु। वक्री च याम्यदिशि राशिमुखे बलाढयो मीने कुलीरभवने च सुखं ददाति॥ मंगलवार को, नवांश तथा द्रेष्काण कुण्डली में स्वगृह में हो तब, मीन, वृश्चिक, कुंभ, मकर तथा मेष इन राशियों में, रात्रि में, वक्री हो तब, दक्षिण दिशा में तथा राशि के प्रारम्भ में मंगल बलवान होता है। यह मीन तथा कर्क राशियों में सुख देता है।

मंगल के अधिकार के रोग इस प्रकार हैं—

पीनवीजकफशस्त्रपावकग्रंथिरुग्व्रणदरिद्रजामयैः।
वीरशैवगणभैरवादिभिर्भीतिमाशु कुरुते धरासुतः॥

अंडवृद्धि, कफ, शस्त्र तथा अग्नि द्वारा पीडा, फोडे फुन्सी आदि गांठों के रोग, व्रण, दारिद्र्य के कारण उत्पन्न हुए रोग तथा शिव के गण—भैरव आदि देवताओं द्वारा पीडा ये फल मंगल से प्राप्त होते हैं।

पाराशर—सत्वं कुजः, नेता ज्ञेयो धरात्मजः, अत्युच्चांगो रक्तभौमो भौमः, देवता—षडाननः, भौमो नरः, भौमः अग्निः, कुजः क्षत्रियः, आरः तमः, भौमः मज्जा, भौमवारः, भौमः तिक्तः, भौमः दक्षिणे, कुजः निशायां बली, भौमः कृष्णे च बली, क्रूरः। स्वदिवस-समहोरामासपर्वकालवीर्यक्रमात् श—कु—बु—गु—शु—चराद्या वृद्धितो वीर्यवत्तराः॥ स्थूलान् जनयति सूर्यो दुर्भगान् सूर्यपुत्रकः। क्षीरोपेतान् तथा चंद्रः कटुकाद्यान् धरासुतः॥ वस्त्रम् रक्तचित्रं कुजस्य। कुजः ग्रीष्मः

गुणाकर—सत्वं भौमः, नेता भौमः, भौमः शोणः, भौमः दक्षिणः, रग्रहः कुजः, भौमः क्षत्रियः, साग्नां महीजः, भौमः नरः, भौमः

सहोत्थ:, भौम: स्कन्द:, वस्त्रम्-अग्निदग्धम्, भौम: कांचनम्, भौम: अग्निशाला, भौम: तिक्तम्, भौम: दिनम्, भौमः अग्नि: भौम: तम: ।

सर्वार्थचिन्तामणि—भौमो नरपालमुख्य:, भौम: अतिरक्त: भौम–अग्नि, भौम–दक्षिण, भूसूनु: पाप:, कुजात् नरेज्या, भौम–मज्जाभेद, देवस्थान, अग्नि, वस्त्र–कुजस्याग्निहतं क्लिन्नं, हिरण्यं तु धरासुत:, रक्तं चित्रं कुजस्य, ऋतु–ग्रीष्म, भूमिसुतस्य तिक्तं, दिनं कुजस्य, भौम–धातु ग्रह, ऊर्ध्वदृष्टि, सेनापति: कुजः, सत्वं कुज: ।

जयदेव—आर-दक्षिण, कुज–सत्वं, भौम-नर:, क्षितिजं ब्रुवतेऽरण्यचारिणम्, मध्यान्हं भूमिज:, भौम: व्योमदर्शी, भौम–धातु, भौम–चतुष्पद, भौम-शेष, दक्षिणमुख:, नेता–भौम:, मंगलः–स्वामी, स्वर्णकार: क्षिते: पुत्र:, युवा कुज:, भौम: प्रकृत्या दु:खदो नृणाम्, आर: क्षत्राणां, नक्तं काल:, कुजश्च बली, देवस्थान, अग्नि, वस्त्र–वन्हिहत, धातु–मणि, भौम–विद्रुम ।

मंत्रेश्वर—चौरम्लेच्छकृशानुयुद्धभुवि दिग् याम्या कुजस्योदिता । चोर तथा नीच लोगों के स्थान, अग्नि के स्थान, युद्धभूमि, दक्षिण दिशा, ये मंगल के स्थान हैं। भौमो महानसगतायुधभृत्सुवर्णकाराज-कुक्कुटशिवाकपिगृध्रचौरा: । रसोइये, शस्त्रधारी, सुनार, बकरा, मुरगा, सियार, बन्दर, गीध तथा चोर इन पर मंगल का अधिकार है। देवता–गुह, अग्नि, प्रदेश–अवन्ति, रत्न–विद्रुम, वस्त्र–अग्निदग्धं कुजस्य, रस–भूमिसुतस्य तिक्तम्, चिन्ह–क्षितिभुवः स्याद् दक्षिणे लांछनम्—शरीर के दाहिने भाग पर कुछ विशेष चिन्ह होता है। कंटकनगौ भौमार्कजौ—कांटेदार वृक्षों पर मंगल का अधिकार है। इसकी आयु सोलह वर्ष की है।

पुंजराज—देवता-गुह, सत्वं भौमः, सैन्यनेता भौमः, वर्ण-रक्ततर, भूमि अधिपति, दिशा-दक्षिण, वेद-सामवेद, स्वभाव-क्रूर, वर्ण-क्षत्रिय, नरः कुजः, कटुकौ कुजार्कौ-कडवी रुचि, काल-वासर (दिन), पुंलोकेशौ कुजादित्यौ—यह मृत्युलोक का स्वामी है। (एक अन्य मत—तिर्यग्लोकस्य सूर्यारौ—यह पाताल लोक का स्वामी है।)

विलियम लिली—अनुक्रम में मंगल का स्थान गुरु के वाद है। इसका आकार छोटा है और यह अग्नि जैसे चमकीले वर्ण का दिखता है। यह ६८६ दिन तथा २२ घंटों में राशिचक्र की परिक्रमा पूरी करता है। इसका उत्तर की ओर अधिकतम शर ४-३१ होता है और दक्षिण की ओर ६-४७ होता है। यह ८० दिन वक्री होता है तथा २ या ३ दिन स्थिर होता है। कर्क, वृश्चिक तथा मीन इन तीन जलराशियों पर इसका पूर्ण अधिकार है। यह पुरुष प्रकृति का, रात्रि के समय का, उष्ण, रूखा, अग्नि जैसा ग्रह है। यह झगडे, कलह तथा विरोध का प्रेरक है।

अब इन शास्त्रकारों के मतों का विवेचन करेंगे।

सत्त्व—इस ग्रह में शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार का सामर्थ्य है। मल्ल, पुलिस, सैनिक, इंजीनियर, ड्राइवर आदि लोगों में जो शारीरिक सामर्थ्य जरूरी होता है उस पर मंगल का अधिकार है। दूसरा मानसिक सामर्थ्य उन लोगों में होता है जो राष्ट्र के उदयकाल में बडे बडे नेता होते हैं। उन पर भी मंगल का अधिकार होता है। ये नेता क्रान्ति चाहते हैं और उसकी सफलता के लिए प्राणों तक की बाजी लगा देते हैं। विपत्ति से सामना करने वाले, हठी तथा आग्रही स्वभाव के इन लोगों का मानसिक सामर्थ्य बहुत

अधिक होता है। भारत में १९०८ से जो क्रान्तिकारी हुए उन पर प्राय: मंगल का ही अधिकार था।

नेता—(सेनापति)-सभी शास्त्रकारों ने इस ग्रह के जो वर्णन दिए हैं उनके अनुकूल ही यह सेनापतिं पद है।

धातु–प्राय: सभी शास्त्रकारों ने इस ग्रह के अधिकार में मज्जा धातु कही है। मेरे विचार से मज्जा धातु मस्तिष्क में होने के कारण इस पर बुध का अधिकार होना चाहिए। चरबी पर गुरु का स्वामित्व और मांस पर मंगल का स्वामित्व मानना उचित है। इस मत के अनुकूल वर्णन सिर्फ मंत्रेश्वर ने किया है—इस ग्रह का मांस और अस्थियों पर स्वामित्व है।

स्थान—मंगल का स्थान अग्नि कहा है। सिर्फ आंखों से देखा जाय तो यह ग्रह अग्नि के समान ही लाल दिखता है इसी पर आधारित यह कल्पना है। मंगल पर से ही किसी व्यक्ति के रसोईघर का विचार किया जा सकेगा। चोर और नीच लोगों के स्थान यह जो वर्णन है यह गलत मालूम होता है। इन लोगों के स्थानों पर शनि का अधिकार होना चाहिए। युद्ध का स्थान यह वर्णन ठीक है। युद्धभूमि पर मंगल का निवास होता है। जिस पक्ष की ओर मंगल प्रबल होगा उसी का युद्ध में जय होता है।

वस्त्र—कल्याणवर्माने दृढ तथा पराशर ने लाल रंग के रंगबिरंगे वस्त्र ऐसा वर्णन दिया है। अन्य शास्त्रकारों ने जला हुआ वस्त्र कहा है। लोगों में भी कहावत प्रचलित है कि सोमवार का वस्त्र फटता है, मंगलवार का जलता है और गुरुवार तथा बुधवार का अच्छा होता है। इसी लिए मंगलवार को नया वस्त्र नहीं पहनना चाहिए ऐसा माना जाता

है। मेरे विचार से जले हुए वस्त्र के बारे में यह मत ठीक नही है। यहां कल्याणवर्मा का ही मत योग्य प्रतीत होता है। पुलिस, सैनिक आदि जिन लोगों पर मंगल का स्वामित्व है उनके वस्त्र मोटे और बहुत समय तक टिकनेवाले ही होते हैं।

धातु–सुवर्ण–मंगल और सोना दोनों का रंग कुछ लाल और गौर हैं यह देखकर इस धातु पर मंगल का अधिकार माना है। किन्तु यह मत योग्य नही है। सोने को आजकल के राष्ट्रीय तथा राजकीय व्यवहार में बहुत महत्त्व का स्थान प्राप्त हुआ है तथा राजकीय व्यवहारों पर रवि का अधिकार है। अतः सुवर्ण पर भी रवि का ही स्वामित्व मानना चाहिए। युद्ध के समय लोहे को महत्त्व प्राप्त होता है। तोपें आदि सभी शस्त्र लोहे के ही बनते हैं। युद्ध और शस्त्रों पर मंगल का अधिकार है। अतः मंगल के अधिकार में लोह धातु ही योग्य है।

ऋतु-ग्रीष्म–बरसात के दिनों से पहले इस ऋतु में गरमी की बहुत तकलीफ होती है अतः इस पर मंगल का अधिकार मानना ठीक है।

दिशा—दक्षिण—पुराणों में यम को दक्षिण दिशा का स्वामी माना है। यम के समान ही मंगल भी जीवहानि कराता है इस लिए यह दिशा वर्णन ठीक है।

शुभाशुभ—इसे पापग्रह माना है। यह स्वभावतः दाहकारक है इस लिए इसे पाप फल देनेवाला माना गया। यह एक पक्ष है। इसके शुभ फल भी मिलते हैं इसका अच्छी तरह विचार नही किया गया है।

देवता—गुह, कार्तिकेय, स्कन्द अथवा षडानन ये शिवजी के पुत्र के नाम हैं। पुराणों में कहा है कि ये देवताओं के सेनापति थे

तथा इन्होंने तारकासुर का वध किया था। इनके समान मंगल को भी सेनापति कहा गया है इसलिए ये इस ग्रह के देवता हुए।

लिंग—यह पुरुष ग्रह है।

वर्ण—क्षत्रिय–यह युद्ध का कारक है अतः इसे क्षत्रिय माना गया।

रुचि—आचार्य और पुंजराज ने इस ग्रह के अधिकार में कडवी रुचि मानी है किन्तु यह ठीक प्रतीत नही होता। अन्य शास्त्रों में तीखी रुचि मानी है वह योग्य है। मिर्च का वर्ण भी मंगल के समान ही लाल होता है। अतः तीखी रुचि पर ही उसका स्वामित्व मानना उचित होगा।

काल—यह दिन का अधिपति है।

वेद – चार वेदों में इसे सामवेद का अधिकारी कहा है। किन्तु सामवेद गायन का वेद है उससे इस ग्रह का सम्बन्ध स्पष्ट नही होता; मंगल का स्वर या ध्वनि पर अधिकार होता है–गायन पर नही। वस्तुतः इसे अथर्ववेद का कारक मानना चाहिए।

लोक—कुछ शास्त्रकारों ने इसे तिर्यक् लोक अर्थात पाताल का स्वामी माना है। इसे यमलोकका स्वामी मानना उचित है। कुछ शास्त्रकारों ने मृत्युलोक कहा है वह साधारणतः ठीक है क्यों कि मृत्युलोक के समान ही मंगल भी भौतिक तत्त्वों का (मटीरियलिस्टिक) ग्रह है।

उदय—इसका उदय पृष्ठ अर्थात् पिछले भाग से होता है।

वर्ग—चतुष्पाद–यह क्रूर ग्रह है अतः कुत्ता, सियार, भेडिया, बिल्ली, चीता, शेर, लाल मुंह के बन्दर आदि क्रूर जानवरों पर इसका अधिकार है। इसी लिए इसे चतुष्पाद कहा है।

संचारस्थान—कुछ शास्त्रकारोंने पर्वत, अरण्य यह स्थान कहा है तो दूसरों ने इसे आकाशगामी माना है। इनमें पहला मत

अधिक योग्य है क्यों कि मंगल के अधिकार के उक्त क्रूर जानवर पहाडों तथा जंगलों में ही रहते हैं।

अवस्था।—इस ग्रह का मानव की बाल्यावस्था पर स्वामित्व है। इसी अवस्था में रक्त दूषित होने की सम्भावना अधिक होती है इस लिए विषम ज्वर, खुजली, फोडे फुन्सी, माता आदि रोग होते हैं। रक्त के इस सम्बन्ध से ही मंगल का बाल्यावस्था पर अधिकार माना होगा। २६ से ३२ वें वर्ष तक अर्थात तरुण अवस्था में भी इस ग्रह का प्रभाव प्रतीत होता है।

अधिप—शाखाधिप इस वर्णन का स्पष्टीकरण नही होता।

रत्न – प्रवाल-इस रत्न का मंगल से क्या सम्बन्ध है यह स्पष्ट नही है। इस विषय में एक अनुभव नोट करने योग्य है। एक छोटा लड़का स्वभाव से बहुत क्रोधी और अति तामसी था। यह हमेशा कहीं से गिर पडता जिससे खून बहकर उसे तकलीफ होती थी। इसे बार बार ज्वर आता था। कई प्रयत्न किए गए किन्तु इसे कोई लाभ नहीं हुआ। एक बार एक ईंगनी ने एक उत्तम प्रवाल इस लडके के लिए दिया। वह उसके गले में बांधते ही उसकी स्थिति में सुधार हुआ। स्वभाव बदल कर वह अच्छी तरह रहने लगा तथा गिरना, ज्वर आना, खून बहना, जलना आदि प्रकार भी बन्द हुए।

तत्त्व तेज–इस तत्त्व पर वस्तुतः रवि का स्वामित्व है किन्तु मन्त्रेश्वर ने यह मंगल का तत्त्व माना है। पुंजराजके मत से यह भूमि का अधिपति है तो अन्य शास्त्रकार इसका सम्बन्ध अग्नि से कहते हैं। इन में पुंजराज का मत ठीक है। भूमि के साथ अग्नि का भी इस ग्रह से सम्बन्ध हो सकता है।

दृष्टि—ऊर्ध्वदृष्टि यह वर्णन योग्य है। इसका अनुभव सेना, पुलिस आदि की परेड में देखना चाहिए। इन्हें हमेशा दृष्टि सीधी रखनी पड़ती है। पैरों के नीचे कुछ भी हो उसका विचार करना उन्हें सम्भव नही होता। अतः यह वर्णन ठीक है।

पराजय—शनि के द्वारा इस ग्रह का पराजय होना कहा गया है। किन्तु अनुभव उल्टा आता है। मंगल द्वारा ही शनि का पराजय देखा गया है।

बलवान काल - मंगल किस समय बलवान होता है यह पहले कहा ही है। पराशर के मत से कृष्ण पक्ष में तथा संध्या समय यह बलवान होता है। जयदेव ने रात्रि का समय कहा है। जयदेव का मत योग्य है। इसने मध्यान्ह काल भी कहा है। जीवन में तरुण अवस्था यही मध्यान्ह है जब मनुष्य पराक्रम करता है, धन तथा कीर्ति प्राप्त करता है और संसार में मग्न होता है। इस काल में मंगल को बलवान मानना योग्य ही है।

आप्त - बन्धुओं का विचार मंगल से करना चाहिए ऐसा कहा है। कारक प्रकरण में इसका विवेचन करेंगे।

जाति—सामान्यतः इसे क्षत्रिय माना है। जयदेव ने इसकी जाति सुनार कही है। शनि महात्म्य ग्रन्थ में भी इसे सुनार ही कहा है। वास्तव में सुनार जाति पर मंगल का ही अधिकार है क्यों कि सोने के अलंकार बनाते समय इन्हें अग्नि से ही काम लेना पडता है।

लांछन—यह दो प्रकार का होता है। तिल, व्रण आदि शारीरिक लांछन हैं। दुर्वर्तन द्वारा लोगों में अपकीर्ति होना यह दूसरे प्रकार का लांछन है। इन दोनों पर मंगल का अधिकार है।

मुख—इसका मुख दक्षिण की ओर माना है इसकी उपपत्ति स्पष्ट नही है।

धान्य—मसूर की दाल पर मंगल का अधिकार है। मंगल की शान्ति के लिए इसी के दान का विधान है।

विलिमय लिली का वर्णन—इसे रात्रि का ग्रह कहा है क्यों कि इसके कार्य रात के समय ही जल्दी होते हैं। यह अग्नि के स्वरूप का है अतः इसे उष्ण और रूक्ष माना है।

प्रकरण ३

मंगल का मूल स्वरूप

आचार्य—क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरुदारः पैत्तिकः सुचपलः कृश-मध्यः। इसकी दृष्टि क्रूर अर्थात् उग्र होती है। आकार युवक जैसा होता है। यह उदार, पित्त प्रकृति का और चपल होता है। इसका मध्यभाग (कमर) पतला होता है। इसके अतिरिक्त यह ऊंचा नही होता और इसका वर्ण गौर होता है यह पहले कहा जा चुका है।

कल्याणवर्मा—ह्रस्वः पिंगललोचनो दृढवपुर्दीप्ताग्निकान्ति-श्चलो मज्जावानरुणाम्बरः पटुतरः शूरश्च निष्पन्नवाक्। ह्रस्वाकुंचित-केशदीप्ततरुणः पित्तात्मकस्तामसः चंडः साहसिको विघातकुशलः संरक्तगौरः कुजः॥ यह नाटा, लाल आंखों वाला, मजबूत शरीर का तथा अग्नि जैसा तेजस्वी होता है। यह चंचल, लाल वस्त्र पहनने वाला, कुशल, वीर तथा बोलने में प्रवीण होता है। इसकी मज्जा धातु अच्छे परिमाण में होती है, केश छोटे और लहरीले होते हैं तथा प्रकृति पित्त की होती है। यह तेजस्वी, तरुण, क्रूर, तामसी स्वभाव

का, साहसी तथा किसी भी कार्य का विघात करने की प्रवृत्ति का होता है। इसका रंग कुछ लाल और गोरा होता है।

वैद्यनाथ—क्रूरेक्षणस्तरुणमूर्तिरुदारशीलः पित्तात्मकः सुचपलः कृशमध्यदेशः। संरक्तगौररुचिरावयवः प्रतापी कामी तमोगुणरतस्तु धराकुमारः॥ यह क्रूर दृष्टि का, तरुण आकार का, उदार स्वभाव का, पित्त प्रकृति का, चपल, पतली कमर वाला, कुछ लाल गोरे वर्ण का, सुंदर अवयवों वाला, पराक्रमी, कामुक तथा तामसी होता है।

पराशर—क्रूरो रक्तारुणो भौमश्चपलोदारमूर्तिकः। पित्तप्रकृतिकः क्रोधी कृशमध्यतनुर्द्विजः॥ यह क्रूर, लाल वर्ण का, चपल, उदार, पित्त प्रकृति का, क्रोधी और पतली कमर वाला होता है।

गुणाकार—हिंस्रो ह्रस्वो दीप्तकायोऽग्निवर्णः शूरस्त्यागी पैत्तिकस्तामसश्च। मज्जासारो रक्तगौरो युवा स्यात् शश्वच्चंडः पिंगलाक्षो महीजः॥ यह घातक, नाटे कद का, अग्नि जैसा तेजस्वी, शूर, उदार, पित्त प्रकृति का, तामसी, अच्छी मज्जा वाला, कुछ लाल गोरा, तरुण, क्रोधी और लाल आंखों वाला होता है।

सर्वार्थचिन्तामणि—कोपाग्निनेत्रः सितरक्तगात्रः पित्तात्मकश्चंचलबुद्धियुक्तः। कृशांगयुक्तामसबुद्धियुक्तो भौमः प्रतापी रतिकेलिलोलः॥ इसकी आंखें अग्नि जैसी लाल, वर्ण कुछ लाल गोरा, प्रकृति पित्त की, बुद्धि चंचल, अवयव कृश तथा वृत्ति तामसी होती है। यह पराक्रमी और कामुक होता है।

जयदेव—आरोऽप्युदारोऽपि च पीतनेत्रः क्रूरेक्षणोऽसौ तरुणात्मकश्च। संरक्तगौरश्चपलोऽतिहिंस्रः पित्तौष्मवान् मज्जिकयासुसारः॥ यह उदार, पीले रंग की आंखों वाला, क्रूर दृष्टि का, तरुण, कुछ लाल

गोरा, चपल, बहुत घातक, पित्त और उष्ण प्रकृति का होता है। इसकी मज्जा धातु अच्छी होती है।

मन्त्रेश्वर—मध्येकृशः कुंचितदीप्तकेशः क्रूरेक्षणः पैत्तिक उग्रबुद्धिः। रक्ताम्बरो रक्ततनुर्महीजः चंडोप्युदारस्तरुणोतिमज्जः॥ इसकी कमर पतली होती है, केश लहरीले और चमकदार होते हैं, दृष्टि क्रूर होती है तथा प्रकृति पित्त की होती है। इसकी बुद्धि उग्र, वस्त्र लाल, शरीर लाल और मज्जाधातु अधिक होती है। यह क्रूर किन्तु उदार और तरुण होता है।

पुंजराज—हिंस्रो युवापैत्तिकरक्तगौरः पिंगेक्षणो वन्हिनिभः प्रचंडः। शूरोप्युदारः सतमास्त्रिकोणो मज्जाधिको भूतनयः सगर्वः॥ यह हिंसक, तरुण, पित्त प्रकृति का, कुछ लाल गोरे वर्ण का, लाल आंखों वाला, अग्नि जैसा उग्र, शूर, उदार, तामसी स्वभाव का और गर्वीला होता है। इस का आकार त्रिकोण जैसा और मज्जा अधिक होती है।

महादेव—दुष्टदृक् तरुणः कृशमध्यो रक्तसितांगः पैत्तिकश्चंचलधीरुदारः प्रताप्यारः॥ इस की दृष्टि दूषित होती है। यह तरुण, कुछ लाल गोरे वर्ण का, पित्त प्रकृति का, चंचल बुद्धि का, उदार, शूर और पतली कमर वाला होता है।

विलियम लिली—मंगल प्रधान व्यक्ति मझले कद के होते हैं। शरीर मजबूत होता है। हड्डियां बडी होती हैं। ये स्थूल नही होते, कृश ही होते हैं। वर्ण कुछ लाल होता है। केश लाल वर्ण के, रेत जैसे और कई बार लहरीले होते है। दृष्टि तीक्ष्ण और भेदक होती है। आकृति आत्मविश्वासयुक्त और धैर्यशाली प्रतीत होती है।

ये क्रियाशील और निर्भय होते हैं। यह मंगल पूर्व की ओर हो तो वे व्यक्ति पराक्रमी और गौर वर्ण के तथा ऊंचे होते हैं। इन के शरीर पर केश बहुत होते हैं। यह यदि पश्चिम की ओर हो तो वर्ण गहरा लाल होता है, कद नाटा होता है, मस्तिष्क छोटा होता है, शरीर चिकना होता है और केश कम होते हैं। इन के केश पीले होते हैं और स्वभाव प्राय: रूखा होता है।

सिमोनाइट—प्रमाणबद्ध किन्तु नाटा कद, कृश शरीर, मजबूत स्नायु, लाल वर्ण, तीक्ष्ण दृष्टि, वक्र नाक, लाल और चमकदार केश, अग्नि जैसी आकृति, अच्छा मस्तिष्क, संघर्षप्रिय होना, बडे और नीरोग अवयय तथा स्वभाव उग्र होना ये मंगल के लक्षण हैं।

कुण्डली में मंगल की स्थिति अच्छी हो तो उस का फल क्या होता है इस विपयम में विलिय लिली कहते हैं–साहसी और धैर्यशाली, दूसरों को तुच्छ समझने वाला, तर्क की ओर ध्यानं न देने वाला, आत्मविश्वासी, दृढ, पराक्रमी, युद्धप्रिय, किसी भी संकट में खुद को फंसाने वाला, किसी के आगे न झुकनेवाला, अपनी ही प्रशंसा करने वाला, अपने विजय के आगे सब कुछ तुच्छ माननेवाला किन्तु अपने व्यवहारों में व्यवस्थित ऐसा यह व्यक्ति होता है। यदि कुण्डली में मंगल दूषित हो तो–वह व्यक्ति बकबक करनेवाला, उद्धत, अप्रामाणिक, झगडालू, हिंसक, चोर, खूनी, व्यभिचारी और दुराचारी होता है। यह वायु के समान चंचल, देशद्रोही, डाकू, साहसी, अमानुषिक प्रकृति का और ईश्वरसे भी न डरनेवाला होता है। यह किसी की परवाह नही करता। यह कृतघ्न, विश्वासघातक, लुटेरा, भयंकर और उग्र होता है।

मंगल जब अच्छा फल देता है तब आकाश में उस की स्थिति कैसी होती है इस का वर्णन आचार्य ने बृहत् संहिता में इस प्रकार किया है – विपुलविमलमूर्तिः किंशुकाशोकवर्णः स्फुटरुचिरमयूखस्तप्त-ताम्रप्रभाभः। विचरति यदि मार्गे चोत्तरं मेदिनीजः शुभकृदवनिपानां हार्दिदश्च प्रजानाम् ॥ अर्थात्-इस का आकार बडा होता है, वर्ण अशोक अथवा किंशुक के फूलों जैसा लाल होता है, किरण स्वच्छ और मनोहर होते हैं, कान्ति तपे हुए तांबे के समान होती है और यह उत्तर मार्ग से चलता है तब राजा और प्रजा के लिए कल्याणकारी होता है। ग्रह उत्तर या दक्षिण क्रान्ति में कब चलते हैं इस का वर्णन हमारे पंचांगों में नही होता। इस के लिए राफेल के अंग्रेजी पंचांग का ही अवलोकन करना पडता है जिस में ग्रह की दैनिक क्रान्ति और शर का विवरण दिया जाता है।

पूर्वोक्त स्वरूप का विवेचन—अब तक जो मंगल का स्वरूप कहा वह ऋषियों के अंतर्ज्ञान पर आधारित वर्णन है क्यों कि उस प्राचीन समय में दूरबीन आदि द्वारा वेध लेने की पद्धति नही थी। तथापि यह वर्णन प्रत्यक्ष स्थिति से बहुत अधिक मिलता है।

तरुण—दूरबीन से देखने पर मंगल अग्नि जैसा तेजस्वी व कान्तिमान प्रतीत होता है इसी लिए इसे तरुण कहा है। मंगल प्रधान व्यक्ति आयु के ४० वें वर्ष भी २९ वर्ष के समान तरुण प्रतीत होते हैं ऐसा अनुभव भी आता है।

क्रूरदृक्— अग्नि की ओर देखा नही जाता उसी प्रकार इस व्यक्ति से नजर मिलाना मुश्किल होता है। इस की दृष्टि भेदक और पूरे बदमाश के समान होती है।

उदार—जब से अग्नि का पता चला है संसार के लोगों ने उस से अनगिनत लाभ उठाए हैं। दूसरों के लिए खुद को कष्ट देते हैं इस लिए मंगल प्रधान व्यक्तियों को उदार कहा है।

पैत्तिक--अग्नि के समान उष्ण होने से उष्णता का विकार जो पित्त वही इस व्यक्ति की प्रकृति होती है।

चपल—पित्त प्रकृत्ति के व्यक्ति चपल होते ही हैं। काम करने का उत्साह इन में बहुत होता है।

कृशमध्य—कमर पतली होना इस स्वरूप का प्रत्यय सैनिक, पुलिस, ड्राइवर, इंजीनियर इन वर्गों में आता है।

ऊंचाई—सैनिक आदि वर्गों के मंगल प्रधान व्यक्ति बहुत ऊंचे होते हैं। किन्तु वैद्य, औषधि विक्रेता, कसाई, दर्जी, सुनार, लुहार, चमार, नाई, रंगारी, रसोइये, बढई, राजनीतिज्ञ, शस्त्रास्त्रों के संशोधक, शस्त्रों के निर्माता, मिलमजदूर आदि वर्गों में जो मंगल प्रधान व्यक्ति होते हैं वे प्रायः नाटे कद के होते है।

संरक्तगौर—खुली आंखों से भी मंगल का स्वरूप लाल दीखता है इस लिए इस का वर्ण कुछ लाल गोरा कहा है।

पिंगल लोचन—आंखें पीली लाल होती हैं ऐसा वर्णन है। अनुभव ऐसा है कि आंख की तारका (बीच का भाग) बहुत काली होती है और उसके चारों ओर सफेद भाग में लाल रंग की नसें अधिक मात्रा में होती हैं। दृष्टि बाज जैसी तीक्ष्ण होती है। कुछ उदाहरणों में तारका के चारों ओर का भाग बहुत सफेद होता है और दृष्टि सियार जैसी मालूम होती है। आंखें छोटीं और चंचल होती हैं। ये दूसरे प्रकार की आंखें नाटे कद के व्यक्तियों में पाई जाती हैं।

प्रचंड-रुचिरावयव-दृढवपु-ऊपर मंगल के स्वामित्व में दो प्रकार के वर्गों के लोग बतलाए हैं। इन में सैनिक आदि पहले वर्गों के लोगों में शरीर मजबूत होना दृढवपु-यह फल मिलता है। दूसरे वर्ग में रुचिरावयव-अवयव मनोहर होना-यह फल मिलता है।

दीप्ताग्निकान्ति—प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी-यह फल विशेषतः पहलवान, पुलिस आदि लोगों में देखा जाता है। इनका शरीर बहुत तेजस्वी होता है।

मज्जावान—मज्जाधातु अधिक होना-यहां वास्तव में मस्तिष्क बलवान होना ऐसा फल कहना चाहिए। बुद्धि से काम लेनेवाले लोगों -जैसे गणितज्ञ, कवि, नाटककार, लेखक, संशोधक-के मस्तिष्क बहुत बलवान होते हैं। इस बल का विचार मंगल की स्थिति से करना चाहिए।

रक्तांबर—मंगल का वर्ण लाल है इस लिए वस्त्र भी लाल कहा। मंगल की शान्ति के लिए लाल वस्त्र दान दिया जाता है।

शूर—उपर्युक्त दो वर्गों में पहले वर्ग के लिए ही यह वर्णन ठीक है। दूसरे वर्ग में यह फल नहीं मिलता।

ह्रस्वाकुंचितदीप्तकेश—केश छोटे, लहरीले और चमकदार होना यह फल पुरुषों के लिए ठीक है। किन्तु स्त्रियों के विषय में अनुभव उलटा है। इनके केश लंबे, घने, काले, चमकदार और मोहक होते हैं।

तामस—लाल वर्ण क्रोध और सामर्थ्य का प्रतीक है इस लिए मंगल को तामसी प्रकृति का कहा। (दया और प्रेम का वर्ण सफेद है, लज्जा का गुलाबी है, शर्म का हरा है तथा द्वेष और मत्सर का

काला है ऐसा इन वर्णों का और मानव की भावनाओं का सम्बन्ध कहा जाता है।)

साहसिक—धैर्य से साहसी कृत्य करने वाला, संकट के स्थान में भी न डरते जाने वाला ऐसा यह व्यक्ति होता है।

विघात कुशल—किसी भी अच्छे कार्य में विघ्न लाकर उस का नाश करने की इसकी प्रवृत्ति होती है। अग्नि जहां भी जाता है जलाने का ही काम करता है। ऐसी ही इस की भी प्रवृत्ति होती है। इस को काबू में रख कर अच्छा उपयोग करना मानव पर अवलम्बित है।

रतिकेलिलोल—कामुक-उष्ण प्रकृति के लोगों में कामवासना अधिक होती है। ये लोग शृंगारशास्त्रज्ञ हो सकते हैं।

हिंस्त्र—हिंसा करने वाला–इसे लडाई में और किसी का खून करने में हिचकिचाहट नही होती।

त्यागी—उदारता यह गुण भी इसमें है यह विशेषता है।

उग्रबुद्धि—बुद्धि तीक्ष्ण होती है। कोई भी बात बहुत जल्दी समझ सकता है।

त्रिकोण—पुंजराज ने इसका शरीर त्रिकोणाकृति कहा है किन्तु यह मत ठीक नही क्यों कि यह कुछ लंबे गोळ आकार का दिखाई देता है।

सगर्व—गर्वीला होना--यह अनुभव पूरी तरह आता है।

विलियम लिली ने इसका चेहरा गोल कहा है। धैर्यशाली, आत्मविश्वासयुक्त होता है। कद मंझला होता है। यह पूर्व की ओर हो तो ऊंचे कद का होता है और शरीर पर केश बहुत होते हैं।

पश्चिम की ओर हो तो शरीर दुबला पतला, सिर छोटा, नाजुक किन्तु स्वभाव रूखा होता है।

सिमोनाईट ने इसका नाक कुछ वक्र कहा है। गोल चेहरा—यह फल दूसरे वर्ग के लोगों में मिलता है। निर्भय और आत्मविश्वास-युक्त मुद्रा यह इन लोगों की विशेषता है। इस से समाज में ये बहुत जलदी पहचाने जा सकते हैं। यह पूर्व या पश्चिम की ओर न हो तो कद मंझला होता है। पूर्व और पश्चिम की ओर हो तो विलियम लिली के अनुसार फल समझना चाहिए।

राशियों की दृष्टि से—मंगल के फल कर्क राशि में बहुत अच्छे मिलते हैं, वृश्चिक, धनु में साधारण होते हैं, सिंह में कुछ बुरे होते हैं, मेष में बुरे होते हैं, वृषभ, कन्या, मकर में बहुत बुरे फल मिलते हैं और मिथुन, तुला, कुम्भ में साधारण अच्छे मिलते हैं।

प्रकरण ४
कारकत्व विचार

कल्याणवर्मा—रक्तोत्पलताम्रसुवर्णरुधिरपारदमन:शिलाद्यानाम्। क्षिति नृपतिपतनमूर्च्छापैत्तिकचोरप्रभुर्भौमः ॥ लाल कमल, तांबा, सोना, रक्त, पारा, मन:शिला, भूमि, राजा, गिरना, मूर्छा, पित्त तथा चोर इन का कारक मंगल है।

वैद्यनाथ—सत्त्वं रोगगुणानुजावनिरिपुज्ञातीन् धरासूनुना ॥ सामर्थ्य, रोग, गुण, छोटे भाईबहिन, शत्रु, जाति इनका कारक मंगल है।

गुणाकर—सहोत्थ-भाई।

पराशर—सत्त्व-सद्म-भूमि-पुत्र-शील-चौर्य-रोग-ब्रह्म-भ्रातृ-पराक्रम-अग्नि-साहस-राजपुत्रकारकः कुजः ॥ सामर्थ्य, घर, जमीन, पुत्र, स्वभाव, चोरी, रोग, ब्राह्मण, भाई, पराक्रम, आग, साहस, राजपुत्र।

सर्वार्थचिन्तामणि—पराक्रम-विजय-विख्याति-संग्राम-साहस-सैनापत्य-दण्डनेतृत्व-खंक्र-परश्वध-कुन्त-कुठार-शतघ्नी-भिन्दिपाल-धनुर्बाणनैपुण्य-धृति-कान्ति-गाम्भीर्य-काम-क्रोध-शत्रुवृद्धि-आग्रहावग्रह-परापवाद-स्वतंत्र-धातृ-भूकारकः कुजः ॥

पराक्रम, विजय, कीर्ति, युद्ध, साहस, सेनापतिपद, परशु, कुठार इत्यादि शस्त्रों में निपुणता, धैर्य, कान्ति, गम्भीरता, कामवासना, क्रोध, शत्रुओं में वृद्धि, आग्रह, निश्चय, दूसरों की निन्दा, स्वतन्त्रता, आंवले का वृक्ष, जमीन इन पर मंगल का अधिकार है।

मन्त्रेश्वर—सत्त्वं भूफलितं सहोदरगुणं क्रैर्यं रणं साहसं विद्वेषं च महानसाग्निकनकज्ञात्यस्त्रचोरान् रिपून् ॥ उत्साहं परकामिनी-रतिमसत्योक्तिं महीजाद् वदेद्। वीर्यं चित्तसमुन्नतं च कलुषं सैनाधिपत्यं क्षतम् ॥ पराक्रम, जमीन, भाई, क्रूरता, युद्ध, साहस, द्वेष, रसोईघर, अग्नि, सोना, जाति, अस्त्र, चोर, शत्रु, उत्साह, परस्त्रियों में आसक्ति, झूठ बोलना, वीरता, चित्त का विकास, पाप, सेनापतिपद, जखम, इन का विचार मंगल से करना चाहिए। इस लेखक ने रोगों के विषय में विशेष कारकत्व कहा है—तृष्णासृक्कोपपित्त-ज्वरमनलविषास्त्रार्तिकुष्ठाक्षिरोगान्। गुल्मापस्मारमज्जाविहतिपरुषतापा-मिकादेहभंगान् ॥ भूपारिस्नेहपीडां सहजसुतसुहृद्वैरियुद्धं विधत्ते। रक्षोगन्धर्वघोरग्रहभयमवनीसूनुरूर्ध्वांगरोगम् ॥ बहुत प्यास होना, खून, गिरना, पित्त ज्वर, अग्नि, विष या शस्त्रों से भय, कोढ, आंखों के रोग, गुल्म (अपेंडिसाइटिस), अपस्मार, मस्तिष्क के रोग, खुजली, अवयव कम होना, राजा का कोप, शत्रु और चोरों से

तकलीफ, भाई, पुत्र और मित्रों से झगडा तथा भूतपिशाच, राक्षस और गन्धर्वों से पीडा, शरीर के ऊपर के भाग के रोग ये फल मंगल दूषित होने से प्राप्त होते हैं।

विद्यारण्य—भ्रातृसत्त्वगुणान् भूमिं भौमेन तु विचिन्तयेत् ॥
भाई, सामर्थ्य, जमीन इन का विचार मंगल की स्थिति से करना चाहिए।

कालिदास—शौर्यं भूर्बलशस्त्रधारणजनाधीशत्ववीर्यक्षयाः ।
चोरो युद्धविरोधशत्रव उदारा रक्तवस्तुप्रियः ॥
आरामाधिपतित्वतूर्यखननप्रीती चतुष्पान्नृपाः ।
मूर्खः कोपविदेशयानधृतयो धात्रग्निवाग्वादताः ॥ १ ॥
पित्रोष्णव्रणराजसेवनदिनव्योमेक्षणह्रस्वदृग् ।
विख्यातित्रपुखड्गकुन्तसचिवाश्वांगस्फुटत्वं मणिः ॥
सुब्रम्हण्यजपे युवा कटु नृपस्थाने कुजोऽवग्रहो ।
मांसाशी परदूषणं रिपुजयस्तिक्तं निशान्ते बलम् ॥ २ ॥
हेमग्रीष्मपराक्रमा रिपुबलं गाम्भीर्यशौर्ये पुमान् ।
शीलब्रम्हपरश्च धौवनपरो ग्रामाधिनाथत्वता ॥
राजालोकनमूत्रकृच्छ्चतुरस्त्रस्वर्णकाराः खलो ।
मुग्धस्थानसुभोजने कृशतनुर्विप्रत्ववीर्यत्वते ॥ ३ ॥
रक्तं ताम्रविचित्रवस्त्रयमदिग्वक्त्रे च तद्दिक्प्रियः ।
कामक्रोधपरापवादगृहसैन्येशाः शतघ्नीकुजः ॥
सामभ्रातृकुठारदुष्टमृगनेतृत्वस्वतन्त्रा ग्रहाः ।
क्षेत्रं दण्डपतित्वनागभुवने वाक्चित्तचांचल्यता ॥ ४ ॥
वाहारोहणरक्तदर्शनमसृक्संशोषणान्यैवमन्येचानेकसुसंज्ञका बुधवरैर्भौमस्यतूक्ता अलम् ॥

कालिदास ने ग्रहयोनिभेदाध्याय और कारक विचार का एक ही जगह मिश्रण कर दिया है। यह किसी अच्छे ज्योतिषी को शोभा नही देता। किन्तु मैंसूर, मलबार तथा मद्रास प्रदेश में यह बहुत प्रसिद्ध हुआ है। इसके मत से मंगल के कारकत्व में निम्न विषय आते हैं—१ पराक्रम, २ जमीन ३ वल ४ शस्त्र धारण ५ लोगों पर अधिकार चलाना, ६ वीर्य का क्षय होना ७ चोर ८ युद्ध ९ विरोध १० शत्रु ११ उदार १२ लाल वस्तुओं की रुचि १३ बगीचों का मालिक होना १४ वाद्य बजाना १५ प्रेम १६ चौपाये पशु १७ राजा १८ मूर्ख १९ क्रोध २० विदेश यात्रा २१ धैर्य २२ आंवले का पेड २३ आग २४ वादविवाद २५ पित्त २६ उष्णता २७ जखम २८ सरकारी नौकरी २९ दिन ३० ऊपर दृष्टि होना ३१ नाटा कद ३२ रोग ३३ कीर्ति ३४ सीसा ३५ तलवार ३६ भाला ३७ मंत्री ३८ स्पष्ट अवयव होना ३९ मणि ४० देवों का सेनापति कार्तिकेय स्कन्द (इसे आंध्र और मद्रास में सुब्रह्मण्य कहते हैं तथा वहां इसके कई देवालय हैं) ४१ तरुण ४२ रुचि—कडवी ४३ राजाओं के स्थान ४४ अपमान ४५ मांसाहारी ४६ दूसरों की निन्दा ४७ शत्रुओं पर विजय ४८ तीखा स्वाद ४९ रात्रि के अन्त में बलवान होना ५० सोना (धातु) ५१ ऋतु—ग्रीष्म ५२ पराक्रम ५३ शत्रु का बल ५४ गम्भीरता ५५ शौर्य ५६ पुरुष ५७ शील ५८ ब्रह्म ५९ कुल्हाडी ६० वनचर ६१ गांव में मुखिया होना ६२ राजा का दर्शन ६३ मूत्रकृच्छ रोग ६४ चौकोर आकार ६५ सुनार ६६ दुष्ट ६७ जली हुई जगह ६८ भोजन में अच्छे रुचिकर पदार्थों का शौकीन ६९ कृश—दुबलापतला ७० धनुष्य बाण के प्रयोग में निपुण ७१ रक्त ७२ तांबा ७३ विचित्र वस्त्र ७४ दक्षिण दिशा ७५ दक्षिण दिशा प्रिय होना ७६ काम वासना

७७ क्रोध ७८ दूसरों की निंदा ७९ घर ८० सेनापति ८१ शतघ्नी (यह प्राचीन समय का एक शस्त्र था) ८२ सामवेद ८३ भाई ८४ कुल्हाडी ८५ जंगल के क्रूर पशु ८६ नेतृत्व ८७ स्वतंत्रता ८८ खेती ८९ सेनापति पद ९० सर्पों के बिल ९१ वाणी और चित्त चंचल होना ९२ घोडों की सवारी ९३ रजोदर्शन ९४ खून सूखना।

पश्चिमी ज्योतिषियों के मत से कारकत्व—उष्ण, रूखा, दाहक, उद्योगी, वंध्या, पुरुषप्रकृति, साहसी, उबलनेवाले पदार्थ, दाहजनक तेल, तीव्र औषध, आम्ल पदार्थ, उष्ण पदार्थ, दाहकारक रुचि, लोहा, फौलाद, हथियार, चाकू, कैंची, झगडे, चोरी, डकैत, अपघात, लडाई, लडाई में सम्मान प्राप्त होना, महत्त्वाकांक्षा, पौरुष, काम, क्रोध, मान आदि मनोविकार, आग, बुखार, उन्माद, भयंकरता, द्रोह, निंदा, पुलिस, थोडे समय के लिए कारावास, मौत, पुरुष संबंधी, डाक्टर, सर्जन, रसायनशास्त्र, वैज्ञानिक, गोलंदाज, शस्त्र बनानेवाले, लोहे के काम करनेवाले (मेकैनिक, इंजीनियर, टर्नर, फिटर, लेथवर्क करने वाले, किर्लोस्कर, टाटा आदि कारखानों में काम करनेवाले), तांबे के बर्तन बनानेवाले, लुहार, कंगन बेचनेवाले, दंतवैद्य, बिस्कुट बनानेवाले, चाकू कैंची बनानेवाले, कसाई, वेलिफ, जल्लाद, घडीवाले, दर्जी, नाई, रंगारी, चमार, जुंआरी, मस्तक, नाक, जननेंद्रिय, पित्त, पित्ताशय, मूत्राशय, स्नायु, मांसरज्जु, चेचक, गोवर, खून बहना, कटना जलना, आग लगी हुई जगह, भट्टी (सुनार की, लुहार की, होटल की, कांच कारखाने की, लोहे, तांबे या पीतल के बर्तनों के लिए, चूना बनाने की, शस्त्रों के लिए) रसायनशाला, युद्धभूमि, सेना के कैंप, तोपखाना, बारूद के संग्रह, शस्त्रों के कारखाने, अपघात स्थल,

लडाकू प्रदेश, विषैले जंतुओं के स्थान, कसाईखाना, भाईबहिनें, सुख-दुःख, चचेरे भाई, सौतेले संबंधी, अद्भुत बुद्धिमत्ता के काम।

हमारे मत से मंगल का कारकत्व—लोककर्म विभाग, (P. W. D.) भूमिति, इतिहास, अपराधविषयक कानून, प्राणिशास्त्र, अस्थिशास्त्र, पुलिस इन्स्पेक्टर, ओवरसियर, उन की शिक्षासंस्था, जंगल, कृषि विद्यालय, सर्वे विभाग, बायलर ॲक्ट, तंत्रविद्या की (मेकैनिकल) शिक्षा, इंजीनियरिंग कॉलेज, बीडी सिगरेट के कारखाने, मिल मजदूर, शराब की भट्टियां तथा दूकानें, अबकारी इन्स्पेक्टर, सिपाही, पहलवान, मोटर और उसके पुर्जे बेचनेवाले, साइकिल या मोटर रिपेयर करनेवाले, टैंक, युद्धनौका (क्रूझर), पनडुब्बी (टारपेडो), बॉंबर विमान, पेट्रोल, स्पिरिट, रॉकेल तेल, फास्फरस, आइडिन, बिजली की आर्क के लिए उपयोगी कार्बन (जो सिनेमागृह की मशीन में उपयोग किया जाता है) के कारखाने, माचिस के कारखाने, कपास का सट्टा, रेस, घोडे, जौकी, ट्रेनर, फायरब्रिगेड, बडे आपरेशन, अपेंडिसाइटिस, मूत्रकृच्छ, गंडमाला, टान्सिल, मम, खून खराब करने-वाले व्यसन, इंग्लैंड, फ्रान्स, ग्रीस, इटाली, जर्मनी, जपान, पंजाब, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, नाइट्रिक एसिड, एसेटिक एसिड, हाइड्रोसीनिक एसिड, आर्सेनिक, सोमल, गंधक, विष पचाने की शक्ति (शनि के कारकत्व में विष प्रयोग करना शामिल होता है किंतु विष पचाना मंगल का कारकत्व है, सांपों पर राहु का अधिकार है किंतु उनका शत्रु न्यौला मंगल के अधिकार में है।) मुर्गा, गीध, बाज, चील, बकरा, कबूतर, चिडिया, बिल्ली, ख्रिश्चन, एंग्लोइंडियन, यूरोपियन, सिख, मराठा, रजपूत, जैन, लिंगायत, गुजरात और सौराष्ट्र का सामान्य वर्ग।

ग्रहों के स्वाभाविक गुणधर्म, रूप, रंग तथा नैसर्गिक कुंडली में उनका स्थान एवं भावकारक ग्रहों पर से कारकत्व का निश्चय किया जाता है। इस दृष्टि से अब कुछ विवेचन करेंगे।

नैसर्गिक कुंडली

२ शु. (शु.)
१२ श. (गु.)
३ मं. (बु.)
१ र. (मं.)
११ शु.(श.)
४ चं. बु. (चं.)
१० र. गु. बु. श. (श)
५ गु. (र.)
७ शु. (शु.)
९ र. गु. (गु.)
६ श. म (बु.)
८ श. (मं)

रक्तोत्पल— लाल कमल, तांबा तथा सोना ये लाल रंग के पदार्थ हैं इसलिए मंगल के अधिकार में हैं।

पारा—इस पर वस्तुतः रवि का अधिकार है।

मनःशिला—गेरू भी लाल रंग का है।

यान—वाहन, जैसे मोटर आदि, इन्हें लोहा और पेट्रोल की जरूरत होती है अतः मंगल के स्वामित्व में इनकी गणना की।

क्षिति—जमीन, मंगल भूमि का पुत्र माना गया है।

नृपति—राजा। यह कारकत्व गलत है। इसका विचार रवि की स्थिति से होता है।

पतन—बुरे बर्ताव से मानव की हालत गिरती जाती है यह मुख्यतः अशुभ मंगल का फल है।

मूर्छा—उष्णता से उत्पन्न होती है अतः मंगल के कारकत्व में शामिल होती है।

पित्त—इस का भी विचार मूर्छा के समान ही करें।

चोर—मंगल के साथ शनि का कुछ अनिष्ट संबंध हो तो यह कारकत्व ठीक होगा। मूलतः मंगल संरक्षक ग्रह है अतः चोरी इसका कार्य नही है।

सत्त्व—सामर्थ्य। आज के युग में अग्नि की शक्ति से ही बडे बडे कार्य किये जाते हैं तथा मंगल अग्निस्वरूप ही है। अतः यह वर्णन ठीक है।

रोग– उष्णता से बहुत रोग उत्पन्न होते हैं। कौन कौन रोग होते हैं इस का विचार सिर्फ मंत्रेश्वरने किया है।

गुण—कौनसे गुणों का यहां मतलब है यह स्पष्ट नही।

अनुज—छोटे भाई। मंगल का अधिकार इन पर कहा। किन्तु अनुभव में मंगल भाइयों के लिए घातक ही प्रतीत होता है। तृतीय या नवम में मंगल हो तो भाई जीवित नही रहते।

रिपु—शत्रु। पुलिस विभाग से इस का संबंध है। अतः शत्रुओं से नित्य ही संबंध आता है।

ज्ञाति—मंगल जाति से क्षत्रिय माना गया है। किन्तु ब्राह्मण या शूद्र की कुण्डली में मंगल से किस जाति का विचार करना चाहिए। इस पर से प्रतीत होता है कि अपनी जाति का त्याग कर दूसरी जाति का स्वीकार करने की प्रवृत्ति का विचार मंगल से करना होगा। इस विषय का एक प्राचीन श्लोक ऐसा है—लग्ने चैव यदा भौमः अष्टमे च रविर्बुधः। ब्रह्मपुत्रो यदा जातः स गच्छेन्म्लेच्छमंदिरम्॥

अर्थात् लग्न में मंगल हो तथा अष्टम में रवि या बुध हो तो वह ब्राह्मण म्लेच्छों के-मुसलमान, ईसाई आदि के-घरों में जाता है। मंगल के प्रभाव से धर्म या जाति का बंधन शिथिल होता है।

सद्म—घर। यह विषय जमीन से संबंधित हो है।

पुत्र—यह कारकत्व सिर्फ पराशर ने कहा है। किन्तु यह ठीक प्रतीत नही होता। पंचम और एकादश के मंगल से ही पुत्रों के बारे में विचार होता है। अन्य स्थानों में इस का संबन्ध नही।

शील—यह कारकत्व योग्य है।

ब्रह्म—इस का सम्बन्ध स्पष्ट नही होता।

अग्नि—मंगल का वर्ण अग्नि जैसा ही है अतः यह वर्णन ठीक है।

साहस—इस गुण का वर्ण भी लाल माना है।

राजशत्रु—जो पुरुष अधिकारी होता है उस के कनिष्ठ अधिकारी उस का भला नही चाहते। अतः अधिकारी के शत्रु यह मंगल का कारकत्व कहा।

पराक्रम—इस का विचार साहस के समान करना चाहिए।

विजय—यह कारकत्व ठीक नही है। विजय प्राप्ति पर शनि का अधिकार है। उदाहरणार्थ-इंग्लैंड के लोग मंगल के स्वामित्व में हैं। किन्तु वहां की परिस्थिति-लोहा और कोयले की खानें, व्यापार, मजदूर वर्ग आदि-शनि के स्वामित्व की है अतः उन्हें विजय मिलता है। सतत प्रयत्न यह शनि की विशेषता है अतः यश भी उस के ही अधिकार में है। मंगल का अधिकार पराक्रम पर है और शनि का विजय पर है।

विख्याति—सिपाही जान हथेली पर लेकर लडते हैं तभी सेनापति को कीर्ति प्राप्त होती है। अतः कीर्ति पर मंगल का स्वामित्व योग्य है।

संग्राम—यह राष्ट्रीय कारकत्व है। किसी देश में युद्ध चल रहा हो तो वह कितने समय तक चलेगा और किसे फायदा या नुकसान होगा इस का विचार मंगल की स्थिति से और उस देश की राशि से करना चाहिए। इसी प्रकार व्यक्ति के जीवन में जो अदालती झगडे होते हैं उन का विचार भी मंगल से होता है।

दंड-सैन्य—यह भी राष्ट्रीय कारकत्व है। किसी देश की सेना कितनी है, उस की व्यवस्था कैसी है आदि विषयों का विचार मंगल से होता है।

नेतृत्व—यह कारकत्व राजकीय नेतृत्व की दृष्टि से ठीक है, सामाजिक नेतृत्व की दृष्टि से नही।

आयुध—शस्त्र-यह कारकत्व ठीक है।

धृति—धारणाशक्ति-विषय समझ कर स्मरण रखने की शक्ति बुध के अधिकार में है अतः यह कारकत्व गलत है।

कान्ति, तेज—दृष्टि से मंगल तेजस्वी प्रतीत होता है इस लिए यह कारकत्व कहा।

गाम्भीर्य—इस ग्रह में अल्हडपन और गम्भीरता दोनों गुण पाये जाते हैं ऐसा अनुभव है।

शत्रुवृद्धि—शत्रु बढ़ना-मंगल छठवें, सातवें या बारहवें स्थान में हो तो इस का अनुभव आता है, अन्यत्र नही।

आग्रहावग्रह—राजदरबार में मानसन्मान या अपमान होना मंगल पर अवलंबित है। यह शुभ हो मानसन्मान होता है। शनि से दूषित हो तो अपमान होता है।

परापवाद—दूसरों द्वारा निंदा होना-पांचवे, सातवें या बारहवें स्थान में यह ग्रह हो तो यह फल मिलता है, अन्यत्र नही।

स्वतन्त्र—मंगल के अधिकार के लोग स्वतन्त्र वृत्ति से उपजीविका करते हैं। बहुतेरे लोग नौकरी भी करते हैं किन्तु यह उनकी इच्छा के प्रतिकूल होता है।

धातृ—आंवले का पेड-इस कारकत्व का उपयोग समझ में नही आता।

क्रौर्य—क्रूरता-निर्दयता-अग्नि की दाहक शक्ति को देख कर यह कारकत्व कहा किन्तु किसी पापग्रह का वेत्र हो तो ही यह फल अनुभव में आता है इसलिए इसका उपयोग विचार कर करना चाहिए।

विद्वेष - यह गुण मंगल में नही पाया जाता।

महान—महानता यह कारकत्व ठीक है।

उत्साह—मंगल के अधिकार के व्यक्तियों का यह विशेष गुण है।

परकामिनीरति - दूसरों की स्त्रियों से सम्बन्ध-इस ग्रह से उष्णता अधिक होती है अतः कामवासना भी तीव्र होती है। इसका शारीरिक सामर्थ्य भी अच्छा होता है अतः परस्त्रियां खुद होकर इसे चाहतीं हैं।

वीर्य—जननेन्द्रियों पर मंगल का स्वामित्व है अतः यह वर्णन ठीक है। नैसर्गिक कुण्डली में अष्टम में वृश्चिक राशि है जिस पर मंगल का ही स्वामित्व है।

असत्य—झूठ बोलना-मंगल दूषित हो तो ही इसका अनुभव आता है।

चित्तसमुन्नति—ऊपरी तौर से देखें तो यह कारकत्व ठीक प्रतीत नही होता। किन्तु राष्ट्र में महान व्यक्तियों का जन्म होना, बौद्धिक प्रगति होना और इस तरह जगत की स्थिति में सुधार होना यह मंगल का ही कारकत्व है। द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, द्वादश इन स्थानों में शुभ मंगल हो तो उन व्यक्तियों का मन और बुद्धि अच्छी तरह विकसित होती है। लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम, दशम, एकादश इन स्थानों में मंगल हो तो युनिवर्सिटी की डिग्रियां मिलने पर भी मन की अवस्था अविकसित ही रहती है।

कलुष--व्ही. सुब्रह्मण्य शास्त्री, बंगलोर, ने इसका अर्थ पाप माना है। हमारे मत से दूसरों की निन्दा करना यह इस कारकत्व का अर्थ है।

क्षत—जखम, फोडे फुन्सी–यह कारकत्व ठीक है।

विदेशयान—विदेशों में जाना–इसका अनुभव देखना चाहिए।

वाग्वाद - सभाओं में या व्यक्तियों में होनेवाले वादविवाद–कुंडली में मंगल प्रबल हो तो इन वादविवादों में उस व्यक्ति को विजय प्राप्त होता है। अदालतों के वादविवाद यह अर्थ भी ठीक हो सकता है।

मांसाशी—मंगल रक्त व मांस का स्वामी है अतः यह कारकत्व कहा। लिंगायत, जैन, सनातनी ब्राह्मण आदि जातियों में मांसाहार निषिद्ध है। अतः इनके विषय में मिर्च बहुत खाने वाले ऐसा फल कहना चाहिए। आजकल पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से इन जातियों में भी कुछ लोग मांसाहार करते हैं। अतः धनस्थान या षष्ठ में अग्निराशि में मंगल हो तो उसे मांसाहार और मद्यपान का फल बतलाना होगा।

सुभोजन — मंगल के अधिकार के व्यक्तियों को भोजन अच्छा सुस्वादु चाहिए। कदान्न खाने को वे तैयार नही होते। अच्छा भोजन न मिला तो दूध पर ही रहते हैं।

चित्तचंचलता — मंगल की गति बहुत चंचल है-वह बहुत बार वक्री और मार्गी होता है अतः चित्त चंचल होना यह इसका कारकत्व कहा। इसका अनुभव लग्न, सप्तम और दशम में ही विशेष आता है।

नागभवन—सर्पों का शत्रु न्यौला मंगल के अधिकार में है अतः यह कारकत्व कहा।

वाहारोहण—घोडों पर सवारी करना।

असृक्संशोषण—खून सूखना।

चतुरस्र – चौकोर आकार का-यह वर्णन कालिदास के मत से है। पुंजराज के मत से त्रिकोण आकृति होति है। ये दोनों मत ठीक प्रतीत नही होते। मंगल के अधिकार के सैनिक आदि वर्गों के लोग ऊंचे कद के, लंबे चेहरे के और सुदृढ होते हैं। सुनार आदि वर्गों के लोग गोल चेहरे के, नाटे कद के और प्रमाणवद्ध अवयवों के होते हैं

पश्चिमीय—ज्योतिर्विदों ने जो कारकत्व कहा उसका अलग विवेचन करने की जरूरत नही। वह ठीक है।

कारकत्व का वर्गीकरण

जन्मकुण्डली में उपयोगी कारकत्व — बडे आपरेशन, गंडमाला, अपेंडिसाइटिस, कैन्सर, प्लूरसी, मूत्रकृच्छ, टान्सिल, विषमज्वर, उद्योग, साहस, वंध्या, वैर, झगडे, चोरी, डकैत, अपघात, युद्ध में

कीर्ति, काम, क्रोध, अभिमान, बुखार, उन्माद, तीव्र वेदना, द्रोह, निंदा, परापवाद, मृत्यु, पुरुष संबन्धी, मस्तक, नाक, जननेन्द्रिय, पित्त, पित्ताशय, मूत्राशय, स्नायु, मांस, हड्डियां, शरीर पर लाल धब्बे पडना, चेचक, खून बहना, कटना, जलना, छोटे भाईबहिन, अद्‌भुत बुद्धि-मत्ता के कार्य, सुखदुःख, चचेरे भाई, सौतेला धर, मन, मूर्छा, चोर, सत्व, रोग, जमीन, शत्रु, जाति, पुत्र, शील, राजशत्रु, यश, नेतृत्व, धारणा, कान्ति, गम्भीरता, शत्रुवृद्धि, राजकृपा तथा अवकृपा, स्वतन्त्रता, क्रूरता, महानता, उत्साह, परस्त्रियों से सम्बन्ध, झूठ बोलना, चित्त का विकास, पाप, व्रण, मूर्खता, विदेशयात्रा, वादविवाद, मांसाहार, दुष्टता, अच्छा भोजन, चित्त चंचल होना, छोटी मुद्दत के कारावास, रुक्ष, उष्ण, दाहकारक।

व्यवसाय का कारकत्व—लोकंकर्म विभाग (P. W. D.) पुलिस, इन्स्पेक्टर, ओवरसियर, रेंजर, पाइलट (विमानवाहक), कृषि-शास्त्रज्ञ, इंजीनियर, मेकैनिक, बीडी सिगरेट के कारखाने, मिलमजदूर, पान वेचनेवाले, शराब बेचनवाले, अबकारी इन्स्पेक्टर, पहलवान, मोटर या उस के स्पेअर पार्ट के विक्रेता, साइकिल बेचनेवाले तथा रिपेअर करनेवाले, शस्त्रों के निर्माता (जैसे तोप, बंदूक, टैंक, युद्ध-नौका, पनडुब्बी, बम गिरानेवाले विमान) पेट्रोल, स्पिरिट और रॉकेल के विक्रेता, सिनेमा में उपयोगी कार्बन स्टिक के निर्माता, आपरेशन के साधनों का कारखाना, माचिस का कारखाना, कपास का सट्टा, रेस, घोडे, जॉकी, ट्रेनर, फायरब्रिगेड, तेज दवाइयां, एसिड, लोहा, फौलाद, चाकू कैंची, सर्जन, रसायनशास्त्र, तोप दागनेवाले, टर्नर, फिटर, लेथवर्क करनेवाले, दंतवैद्य, कसाई, सुनार, लुहार, सब प्रकार की भट्टियां (सुनार, लुहार, होटल, पावबिस्किट, कांच, लोहा, चूना

आदि की), लोहे के कारखाने (टाटा, किर्लोस्कर, भद्रावती, कुलटी, कूपर के कारखाने तथा लोहे के पदार्थों—हल, पाइप, कुर्सी, डिब्बे आदि-के कारखाने), पीतल के कारखाने, रसायनशाला, सेना, तोपखाना, बेलिफ, हंटर मारनेवाला, बिस्किट बनानेवाला, घडी रिपेअर करनेवाला, दर्जी, चाकू कैंची को धार लगानेवाले, तागडी बनानेवाले, निब के कारखाने, नाई, रंगारी, बढई, चमार, जुआरी, तांबा, सोना, पत्थर, दाहक तेल.

मेदिनीय ज्योतिष का कारकत्व—युद्ध, अग्निप्रलय, सेनापति, तोप दागनेवाले, युद्धभूमि, सेना के स्थान, तोपखाना, बारूद के भंडार, शस्त्रों के कारखाने, युद्धप्रिय देश, सेना की हालत, इंग्लैंड फ्रान्स, ग्रीस, इटली, जर्मनी, जपान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान.

शिक्षा का कारकत्व—भूमिति, इतिहास, फौजदारी कानून, पुलिस ट्रेनिंग, ओवरसियर ट्रेनिंग, फॉरेस्टरी, सर्वे विभाग, बाइलर ॲक्ट, इंजीनियरिंग, वायुयान शिक्षा, सर्जरी, रेजिमेंटल क्लास, मोटर ड्राइविंग, रेल्वे ड्राइविंग, दर्जी काम, रंग काम, टेक्नालजी, मिल एप्रेंटिस.

अनुपयोगी कारकत्व—उबलते हुए पदार्थ, उग्र गंध के पदार्थ, दाहक रुचि, दुर्घटनास्थान, खून के स्थान, लडाई झगडे के स्थान, पारा, गिरना, गुण, आंवला, वाद्य, सांपों के बिल, फास्फरस, आइडिन, नाइट्रिक एसिड, अन्य एसिड, हींग का अर्क, सोमल, मनःशिला, गंधक, शेर, कुत्ता, भेडिया, सियार, बिल्ली, न्यौला, मुर्गा, गीध, चील, बाज, लाल मुंह के बंदर, बकरा, कबूतर, चिडिया।

जाति—ख्रिश्चन, एंग्लोइन्डियन, यूरोपियन, सिख, मराठा, पठान, रजपूत, जैन और लिंगायत (कर्नाटक में,) गुजरात के हीन जाति के लोग।

कुण्डली में शुभ मंगल के फल—साहसी, चिडचिडे स्वभाव का, हठी, मौके पर न डरने वाला, दीर्घोद्योगी, खर्चीला, नाना युक्तियों से काम बनाने वाला, लोगों का अकल्याण न हो इस लिए प्रयत्नशील, निष्कपट, उदार, प्रेमी, बेफिक्र, सुदृढ, धैर्यवान, नवमतवादी, दूसरों के प्रभाव में न आने वाला, व्यवहार में सरल सत्यशील तथा प्रामाणिक, भाषण और कृति में नियमों का बारीकी से पालन करने वाला, परस्त्रियों से दूर रहनेवाला, अनाथ दीन स्त्रियों का रक्षक, लोककल्याण में प्रयत्नशील, क्रान्तिकार्य करने के लिए उत्सुक, सुखासक्त, धर्मश्रद्धा होते हुए भी कर्मठता न होनेवाला, अपनी पत्नी के आधीन, सद्यःस्थिति में मग्न, आगे की फिक्र न करने वाला, वादविवाद में हार माननेवाला, लोगों पर उद्योग के कारण प्रभाव डालने वाला, लोकमत अच्छी दिशा में प्रेरित करने वाला। जिस व्यक्ति की कुण्डली में मंगल विकसित हो वही स्त्रियों की इज्जत की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा सकता है और लोककल्याण के लिए अपनी सारी इस्टेट खर्च कर राजसत्ता के खिलाफ लडते हुए प्राणार्पण भी कर सकता है।

कुण्डली में दूषित मंगल के फल—कुण्डली में चन्द्र या शुक्र के सम्बन्ध से मंगल दूषित होता है। इन ग्रहों से मंगल के बुरे गुणधर्म प्रभावी और स्पष्ट होते हैं। परस्त्रियों को कुमार्ग पर प्रेरित करने वाला, किसी भी जाति के स्त्री से संबन्ध रखनेवाला, अति कामुक, कामपूर्ति के लिए चाहे उस मार्ग का स्वीकार करने-

वाला, क्रोधी, तामसी, लडाई झगडे तथा खून तक करनेवाला, कृपण लोगों के पैसे लुटा कर मौज उडानेवाला, स्त्री को कष्ट देनेवाला, दूसरों की निन्दा करनेवाला, दूसरों को बुरा भला कह कर खुद कुछ भी न करनेवाला, आलसी, झगडालू, स्वार्थी, दूसरों को निरुत्साही बनाने वाला, बीभत्स शब्द बोलनेवाला, जंगली, ऊधम मचानेवाला, एकान्तप्रिय, विक्षिप्त मनोवृत्ति, अस्थिरता।

प्रकरण ५

द्वादशभाव विवेचन

प्रथम स्थान

गर्ग—गुदरोगी श्लथं नाभौ कंडूकुष्ठादिनांकितः। मध्यदेशे भवेत् व्यंगः सबाच्यो लग्नगे कुजे॥ तनुस्थानस्थिते भौमे दृष्टिभिर्वा विलोकिते। लोहाश्मादिकृता पीडा क्रोधोऽत्यन्तस्तनौ भवेत्। रक्तपीडा शिशुत्वे च वातरक्तं च जायते। मस्तके कण्ठमध्ये च गुह्ये वापि व्रणं भवेत्॥ गुद रोग, नाभि में खुजली या कोढ, मध्यभाग में (कमर में) व्यंग (मंगल के साथ बुध हो तो), लोहा, पत्थर आदि से तकलीफ, बहुत क्रोध, बचपन में खून के विकार, वातरोग, मस्तक में या गुह्य भाग में व्रण होना, ये प्रथम स्थान के मंगल के फल है।

काशीनाथ—भौमे लग्ने कुरूपश्च रोगी बन्धुविवर्जितः। असत्यवादी निर्द्रव्यो जायते पारदारिकः॥ कुरूप, रोगी, बन्धुहीन, झूठ बोलने वाला, धनहीन, परस्त्रियों में आसक्त

नारायण भट्ट—तपेन्मानसं—कलत्रादिघातः शिरोनेत्रपीडा। विपाके फलानां सदैवोपसर्गः। मानसिक दुःख, स्त्रीनाश, मस्तक और आंखों के रोग, अच्छे फल मिलते समय हमेशा विघ्न आना।

जीवनाथ—प्रतापस्तस्यापि प्रभवति मृगेन्द्रेण च समः। सिंह के समान पराक्रमी।

पुंजराज—स क्रोधी जायते नूनं व्यसनी कटुकप्रियः। वन्हिना स विदग्धः स्यात् तथा पित्तेन बाध्यते ॥ क्रोधी, व्यसनी, तीखे पदार्थ प्रिय होना, आग से जलना, पित्त रोग।

रामदयाल—सदम्भः। पाखंडी।

मन्त्रेश्वर—अतिक्रूरोल्पायुः। बहुत क्रूर, अल्पायुषी।

वृहद्‌यवनजातक—अतिमतिं भ्रमतां गमनागमनानिच। बहुत बुद्धिमत्ता, भ्रमण, व्यभिचारी, स्त्रियों के विषय में गम्यागम्य विचार न करने वाला।

जागेश्वर—यदा मंगलो लग्नगो मानवानां वपुः पुष्टितुष्टं सरक्तं च कुर्यात्। शरीर हट्टाकट्टा और खून बहुत होता है।

वैद्यनाथ—साहसिकोऽटनोऽतिचपलः। साहसी, भ्रमण करने वाला, बहुत चपल।

गुणाकार—लग्ने क्षतांगः। शरीर व्रणयुक्त होता है।

आर्यग्रंथकार—उदरदशनरोगी शैशवे लग्नभौमे पिशुनमति-कृशांगः पापवित् कृष्णरूपः। भवति चपलचित्तो नीचसेवी कुचेली सकलसुखविहीनः सर्वदा पापशीलः ॥ बचपन में पेट के तथा दांतों के विकार, दुष्ट बुद्धि, कृश शरीर, पापी, कृष्ण वर्ण, चंचल चित्त, नीचों की सेवा, मैले वस्त्र, सुखहीन।

कल्याणवर्मा—स्तब्धः स्वमानशौर्ययुतः सुशरीरः। स्तब्ध, स्वाभिमानी, पराक्रमी, सुंदर।

महेश—उग्रताप—स्वभाव बहुत उग्र होता है।

जयदेव भ्रान्तधीः। बुद्धि भ्रमयुक्त होती है। मेषे वा वृश्चिके वापि मकरे वा धरासुतः। मूर्तौ केन्द्रत्रिकोणेषु तदारिष्टं न जायते॥ मेष, वृश्चिक अथवा मकर राशि का मंगल लग्न में, केन्द्र में अथवा त्रिकोण में हो तो उस व्यक्ति का अनिष्ट नही होता।

घोलप—दुष्ट अन्तःकरण, रक्त और पित्त के विकार, गुल्म, प्लीहा रोग, गर्वीला, विचारशून्य।

गोपाल रत्नाकर—सुदृढ शरीर, चोरी करने की प्रवृत्ति, कुछ लाल गोरा वर्ण, बचपन में पिता को तकलीफ, उत्तर आयुष्य में राजसन्मान।

हिल्लाजातक—पंचमेऽब्दे लग्नगतो भौमोऽरिष्टं करोति वै॥ पांचवें वर्ष संकट आता है। (यही मत बृहद् यवन जातक में भी है।)

यवनमत—शत्रुओं से और अपने धर्म के लोगों से भी खूब झगडता है। क्रोधी और विरोधप्रिय, कृश, स्त्रीहीन, पुत्रहीन, बहुत घूमने वाला।

पाश्चात्य मत - धैर्यवान, निरंकुश, साहसी, दुराग्रही, उत्कर्ष के लिए अति इच्छुक, लोभी, वितंडवादी, उदार, क्रोधी, अति अभिमानी। मेष, सिंह तथा धनु में—बहुत क्रूर, साहसी। मिथुन, तुला तथा कुम्भ में—प्रवासी, भाग्यहीन। वृषभ, कन्या तथा मकर में—लोभी, स्वार्थी, दीर्घद्वेषी, स्त्रीप्रिय, झगडालू, शराबी। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में नाविक, पियक्कड, चैनी, व्यभिचारी।

अज्ञात—देहे व्रणं भवति। दृढगात्रः चौरः बुभुक्षितः बृहन्नाभिः रक्तपाणिः शूरो बलवान् समानशौर्यः धनवान् नेत्ररोगी दुर्जनः। स्वोच्चे स्वक्षेत्रे आरोग्यम् राजसन्मानकीर्तिः। पापशत्रुयुते अल्पायुः स्वल्पपुत्रवान् वातशूलादिरोगः दुर्मुखः। स्वोच्चे लग्नर्क्षे विद्यावान् नेत्रविलासवान्। तत्र पापयुते पापक्षेत्रे पापदृष्टियुते नेत्ररोगः बहुचिन्ता उद्वेगः शिरोक्षिमुखपीडनम्। बाल्येऽपि रोगी। मलिनः दरिद्री अलसश्च॥ शरीर पर व्रण होते हैं। मजबूत अवयव, चोर, भूख बहुत होना, विशाल नाभि, आरक्त हाथ, शूर, बलवान, मूर्ख, क्रोधी, धनवान, दुष्ट, आंखों के रोग, ये लग्न के मंगल के फल हैं। यह स्वगृह में या उच्च का हो तो आरोग्य, राजसन्मान, कीर्ति ये फल होते हैं। पाप ग्रह अथवा शत्रुग्रह उसी स्थान में हो तो पुत्र थोडे होते हैं, वात तथा शूल रोग होते हैं, नित्य ही उदासीन मुख होता है। लग्न में मंगल हो तो विद्याप्राप्ति और आंखें अच्छी होना ये फल मिलते हैं। पाप ग्रह की राशि में, पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो आंखों के रोग, अति चिन्ता, उद्वेग, सिर तथा मुख में पीडा, बचपन में रोग, मलिनता, दारिद्र्य, तीव्र कामवासना और आलसीपन ये फल मिलते हैं।

उपर्युक्त फलों का विवेचन—मंगल मूलतः रुक्ष, उष्ण तथा दाहक है। बच्चों को गर्भस्थ अवस्था से ही उष्णता सहनी पडती है। अतः उन्हें चेचक, फोडे फुन्सी, सूखी, दांत गिर कर दूसरे दांत निकलना आदि की तकलीफ होती है। अतः उष्णता के साथ साथ बचपन की अवस्था पर भी मंगल का अधिकार है। जिस की कुण्डली में मंगल प्रबल हो उसे ये रोग बहुत जलदी होते हैं और जिन का मंगल दुर्बल हो उन्हें इन से विशेष तकलीफ नही होती। लग्न में मंगल के होने न होने से इस में खास हेरफेर नही होता। अतः

गर्ग ने इस विषय में जो कहा उस में बहुत तथ्य नही है। सिर में दर्द और रक्तपीडा ये फल ठीक प्रतीत होते हैं। उन का अनुभव मेष, सिंह, धनु में आता है। मिथुन, तुला, कुंभ में यह अनुभव कुछ कम आता है। किन्तु अन्य राशियों में यह फल नही मिलता। **काशीनाथ** के मत का विवेचन भी इसी तरह करना चाहिए। इन के कहे हुए फल भी पुरुष राशि के ही हैं। **नारायणभट्ट** ने स्त्रीघात फल कहा उस का अनुभव कर्क, सिंह, मीन इन को छोड कर अन्य राशियों में आता है। अच्छा फल मिलने के समय विघ्न उपस्थित होना यह फल मिथुन, तुला, कुम्भ इन राशियों में मिलता है। **जीवनाथ** ने सिंह के समान पराक्रम यह फल कहा उसका अनुभव मेष, सिंह तथा धनु, कर्क और वृश्चिक में मिलता है। **पुंजराज** का फल पुरुष राशियों का है। **रामदयाल** ने धर्म पर श्रद्धा न होना, सुधारक मतों के पक्षपाती होना यह फल कहा उस का अनुभव मेष, सिंह, धनु कर्क, वृश्चिक एवं मीन में आता है। **महेश** का मत मेष, सिंह एवं धनु में ठीक प्रतीत होता है। **मन्त्रेश्वर**-पुरुष राशि में मंगल के साथ रवि और चन्द्र हों तो इस के मत का अनुभव आता है। **बृहद् यवन** में बुद्धिमान किन्तु भ्रमणशील ऐसा फल कहा इस का अनुभव मेष, सिंह धनु तथा मिथुन, तुला, कुंभ में आता है। अगम्य गमन यह लग्न के मंगल का विशेष फल नही है। व्यभिचारी होने की अथवा रखैल से सम्बन्धित होने की सम्भावना होती है। **जागेश्वर** के मत का अनुभव मेष, सिंह, धनु में तथा कुछ कम प्रमाण में वृषभ, कन्या, मकर में आता है। अन्य राशियों में यह अनुभव नही आता। **वैद्यनाथ** और **गुणाकर** के मत पुरुष राशियों के लिए ठीक हैं। **आर्यग्रंथ**

के मतों में बचपन में पेट एवं दांत के रोग होना यह फल पुरुष राशियों का है। अन्य फल स्त्री राशियों के हैं। **कल्याणवर्मा** का मत स्त्री राशियों में तथा **जयदेव** का मत सभी राशियों में ठीक प्रतीत होता है। **घोलप** के मतों में दुष्ट तथा विचारशून्य होना यह फल वृषभ, कन्या, मकर में, गर्वीला एवं रक्त पित्तविकार से युक्त होना यह फल मेष, सिंह, धनु में एवं गुल्म तथा प्लीहा रोग होना यह फल कर्क वृश्चिक, मीन में ठीक प्रतीत होते हैं। **गोपाल रत्नाकर** के मतों में गौर वर्ण, मजबूत शरीर यह फल मेष, सिंह, धनु में तथा राजसन्मान यह फल मेष, कर्क, सिंह, मीन में ठीक प्रतीत होता है। **हिल्लाजातक** के मत का विचार विद्वान करें। मेरे विचार से यह फल आठवें वर्ष में मिलता है। **यवनमत** के शत्रु तथा स्वधर्म से कलह एवं स्त्रीपुत्रवियोग यह फल मेष, धनु, मिथुन, तुला, कुंभ में ठीक प्रतीत होते हैं। दुष्ट, विरोधप्रिय, कृश ये फल स्त्री राशियों के हैं। **पाश्चात्य मत** का अनुभव सब से अधिक आता है।

हमारा अनुभव प्रथम स्थान में मंगल हो तो उस व्यक्ति को सभी व्यवसायों के प्रति आकर्षण प्रतीत होता है। किन्तु वे किसी एक व्यवसाय को अच्छी तरह न कर सभी को एकसाथ करना चाहते हैं। यह स्थिति ३६ वें वर्ष तक रहती है। फिर किसी एक उद्योग में स्थिर होते हैं। इन्हें ऐसा प्रबल अभिमान होता है कि व्यवसाय में बहुत कुशल हैं और दूसरे निरे मूर्ख हैं। योग्यता न होने पर भी ये रौब डालने का प्रयत्न करते हैं। सिनेमा के क्षेत्र में ये खलनायक हो सकते है। डाक्टरों की कुण्डली में लग्नस्थ मंगल हो तो शिक्षा के समय सर्जरी की प्रधानता मिलती है किन्तु व्यवसाय शुरू होने पर

आपरेशन के मौके बहुत कम आते हैं। यह योग इनके लिए अच्छा नही होता। वकीलों के लिए भी यह बहुत अच्छा योग नही हैं। इसमें इन्हें फौजदारी मामलों में कुछ काम मिलता है किन्तु धनप्राप्ति विशेष नही होती। अदालत में प्रभाव जरूर बढता है। मोटर, वायु-यान, रेलवे इंजिन के ड्राइवरों के लिए यह योग अच्छा होता है। इन की दृष्टि बहुत अच्छी होती है। लुहार, बढई, सुनार, मेकैनिक, इंजीनियर, टर्नर, फिटर इन लोगों के लिए यह योग बहुत अच्छा होता है। वृषभ, कन्या या मकर में मंगल लग्नस्थ हो तो उत्तम फल मिलते हैं। इस योग में जमीन सर्व्हे करने का काम मिलता है। मकर के मंगल से पिता को बहुत तकलीफ होती है और शारीरिक व्याधियों से पीडा होती है। इस योग के किसानों को जमीन का ज्ञान अच्छा होता है। मेष, सिंह, कर्क, वृश्चिक, धनु इन राशियों का लग्नस्थ मंगल पुलिस इन्स्पेक्टरों के लिए अच्छा होता है। इस योग के अफसर रिश्वत खाते हैं किन्तु पकडे नही जाते (इस के लिए शनि के साथ शुभ योग होना जरूरी है)। बरताव में किसी की पर्वाह नही करते।

लग्नस्थ मंगल के प्रधानतः दो प्रकार हैं। कर्क राशि में हो तो उस व्यक्ति को अपने परिश्रम से उन्नति और धन प्राप्त होते हैं। सिंह राशि में हो तो वह दैवयोग से ही उन्नति और धन प्राप्त करता है। इन दोनों योगों के व्यक्ति उदार होते हैं। अतिथियों का सत्कार अच्छी तरह करते हैं। घर में कितने लोग भोजन करके जाते हैं इस का इन्हें पता भी नही होता। यही मंगल वृषभ, कन्या या मकर में हो तो वे लोग बहुत कंजूस होते हैं। एक भी व्यक्ति को अधिक भोजन देना पडे तो इन्हें दुख होता है। ये लोगों को ठगाते हैं। मिथुन और तुला में मिलनसार स्वभाव होता

है, मित्रों के लिए थोडा बहुत खर्च करते हैं किन्तु लोगों को ठगाते नही। कर्क, वृश्चिक, कुंभ तथा मीन में यह मंगल हो तो वे लोग किसी से जल्दी मित्रता नही करते किन्तु एक बार करने पर उसे कभी भूलते नही। ये पैसे के लोभी और स्वार्थी होते हैं, अच्छे बुरे उपायों का विचार नही करते।

मंगल के सामान्य फल इस प्रकार हैं। व्यभिचारी, कामलोलुप, लोगों की बुराइयां ढूंढना, ताने देकर बोलना, गालियां देना, झगडा लगाने में कुशलता। स्त्री राशियों में—दूसरों को किसी भी काम में आगे कर के खुद पीछे रहना। इन की दृष्टि बहुत उग्र तथा क्रूर होती है अतः बच्चों को इन की दृष्टि बाधक होती है। बचपन में तालु न भरना आदि रोग होते हैं। वृषभ, कन्या, मकर, कुंभ में-कुछ कुछ चोरी करने की प्रवृत्ति होती है।

द्वितीय स्थान

आचार्य—धनगे कदन्नः। अन्न निकृष्ट मिलता है।

गुणाकार— इस ने उपर्युक्त फल ही कहा है।

वैद्यनाथ—धातुर्वादकृषिक्रियाटनपरः कोपी कुजे वित्तगे॥ ये द्वितीय स्थान के धातु, वादविवाद, खेती, नित्य प्रवास, क्रोधी मंगल के फल हैं। धन के विषय में इस मंगल से कोई लाभ नही होता।

कल्याणवर्मा—अधनः कदशनतुष्टः पुरुषो विकृताननो धनस्थाने। कुजनाश्रयश्च रुधिरे भवति नरो विद्यया रहितः॥ निर्धन, निकृष्ट अन्न पर ही सन्तुष्ट रहना, चेहरा विकृत होना, दुष्ट लोगों को आश्रय देना तथा अशिक्षित होना ये इस मंगल के फल हैं।

वृहद्यवनजातक – अधनतां कुजनाश्रयतां तथा विमतितां कृपयातिविहीनतां । तनुभृतां विदधाति विरोधतां धननिकेतनगोऽवनिनन्दनः ॥ निर्धन, दुर्जनों का आश्रय, बुद्धिहीन, निर्दय, बहुत विरोध ये इस मंगल के फल हैं ।

गर्ग—कृषिको विक्रयी भोगी प्रवास्यरुणवित्तवान् । धातुवादी मतेर्नाशो द्यूतकारः कुजे धने ॥ धने भौमे धनहानिः प्रजायते । पीडा देहे च नेत्रे च भार्याबन्धुजनैः कलिः ॥ खेती, विक्रय में कुशल, प्रवासी, अरुण वर्ण, धनवान, धातु का काम, बुद्धिहीन, जुआरी, शरीर को पीडा, आंखों के रोग, स्त्री तथा सम्बन्धियों से विरोध ये इस मंगल के फल हैं ।

नारायणभट्ट --पुनः संमुखं को भवेत् वादभग्नः । इस के साथ वाद करने पर हार कर कोई इस के सन्मुख फिर नही आता ।

मन्त्रेश्वर – वचसि विमुखः । इसे बोलना पसन्द नही होता ।

आर्यग्रंन्थ–विक्रमे मग्नचित्तः कृशतनुसुखभागी । नित्य ही पराक्रम में रुचि होना, कृश शरीर, सुखी ।

जयदेव—निर्दय ।

जीवनाथ – प्रलब्धे वित्तेपि स्वजनजनतः किं फलमलम् । धन का संरक्षण होता हैं । (इस का ठीक अर्थ स्पष्ट नही होता--अ.)

काशीनाथ – क्रियाहीनश्च जायते । दीर्घसूत्री, सत्यवादी पुत्रवानपि ॥ क्रियाकाण्ड में रुचि नही होती, दीर्घसूत्री, सच बोलनेवाला, पुत्रों से युक्त ॥

जागेश्वर—धने क्रूरखेटा मुखे वाथ नेत्रे तथा दक्षिणांसे तथा कर्णके वा । भवेद् घातपातोऽथवा वै व्रणं स्याद् यदा सौम्यदृष्टं न

युक्तं धनं चेत् ॥ धनस्थान में क्रूर ग्रह हों तथा सौम्य ग्रह की उस पर दृष्टि न हो तो उसे मुख, आंख, दाहिना कंधा अथवा कान इन भागों को जख्म होती है।

पराशर —स्वे धननाशम्। धनहानि होती है।

हिल्लाजातक—धनहानिर्द्वादशेब्दे धनस्थश्च महीसुतः। इस मंगल से बारहवें वर्ष धनहानि होती है।

बृहद्यवनजातक—प्रपीडितमसृग् नवाब्दे स्वनाशम्। नौवें वर्ष में रक्तविकार से मृत्यु के समान पीडा होती है।

गोपाल रत्नाकर—कठोर वाणी, अकारण खर्च, बहुत क्रोध, पैतृक इस्टेट होना (अन्तिम फल कर्क तथा सिंह लग्न के लिए समझना चाहिए।)

यवनमत—पुत्र, स्त्री, धन इन से रहित, युद्ध में शूर, चिन्तातुर, कुरूप, निर्दय, नित्य ही ऋणग्रस्त।

घोलप—गाय, घोडे, भेडें, गाडियां आदि के व्यापार में धनहानि, पुत्रहीन, विकल अवयव, बहुत रोग होना ये इस मंगल के फल हैं।

पाश्चात्य मत—बिल्डिंग के काम, मशीनों की सामग्री, पशुओं का व्यापार, खेती, लकडी तथा कोयले का व्यापार, आरोग्यविषयक काम (वैद्यक), नाविक, इन व्यवसायों में धनप्राप्ति होती है। इस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो अथवा यह बलवान हो तो अच्छा धनलाभ होता है। नीच गृह में, अथवा अशुभ सम्बन्ध में हो तो भयंकर धनहानि, मन को दुःख और रोगों से पीडा ये फल मिलते हैं।

अज्ञात - विद्याहीनः लाभवान्। षष्ठाधिपेन युतः तिष्ठति चेत् नेत्रवैपरीत्यं भवति। शुभदृष्टे परिहारः। स्वोच्चे स्वक्षेत्रे विद्यावान् नेत्र-

विलासी। तत्र पापयुनक्षेत्रे पापदृष्टे नेत्रे रोगः। कुदन्तः। नृपवन्हि-चोरात् भयम्। विभवक्षयः। कामिनीकष्टं भवति। तत्र पापयुते पापक्षेत्रे पापदृष्टे कामिनीहीनः॥ इसे विद्याप्राप्ति नही होती, धन मिलता है। इस के साथ षष्ठ स्थान का स्वामी हो तो दृष्टि सदोष होती है। किन्तु इस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो यह फल नही मिलता। यह मकर, या वृश्चिक में हो तो विद्या प्राप्त होती है तथा आंखें अच्छी होती है। पापग्रह से युक्त, अथवा दृष्ट हो तो आंखों के रोग, दांतों के रोग, राजा, अग्नि तथा चोरों से भय, धनहानि, स्त्री को कष्ट ये फल मिलते हैं। इसी योग में द्वितीय स्थान का स्वामी भी यदि पापग्रह हो तो स्त्री प्राप्त नही होती।

हमारे विचार—आचार्य, गुणाकर तथा कल्याणवर्मा के अनुसार निकृष्ट भोजनपर सन्तुष्ट होना यह इस मंगल का फल है। यह पुरुष राशियों के लिए ठीक है। वैद्यनाथ तथा गर्ग का फल भी प्रायः पुरुष राशियों का ही है। गर्ग ने भोगी, प्रवासी, धनवान ये फल कहे है वे स्त्री राशियों के है। आर्यग्रंथ, जीवनाथ, काशीनाथ, जागेश्वर, हिल्लाजातक, यवनमत. बृहद्यवन जातक, घोलप इन के कहे हुए फल स्त्री राशियों में मिलते है। पुत्रवान यह फल पुरुष राशि का है तथा पुत्रहीन स्त्री राशि का। पाश्चात्य मत में खेती, पशु तथा विलिंडग के कामों से लाभ ये फल मिथुन, तुला, कुम्भ के है। मशीनरी, लकडी, कोयला, नाविक व्यवसाय इन में लाभ होना यह फल मेष, सिंह, धनु राशि का है। आरोग्य, वैद्यक से लाभ यह फल कर्क, वृश्चिक, मीन का है।

हमारा अनुभव—द्वितीय स्थान में मेष, सिंह, धनु में मंगल हो तो एकदम धन प्राप्त करने की तीव्र इच्छा होती है इस लिए

सट्टा, लाटरी, रेस, जुआ आदि के मोह में फंसे हुए होते हैं। पर-स्त्रियों से इन्हें धनलाभ होता है किन्तु वह धन उसी व्यसन में खर्च भी हो जाता है। इन्हें खर्च करने का मौका पहले आता है—धन प्राप्ति बाद में होती है। मेष, कर्क, सिंह या मीन लग्न हो और यह वक्री हो तो मिली हुई सब जायदाद नष्ट होती है, नई प्राप्त नहीं होती। इतना ही नही, प्रपंच के लिए आवश्यक धन भी नही मिलता। धन के लिए बहुत कष्ट होता है, किसी की सहायता नही मिलती। अयोग्य व्यक्तियों के पास भी याचना करनी पडती है, हमेशा अपमान सहना होता है। मुंह के पीछे लोग बहुत निन्दा करते हैं। इस योग में यह वक्री न हो तो थोडा बहुत धन किसी तरह मिल जाता है। इस ग्रह की यह विशेषता है कि या तो एकदम बहुत धन प्राप्त होता है या फिर प्राप्त ही नही होता। स्वभाव उदार होता है। प्रपंच की फिक्र नही होती। थोडे पैसों के लिए तो बहुत विचार करते हैं किन्तु एकदम बहुत धन व्यय करते समय कुछ विचार नही करते। यह स्वराशि में या अग्नि राशि में हो तो पत्नी की मृत्यु होती है। वह भी प्रौढ अवस्था में होती है जब लडकों को सौतेली मां अच्छी नही लगती। किन्तु घरगृहस्थी चलाने के लिए दूसरा ब्याह करना पडता है। इस द्विभार्या योग के उदाहरणस्वरूप दो कुंडलियां देखिए-श्री. ज. वा. जोशी, ज्योतिष ग्रंथों के लेखक, जन्म गुहागर के समीप, ता. १०-१२-१८८४ मार्गशीर्ष कृ०८ शक १८०६ सूर्योदय। लग्न ७-२२-४८-५१। इन के ४ थे वर्ष दादा की, १० वें वर्ष पिता की मृत्यु हुई। १९ वें वर्ष प्रवास तथा ज्योतिष शिक्षा का आरंभ हुआ। १९०३ में पहला ब्याह हुआ, १९०९ में पत्नी की मृत्यु हुई तथा १९१३ में दूसरा

ब्याह हुआ। इन ने कई नाटक तथा फिल्म कंपनियों में काम किया तथा कुछ समय निर्णयसागर प्रेस एवं टिकमदास मिल में भी नौकरी की। नष्टजातक, त्रिरेखावेला प्रत्रोत्र, ज्योतिष अभ्यासक्रम आदि पुस्तकें इन ने लिखीं। धनस्थान के मंगल के फलस्वरूप इन की पूर्वार्जित जायदाद नष्ट हुई तथा दो विवाह हुए (इन की कुण्डली में लग्न २३ वें अंश में है। इस विषय में चाल्डेल का फलादेश देखिए-इस समय आकाश स्वच्छ नीला तथा तारों से भरा होता है ऐसे व्यक्ति कई गुणों और कलाओं से संपन्न होते हैं। ये लोग एक जगह अधिक समय नही रहते। प्रवासी, संशोधक, ज्योतिषी, वैज्ञानिक होते हैं।, श्री. जोशी के बतलाए फलों में अशुभ फलों का अनुभव जलदी आता था तथा शुभ फल बहुत देर से मिलते थे।

यह मंगल वृषभ, कन्या या मकर में हो तो स्त्री की मृत्यु नही होती किन्तु अकारण ही कुछ समय तक विभक्त रहना पडता है। पति पत्ना में प्रेम होता है। दोनों कामुक होते हैं। कीर्ति मिलती है किन्तु प्राप्ति से अधिक धन खर्च होता है। यह मिथुन, तुला या कुम्भ में हो तो वे लोग पैसा खर्च नही करते, बैंक में इकट्ठा करके जायदाद खरीदते रहते हैं। कर्क, वृश्चिक, मीन में धनप्राप्ति होती है और संचय भी होता है। ये लोग संसार में आसक्त नही होते और आगे की फिक्र नही करते। इनके कुटुम्ब में अपघात से किसी की मृत्यु होती है। ब्याह देर से होता है, धन प्राप्ति भी देर से होती है। शॉर्ट साइट के कारण इन्हें ऐनक लगानी पडती है। मस्तिष्क गरम रहता है। तीखे पदार्थों की रुचि होती है। ये बहुत खाते हैं और कामुक होते हैं। स्त्री का सहवास न हो तो इनसे कोई काम ठीक तरह नही होता। लोगों पर इनका प्रभाव जलदी पडता है।

व्यवहार साफ होता है । किन्तु दूसरों के पैसे निधि के रूप में रखने से इन पर अनेक आपत्तियां आ सकती हैं । इन्हें बहुत कष्ट और तकलीफ के बाद मुसीबतों का सामना करके ही प्रगति करनी पडती है । किसी का कर्ज लेकर या उधार माल लाकर निर्वाह करने की प्रवृत्ति इन लोगों ने बिलकुल नही रखनी चाहिए क्यों कि वैसा करने से इन्हें बहुत अपमान सहना पडता है । इनका बोलना तीखा होता है । ये किसी का भी वर्चस्व सहन नही करते । आवाज भर्राया सा होता है । अपने शब्द से ये हमेशा पीछे हटते हैं । वकीलों के लिए यह योग अच्छा है । अदालत में इनका प्रभाव पडता है । डाक्टरों के लिए भी योग अच्छा है । इन्हें अच्छा धन मिलता है । इनका निदान जलदी में किया हुआ होकर भी सही होता है । ज्योतिषियों को यह योग बिलकुल अच्छा नही है । इनके कहे हुए बुरे फलें– जैसे मृत्युयोग, दीवालियेपन का योग—का अनुभव जलदी आता है । शुभ फलों का अनुभव जलदी नही आता । लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति की वाणी ही अशुभ है । ऐसे एक व्यक्ति का मुझे स्वयं परिचय हुआ था । कुछ वर्ष पहले कुछ माल लेकर घूम कर बेचने का काम मैं करता था । उस समय मेरा व्याह हुए कुछ ही दिन हुए थे । एक जगह माल दिखला रहा था कि उस व्यक्ति ने मेरा चेहरा देख कर कहा कि चार साल बाद तुम्हारी पत्नी मर जायगी और हंसने लगा । तहकीकात करने पर पास के लोगों ने कहा कि इस व्यक्ति की वाणी अशुभ है और इस का कहा हुआ जल्द ही सच्चा होता है । इसी व्यक्ति ने कुछ दिन बाद एक लक्षाधीश को बतलाया कि आयु के ९२ वें वर्ष तुम्हें दरदर भीख मांगनी पडेगी । इस व्यक्ति की कुण्डली इस प्रकार थी—जन्म चैत्र अमावास्या, शक १७९९,

इष्ट घटी ४४-१९, रात्रि को ११-३०, धनु लग्न-१९ वां अंश, ता. १३-४-१८७७.
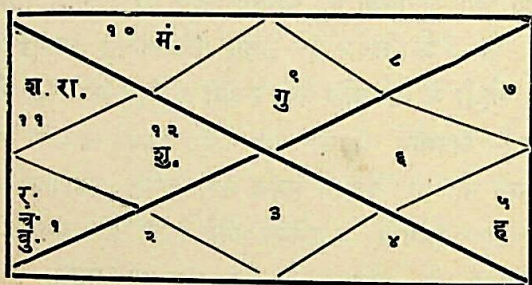
लग्न के १९ वें अंश के बारे में चारुत्रेल का फलादेश इस प्रकार है—इस समय दूरबीन आकाश की ओर होती है। ये लोग वैज्ञानिक, ग्रहनक्षत्रों के अभ्यासक होते हैं। धनु लग्न ज्योतिषियों का लग्न है। साथ ही इसके पंचम में रवि, बुध, चंद्र और नेपच्यून तथा धनस्थान में मंगल है। अतः यह जो भी अशुभ कहे वही सच्चा होता है। शुभ फल का अनुभव नही आता। उसके कहने के अनुसार चार वर्ष बाद मेरी पत्नी की मृत्यु हुई तथा लक्षाधीश की भी सारी इस्टेट नष्ट होकर पत्नी एक जगह, बच्चे दूसरी जगह, खुद तीसरी जगह ऐसी दशा हुई। इस व्यक्ति ने मुझे जो एक बहुत शुभ फल कहा था उसका भास तो हुआ किंतु वह मिला नही। इस योग के बिलकुल विपरीत योग स्व. श्री. नवाथेजी की कुण्डली में था। उनके धनस्थान में गुरु स्वगृह में था। वे जो भी शुभ फल कहते थे उसका बहुत अच्छा अनुभव आता था किन्तु मृत्यु या धनहानि के योगों का फल नही मिलता था। अतः ज्योतिषी को अपने धनस्थान में जैसे ग्रह हों वैसा शुभ या अशुभ फल कहना

चाहिए। अत्र द्वितीय स्थान के मंगल के शुभ फल का एक उदाहरण देखिए। श्रीमान ड्यूक आफ यॉर्क—जन्म ता. १४-१२-१८९५, रात्रि को ३-९, स्थान लंडन।
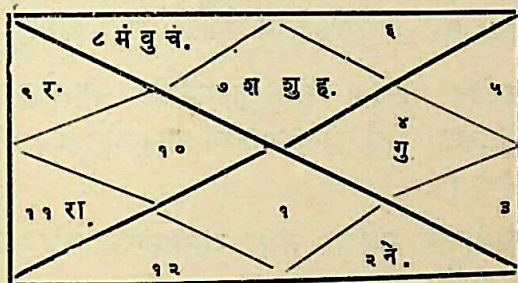
इनके धन स्थान में स्त्री राशि में मंगल है। इससे इन्हें सार्वभौम पद प्राप्त हुआ।

द्वितीय स्थान में वक्री ग्रह की राशि में मार्गी मंगल हो तो वह व्यक्ति अति कामुक होता है ऐसा रद्दमत में कहा है।

तीसरा स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—मतिविक्रमवान्। बुद्धिमान तथा पराक्रमी।

पराशर—अग्रजं पृष्ठजं हन्ति सहजस्थो धरासुतः। बडे और छोटे भाई की मृत्यु होती है।

कल्याणवर्मा— शूरोभवत्यधृष्यो मुदान्वितः समस्तगुणभाजनं ख्यातः। शूर, निर्भय, आनंदयुक्त, सर्वगुणसंपन्न, कीर्तिमान।

आर्यग्रंथ—कृशतनुसुखभागी तुंगभौमो विलासी। धनसुखनरहीनो नीचपापारिगेहे वसति सकलपूर्णे मन्दिरे कुत्सितश्च। दुबलापतला शरीर, सुखप्राप्ति। यह मंगल उच्च का हो तो विलासी होता है।

नीच गृह में, शत्रु गृह में या पापग्रह की राशि में हो तो धन तथा सुख नष्ट होता है। घर अच्छा मिलता है किन्तु स्वभाव कुत्सित होता है।

वैद्यनाथ—अशठमतिर्दुश्चिक्ययाते। सरल स्वभाव होता है।

जयदेव—नृपकृपा सुखवित्तपराक्रमी भवयुतोनुजदुःखयुतः। राजा की कृपा, सुख, धन, पराक्रम प्राप्त होते हैं। छोटे भाई की मृत्यु होती है।

काशीनाथ, मंत्रेश्वर तथा जागेश्वर—इनके फल जयदेव के समान ही हैं।

गर्ग—भगिन्यौ सुभगे द्वे च क्रूरेण निधनं गते। कुमृत्युना भ्रातरौ द्वौ मृतौ शस्त्रादिभिस्त्तथा॥ दो सुंदर बहिनें होती हैं किन्तु उनकी मृत्यु होती है। दो भाइयों का भी शस्त्रादि के द्वारा घात होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह दरिद्री होता है। इस मंगल के साथ राहु हो तो वह अपनी स्त्री का त्याग करके परस्त्री से व्यभिचार करता है। साहसी, शूर, शत्रु के लिए निष्ठुर तथा संबंधियों की वृद्धि करनेवाला होता है।

शौनक—पुंवीर्ये खचरे तृतीयभवने दृष्टे च पूर्णेऽथवा। पश्चात् पुत्रसमुद्भवो निगदितः पूर्वं हि कन्योद्भवः॥ सौरिक्षेत्रविनष्टगर्भकरणं विख्यातमंत्रीश्वरं भौमे। तृतीय स्थान में पापग्रह हो, मंगल हो अथवा उस की पूर्ण दृष्टि हो तो पहले कन्या होती है, फिर पुत्र होता है। यह शनि की राशि में हो तो गर्भपात होता है। यह प्रसिद्ध मंत्री होता है।

बृहद्यवनजातक—कथारतः त्र्यब्देनुजक्षितिसुतोनुजमुच्चविश्वे॥ आयु के १२ वें वर्ष छोटे भाई को तकलीफ होती है।

पुंजाराज—कुजो वा तदास्थिभंगं विषजं भयं च करोति दाह-ज्वलनाच्च चिन्हं। हड्डी टूटना, विषबाधा, जलने के दाग रहना।

रामदयाल—पुंजराज के समान ही मत है।

नारायणभट्ट—कुतो बाहुवीर्यं कुतो बाहुलक्ष्मी तृतीयो न चेन्मंगलो मानवानां। सहोत्थव्यथा भण्यते केन तेषां तपश्चर्यया चोप-हास्यः कथं स्यात्॥ बहुत पराक्रम, संपत्ति, तपश्चर्या तथा बन्धुओं से तकलीफ ये इस मंगल के फल हैं।

जीवनाथ—नारायणभट्ट के समान मत है।

घोलप—श्रेष्ठ कवि, शत्रुओं का नाश करनेवाला।

यवनमत—धन, रत्न, वस्त्र तथा गृह की प्राप्ति होती है।

पराशर—त्रिक्रमे भ्रातृमरणं धनलाभः सुखं यशः। भाई की मृत्यु, धन, सुख तथा कीर्ति प्राप्त होना ये फल हैं।

हिल्लाजातक—त्रयोदशे बन्धु सौख्यं तृतीयः कुरुते कुजः। तेरहवें वर्ष भाई का सुख प्राप्त होता है।

पाश्चात्य मत—गाडी, रेल, वाहन इनसे भय होता है। पडोसियों से तथा सम्बन्धियों से झगडा होता है। किसी दस्तावेज पर दस्तखत करने से अथवा गवाह देने से भयंकर आपत्ति आती है। स्वभाव आग्रही और क्रोधी होता है। बुद्धिमान किन्तु हलके हृदय का होता है। मकर के सिवाय अन्य राशियों में यह मंगल हो तो मस्तकशूल अथवा चित्तभ्रम हो सकता है। यह मंगल अशुभ योग में हो तो सम्बन्धियों से बहुत तकलीफ, प्रवास में तकलीफ तथा दारिद्र्य ये फल मिलते हैं।

अज्ञात—स्वस्त्री व्यभिचारिणी। शुभदृष्टे। न दोषः अनुजहीनः। द्रव्यलाभः। राहुकेतुयुते वेश्यासंगमः। भ्रातृद्वेषी क्लेशयुक्तः सुभगः अल्पसहोदरः। पापयुते पापवीक्षणेन भ्रातृनाशः उत्पाद्य सद्योनिहतः। उच्चे स्वक्षेत्रे शुभयुते वा भ्राता दीर्घायुः मतिधैर्यविक्रमवान्। युद्धे शूरः। पापयुते मित्रक्षेत्रे धृतिमान्। नृपमानः रिपुनाशः निरंकुशः नित्यमहोत्सवः॥ पत्नी व्यभिचारिणी होती है। शुभग्रह की दृष्टि हो तो यह फल नही मिलता। छोटे भाई नही होते। धन लाभ होता है। साथ में राहु हो तो वेश्यागमन करता है। भाइयों का द्वेष, तकलीफ, सुंदरता, भाई कम होना ये फल मिलते हैं। पापग्रह साथ में हो या उसकी दृष्टि हो तो भाइयों का नाश होता है, जनमतेही मर जाते हैं। मकर, मेष या वृश्चिक में हो अथवा शुभ ग्रह से युक्त हो तो भाई दीर्घायुषी होते हैं तथा बुद्धिमान, धैर्यशाली एवं पराक्रमी होते हैं, युद्ध में विशेष शौर्य बतलाते हैं। यह पाप ग्रह से युक्त होकर किसी मित्र ग्रह की राशि में हो तो वह व्यक्ति सोच-विचार करनेवाला, प्रबल धारणाशक्ति से युक्त होता है। राज-मान्यता प्राप्त होकर शत्रुओं का नाश होता है। किसी का वर्चस्व सहन नही होता। अपनी ही इच्छा से कार्य करता है। इसके घर नित्य ही आनंदकारक घटनाएँ होती रहती हैं।

मेरे विचार—तृतीय स्थान पराक्रम स्थान है। इसमें शास्त्र-कारोंने सब शुभ फलों की योजना की है। किन्तु सभी शास्त्रकारों ने बन्धु का घात होना यह अशुभ फल भी कहा है। आचार्य, गुणाकर आदि सभी ने जो यह फल कहा है इसका अनुभव स्त्री राशियों में आता है। सुख न मिलना यह फल पुरुष राशियों का है। हिल्लाजातक, बृहद्यवनजातक, पुंजराज, गर्ग, शौनक,

रामदयाल, वैद्यनाथ तथा पाश्चात्य इनके फलादेश भी पुरुष राशियों के हैं। तृतीय के मंगल के उदाहरण स्वरूप एक कुण्डली-ड्यूक ऑफ विंडसर-जन्म ता. २३-६-१८९९, रात्रि को १०, लंडन।
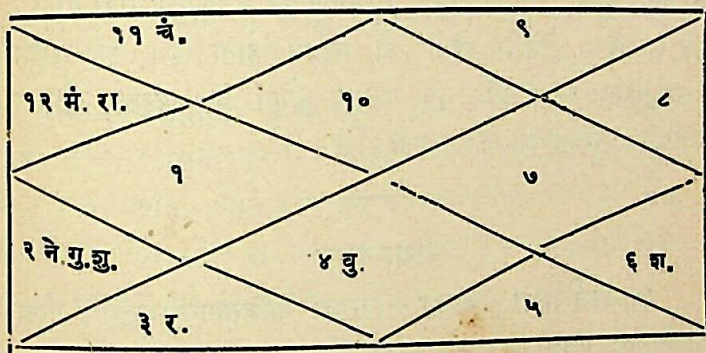
इनके तृतीय में राहु के साथ मंगल है अतः एक स्त्री के मोह से राज्य छोड़ दिया। पंचम में गुरु, शुक्र तथा नेपच्यून की युति भी इसमें कारण हुई है। यह तृतीय का मंगल जलराशि में है इसलिए छोटे बंधु की स्थिति अच्छी रही। इस विषय का एक श्लोक इस प्रकार है-भ्रातृदौ स्त्रीग्रहर्क्षस्थौ भ्रातृदौ पुंग्रहर्क्षगौ। सोदरेशकुजौ स्यातां भ्रातृस्वसृसुखप्रदौ॥ मंगल स्त्रीग्रह की राशि में हो तो बन्धुओं का सुख मिलता है। पुरुष ग्रह की राशि में हो तो बहनों का सुख मिलता है।

मेरे अनुभव—यह मंगल पुरुष राशि में हो तो माता की मृत्यु होकर सौतेली मां आती है। मकर के सिवाय अन्य स्त्री राशि में होतो बडे और छोटे भाई जीवित रहते हैं। पुरुष राशि में हो तो छोटा भाई बिलकुल नही होता। बहिन होती है या फिर गर्भपात ही होता है। छोटी बहिन के बाद छोटा भाई हो तो जीवित रह सकता

है। भाई के साथ इसके संबंध अच्छे नही रहते। बंटवारा हो जाता है। किन्तु अदालत में जाकर नही होता। यह मंगल पुरुष राशि में हो तो अदालत में झगड कर विभक्त होना पडता है। यह मेष, मकर या वृश्चिक में हो तो जीवन में स्थिरता नही होती। अति सत्यप्रिय होने से लोगों को अप्रिय होता है। स्त्री राशि में साधारणतः स्वार्थी और धूर्त स्वभाव होता है। इस्टेट छोडनी पड़ती है। घरबार की चिन्ता नही होती।

चौथा स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—विसुखः पीडितमानसश्चतुर्थे। सुख नही मिलता, मनको पीडा होती है।

कल्याणवर्मा—बन्धुपरिच्छदरहितो भवति चतुर्थेर्थवाहनविहीनः। अतिदुःखैःसंतप्तः परगृहवासी कुजे पुरुषः॥ आप्त परिवार नही होता, धन या वाहन नही मिलता, दूसरों के घर रहना पडता है और बहुत दुःख होता है।

गर्ग—कुजे बंधौ भूम्याजीवो नरः सदा। भूमि पर आजीविका (खेती) करता है।

काशीनाथ—चतुर्थे भूसुते कृष्णः पित्ताधिक्योरिनिर्जितः। वृथाटनो हीनपुत्रो महाकामी च जायते। काले वर्ण का, पित्त प्रकृति का तथा शत्रुओं द्वारा पराजित होता है। अकारण प्रवास करना, पुत्र न होना तथा अति कामुकता ये फल मिलते हैं।

जागेश्वर—सभौमे विदग्धं, विभग्नं, यदा मंगले तुर्यभावं प्रपन्ने सुखं किं नराणां तथा मित्रसौख्यम्। कथं तत्र चिन्त्यं धिया धीमता वा परं भूमितो लाभभावं प्रयाति॥ टूटा फूटा घर होता है तथा वह भी

जलता है। मित्रों का तथा अन्य किसी प्रकार का सुख नही मिलता। बुद्धि नही होती किन्तु जमीन से कुछ लाभ होता है।

वैद्यनाथ—स्त्रीनिर्जितः शौर्यवान्। नीचेऽरातौ कुजे सुखे स्यादगृहो नरः ॥ स्त्री के अधीन, शूर होता है। खुद का घर नही होता।

बृहद्यवनजातक - दुःखं सुहृद्वाहनतः प्रवासात् कलेवरे रुग्बलताबलित्वं। प्रसूतिकाले किल मंगलेस्मिन् रसातलस्थे फलमुक्त-माद्यैः ॥ मित्र, वाहन, प्रवास इनसे दुख होता है। शरीर में बहुत रोग तथा दुर्बलता एवं प्रसूति के समय कष्ट होता है। असृगष्टसहोदरा-र्तिम्। आठवें वर्ष भाई को कष्ट होता है।

आर्यग्रंथ– जडमतिरतिदीनो बंधुसंस्थे च भौमे न भवति कुल आर्यैर्बंधुहीनोतिदुःखी। भ्रमति सकलदेशे नीचसेवानुरक्तः परवशपरदारे लुब्धचित्तः सदैव ।। मंदबुद्धि, दीन अपने कुल में या बडे बूढों के साथ न रहने वाला, बंधुहीन, दुःखी, सब प्रदेशों में घूमनेवाला, नीच लोगों की सेवा करने वाला, दूसरों के अधीन रहने वाला, परस्त्रियों में आसक्त होता है।

मन्त्रेश्वर – विमातृ—माता का वियोग होता है।

पराशर—चतुर्थे बन्धुमरणं शत्रुवृद्धिर्धनव्ययः। भाई का मृत्यु, शत्रुओं में वृद्धि तथा धन की हानि ये इस मंगल के फल हैं।

जयदेव – असुखवाहनधान्यधनो जनो विकलधीः सुखगे सति भूसुते। वाहन, धनधान्य, बुद्धि, सुख इनमें से कुछ भी प्राप्त नही होता।

वसिष्ठ—भौमः सुचीरं चतुर्थे। वस्त्र अच्छे होते हैं।

पुंजराज—आरः सबलश्चतुर्थे पित्तज्वरो वा व्रणरुग्जनन्याः। भवेन्नितान्तं मनुजो व्रणार्तः पार्श्वेथवारे दहनेन दग्धः ॥ यह बलवान

हो तो माता को पितज्वर अथवा व्रणरोग होता है। शरीर में व्रण होते हैं। खास कर पीठ में या जलने से व्रण होते हैं। मातामहस्य पक्षेपि विषशस्त्रकृता व्यथा। इसकी माता के पिता के घर के लोगों को विष या शस्त्रों से कष्ट होता है।

रामदयाल—पुंजराज के समान ही मत है।

नारायण भट्ट—कृपावस्त्रभूमिर्लभेत् भूमिपालात्। राजा की कृपा से वस्त्र तथा जमीन प्राप्त होती है।

घोलप—विदेश में बहुत कष्ट होता है।

गोपाल रत्नाकर—मां बाप को शारीरिक तथा आर्थिक कष्ट होते हैं। यह मंगल सौम्य हो तो नरवाहन (मनुष्यों द्वारा चलाए जाने वाले रिक्षा, पालकी आदि वाहन) का सुख मिलता है। घर के रहस्य बाहर ज्ञात नही होते। यह पराधीन होता है तथा स्त्री का घात करता है।

हिल्लाजातक—चतुर्थो बंधुहानिश्च हायने चाष्टमे ध्रुवं। आठवें वर्ष भाई की मृत्यु होती है।

यवनमत—यह मंगल बलवान न हो तो वृद्धावस्था में बहुत तकलीफ होती है। मातापिता के साथ विरोध होता है। घर की झंझटों में व्यस्त रहता है। घर गिरना या आग लगने का भय होता है। स्वभाव उद्धत होता है। हाथ पैर लंबे होते हैं। यह युद्ध में विजयी किन्तु निर्दय तथा ऋणग्रस्त होता है।

पाश्चात्य मत—बहुत घूमने वाला, झगडालू, मां-बाप का घात करने वाला तथा सुखहीन होता है। यह शुभ सम्बन्ध में हो तो जीवन में कभी दुखी नही होता। इसके व्यवहार में झंझटें और झगडे बहुत होते हैं। यह पागल जैसा होता है और बहुत गलतियां करता

है। साहसी और दुराग्रही होता है। इस पर पापग्रह की दृष्टि हो या पापग्रह से युक्त हो तो दुर्घटनाओं का भय होता है।

अज्ञात—गृहच्छिद्रम्। अष्टमे वर्षे पितृरिष्टं। मातृरोगी। सौम्ययुते परगृहवास:। शरीरकष्टं क्षेत्रहीन:। धनधान्यहीन:। जीर्णगृहवास:। उच्चे स्वक्षेत्रे शुभयुते मित्रक्षेत्रे वाहनवान् क्षेत्रवान् मातृदीर्घायु:। नीचर्क्षे पापमृत्युयुते मातृनाश:। बंधुजनद्वेषी स्वदेशपरित्यागी वस्त्रहीन: बंधुरहित: शौर्यवान् स्त्रीभिर्जित:॥ घर में अयोग्य घटनाएं बहुत होती हैं। आठवें वर्ष पिता का मृत्यु तथा माता को रोग होना ये फल होते हैं। बुध के साथ हो तो दूसरों के घर रहना पडता है। शरीर को कष्ट होते हैं। धनधान्य, घरबार नही होता। टूटे फूटे घर में रहना पडता है। मेष, वृश्चिक या मकर में शुभ ग्रह से युक्त हो अथवा मित्र ग्रह की राशि में हो तो वाहन तथा खेतीवाडी का सुख मिलता है तथा माता दीर्घायुषी होती है। कर्क राशि में तथा अष्टमेश से युक्त हो तो माता की मृत्यु होती है। भाईबंदों का द्वेष करता है, स्वदेश का त्याग करता है। शूर किंतु स्त्रियों के अधीन होता है।

मेरे विचार--जमीन, घरबार, खेतीवाडी इनका कारक मंगल माना है किन्तु यह ठीक प्रतीत नही होता क्योंकि इस इस्टेट का मंगल द्वारा नाश ही होता है। इस ग्रह का स्वभाव नाशकारी ही है। अपनी बुद्धिमत्ता विशेष नही होती। अग्नि जिस तरह सभी को जलाती है—यह आदमी, यह जानवर ऐसा भेद नही करती—उसी तरह मंगल नाश करता है। आचार्य, गुणाकर, काशीनाथ, कल्याणवर्मा, जागेश्वर (भूमि लाभ का फल छोडकर), वृहद्‌यवन जातक, आर्यग्रंथ, मंत्रेश्वर, जयदेव, पुंजराज, रामदयाल, घोलप, गोपाल रत्नाकर, हिल्लाजातक, पराशर, यवन तथा पाश्चात्य इन सभी ने चतुर्थ

के मंगल के फल नाशरूप बतलाये हैं। ये फल पुरुष राशियों के हैं। अन्य आचार्यों के शुभ फल हैं वे स्त्री राशियों के हैं।

मेरा अनुभव—इसे संपत्ति का सुख तो मिलता है किंतु संतति नही होती। हुई तो कष्टदायक होती है। इसका उत्कर्ष २८ वें वर्ष से ३६ वें वर्ष तक होता है। बाद में खा-पीकर सुख से रहता है। व्यवसाय अनेक होते हैं। मेष, कर्क, सिंह या मीन लग्न हो और चतुर्थ में मंगल हो तो माता का मृत्यु अथवा द्विभार्या योग नही होता। क्यों कि ऐसी स्थिति में मंगल कर्क, तुला, वृश्चिक या मिथुन में होता है। अन्य राशियों में मातापिता के मृत्यु तथा द्विभार्या योग ये फल मिलते हैं। सौतेली मां आ सकती है। आठवें, १८ वें, २८ वें, ३८ वें तथा ४८ वें वर्ष शारीरिक आपत्ति आती है। इसका उत्कर्ष जन्मभूमि में नही होता, वहां बहुत कष्ट होते हैं। जन्मभूमि छोडकर दूर रहने से उत्कर्ष होता है। इसकी पैतृक इस्टेट नही होती। हुई भी तो उसका उपयोग जीवन भर नही होता। अपने कष्ट से ही घरबार प्राप्त करना पडता है। यह मंगल अग्नि राशि में हो तो घर को आग लगती है। अपना घर बनवा कर आखिरी दिन वहीं बिताने की प्रबल इच्छा होती है। मंगल, कर्क, तुला, वृश्चिक, मिथुन में हो तो ही यह इच्छा सफल होती है। किंतु मृत्यु अपने घर में नही होता। (इसके उदाहरण स्वरूप लोकमान्य तिलक की कुण्डली देखना चाहिए।) इस स्थान के मंगल से पहले पुत्र की मृत्यु होती है। अदालत में यश मिलता है। मित्र बहुत होते हैं और उनसे लाभ भी होता है। स्त्रियों से लाभ होता है। मृत्यु के समय कारोबार अच्छी स्थिति में होता है तथा मृत्यु के समय विशेष तकलीफ नही होती। इसके पूर्वजों ने किसी गरीब की जायदाद का अपहरण किया होता है या देवी या गणपति

की उपासना बंद कराई होती है जिसके फलस्वरूप इसके घर में सदा ही असमाधान बना रहता है। स्त्री का मृत्यु, माता का मृत्यु, जायदाद न मिलना ये फल मिलते हैं। इस मंगल के उदाहरण स्वरूप एक कुण्डली—श्री. बलवंत रामचंद्र गोखले, कल्याण, जन्म ता. ३-१०-१८९०, स्थान बेलगांव, सूर्योदय के समय।
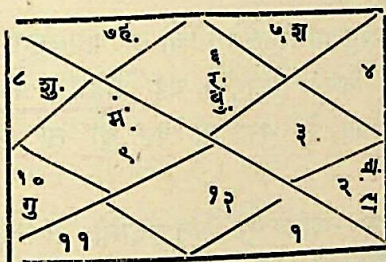
इन ने पोस्ट डिपार्टमेंट में सर्विस की। धर्मनिष्ठ, स्नान संध्या, देवपूजा आदि नियमपूर्वक करते थे। इन के मातापिता की जलदी ही मृत्यु हुई तथा विवाह भी अनेक हुए। पहली पत्नी का पुत्र भी जीवित नही रहा। कई कन्याओं के बाद सन १९३८ में एक पुत्र हुआ। अपना घरबार नही हुआ। ये अच्छे ज्योतिषी थे।

पांचवां स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—असुतो धनवर्जितः। पुत्रहीन, दरिद्री होता है।

कल्याणवर्मा—सौम्यार्थपुत्रमित्रं चपलमतिः पंचमे कुजे भवति। पिशुनोनर्थप्रायः खलश्च विकलो नरो नीचः॥ थोडा धनलाभ तथा

पुत्र और मित्रों का सुख मिलता है। बुद्धि चंचल होती है। दुष्ट, अनर्थ करनेवाला, किसी अवयव से विकल और नीच होता है।

वैद्यनाथ—क्रूरोटनश्चपलसाहसिको विधर्मा भोगी धनी च यदि पंचमगे धराजे ॥ क्रूर, प्रवासी, साहसी, चपल, धर्महीन, भोगी और धनवान् होता है। पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रोवनेर्यच्छति। पुत्र की मृत्यु होती है।

गर्ग—रिपुदृष्टो रिपुक्षेत्रे नीचो वा पापसंयुतः। भूमिजः पुत्रशोकार्तिं करोति नियतं नृणाम् ॥ यह शत्रुग्रह की राशि में नीच राशि में, पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो पुत्र की मृत्यु नियम से होती है।

जागेश्वर—महीजे सुते चेत् तदासौ क्षुधावान् कफैर्वातगुल्मैः स्वयं पीडयतेसौ। परं वै कलत्रात् तथा मित्रतोऽपि भवेद् दुःखितो मित्रतश्चापि नूनम् ॥ यदा मंगलः पंचमे वै नराणां तदा सन्ततिर्जायते नश्यते वा। इसे भूख बहुत होती है। कफ तथा वातगुल्म रोग से पीडा होती है। स्त्री, मित्र तथा शत्रुओं से कष्ट होता है। सन्तान होती है किन्तु मर जाती है।

बृहद्यवनजातक—कफानिलव्याकुलता कलत्रान् मित्राच्च पुत्रादपि सौख्यहानिः। मतिर्विलोमा विपुलो जयश्च प्रसूतिकाले तनयालयस्थे ॥ इस में जागेश्वर जैसा ही वर्णन है। सिर्फ दो बातें अधिक हैं-बुद्धि विपरीत होना तथा बहुत जय प्राप्त होना। षष्ठोग्निभीतिर्धरणीजः। छठवें वर्ष आग का भय होता है।

काशीनाथ—पंचमस्थे धरासूनौ कुसन्तानः सदारुजः। बंधुवर्गैर्विरक्तश्च नरो बुद्धिविवर्जितः ॥ सन्तान दुराचरणी होती हैं। रोग बहुत होते हैं। भाईबंदों का सम्बन्ध नहीं रहता। बुद्धिहीन होता है।

मन्त्रेश्वर—विसुखोऽतनयोऽनर्थप्रायः सुते पिशुनोऽल्पधीः। पुत्रसुख नही होता, अनर्थ करता है, दुष्ट तथा बुद्धिहीन होता है।

आर्यग्रंथ—तनयभवनसंस्थे भूमिपुत्रे मनुष्यो भवति तनयहीनः पापशीलोऽतिदुःखी। यदि निजगृहतुंगे वर्तते भूमिपुत्रः कृशकमलंनिकेतं पुत्रमेकं ददाति॥ पुत्रहीन, पापी और दुःखी होता है। यदि यह मंगल मेष, वृश्चिक या मकर का हो तो एक दुवला पतला लडका होता है।

पुंजराम—भौमेग्निशस्त्रव्यथा प्रोक्तांगेषु मृतप्रजास्तु नितरां स्यान्मानवो दुःखितः। अग्नि से या शस्त्र से दाहिने पैर को जखम होती है। सन्तति जनमते ही मरती है। वहुत दुःखी होता है।

जयदेव—जागेश्वर के समान मत है।

जीवनाथ—अपत्ये क्षमापुत्रे भवति जठराग्निप्रवलता न सन्तानो जीवत्यपि यदि च जीवत्यपि गदी। सदान्तः सन्तापः खलमतिरनल्पाघनिचये कृतेपि स्वर्गाप्तिर्न हि जनिवतामर्थनिवहः। भूख बहुत तेज होती है। सन्तान जीवित नही होती, रही तो रोगी होती है। मन में बहुत सन्ताप होता है। बुद्धि पापयुक्त होती है। शुभ कर्म हों भी तो स्वर्ग नही मिलता। धन भी नही मिलता।

नारायणभट्ट—जीवनाथ के समान ही मत है।

घोलप—काले वर्ण का, सजा भोगनेवाला, व्यभिचारी, राजनीतिक झगडों के कारण कुटुम्बीयों के साथ विदेश में रहनेवाला, लाल आंखों का, मूर्ख, मूर्खों की संगति में रहनेवाला, वातपित्तरोगों से युक्त, वंध्या स्त्री का पति ऐसा यह व्यक्ति होता है।

गोपाल रत्नाकर—अभागी, राजकोप से दुखी होनेवाला। बच्चे मरे हुए उत्पन्न होते हैं।

हिल्लाजातक—पंचमः पंचमे वर्षे बंधुनाशकरः कुजः। पांचवें वर्ष बन्धु की मृत्यु होती है।

यवनमत—क्रम बोलता है। पुत्र, संपत्ति, नौकरी इन से इसे दुख होता है। इज्जत नही रहती। क्रोधी तथा पेट के विकारों से एवं कफ तथा वायुरोगों से वीमार रहता है।

पाश्चात्य मत—इस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो सट्टे के व्यापार में बहुत नुकसान होता है। पुत्र उद्धत होते हैं। उन के अकस्मात मरने का डर होता है। धन और स्त्री का सुख मिलता है। शराब का व्यसन होता है। कुटुम्ब में शान्ति नहीं रहती। स्वभाव खर्चीला होता है। उच्च या स्वगृह में यह मंगल हो तो अथवा शुभ की इस पर दृष्टि हो तो सट्टा, लाटरी, रेस आदि में बहुत यश मिलता है। कफ, वायु तथा पित्त विकार होते हैं। बहुत प्रवास करता है।

पराशर—पंचमे पितृहानिं च धनायतिसुतौ यशः। पिता का मृत्यु होता है किन्तु धन, संतति तथा कीर्ति प्राप्त होती है।

लोमश संहिता—अर्को राहुः कुजः सौरिर्लग्ने तिष्ठति पंचमे। पितरं मातरं हन्ति भ्रातरं च शिशून् क्रमात्॥ लग्न में या पंचम में हों तो रवि से पिता का, राहु से माता का, मंगल से भाई का एवं शनि से बच्चों का मृत्यु होता है।

अज्ञात—निर्धनः पुत्राभावः दुर्भागी राजकोपः षष्ठवर्षे आयुधेन किंचिद्दण्डकालः दुर्वासनाज्ञानवान् मायावादी तीक्ष्णधीः। उच्चे स्वक्षेत्रे पुत्रसमृद्धिः अन्नदानप्रियः राज्याधिकारयोगः शत्रुपीडा। पापयुते पापक्षेत्रे पुत्रनाशः। बुद्धिभ्रंशादिरोगः। रन्ध्रेशे पापयुते पापी वीरः। दत्तपुत्रयोगः। पुत्रार्तिः दुर्मतिः। स्वजनैर्वादः उदरे व्याधिः। पत्नीकष्टम्॥ दरिद्री, पुत्रहीन, दुराचरणी, राजकोप का पात्र होता है।

छठवें वर्ष शस्त्र से पीडा होती है। बुरी वासनाएं होती हैं। ज्ञानी, किन्तु प्रत्यक्षवादी, संसारवादी (मटीरिअलिस्ट), तीक्ष्ण बुद्धि का होता है। मकर, मेष या वृश्चिक में हो तो पुत्र बहुत होते हैं, अन्नदान करता है, अधिकारी होता है। शत्रुओं से कष्ट होता है। पाप ग्रह की राशि में या उस से युक्त हो तो पुत्रनाश होता है। बुद्धिभ्रंश आदि रोग होते हैं। षष्ठ स्थान के स्वामी से युक्त हो तो पापी किन्तु शूर होता है। पुत्रशोक होता है। दत्तक पुत्र लेना पडता है। बुद्धि पाप-युक्त होती है। अपने लोगों के साथ झगडा करता है। पेट में रोग और पत्नी को कष्ट होता है।

मेरे विचार—शास्त्रकारों ने प्रायः बुरे फल कहे हैं वे पुरुष राशियों के हैं। जो कुछ अच्छे फल कहे वे मकर को छोड कर अन्य स्त्री राशियों के हैं। पराशर के सिवाय अन्य सभीने अशुभ फल कहे हैं। व्यवसाय में नुकसान, पुत्र उद्धत होना, अकस्मात पुत्रमृत्यु, व्यसनाधीन होना, कुटुम्ब में अशान्ति, भाई और पिता का मृत्यु, पुत्र न होना या होकर मरना, गर्भपात, बुद्धिहीनता, दुष्टता, दारिद्र्य, आग तथा शस्त्रों से भय, क्रूरता, प्रवास, साहस, चपलता, वात, कफ तथा गुल्मरोग, स्त्रीपुत्रों से तकलीफ, विपरीत बुद्धि, तीव्र भूख, पापकर्मों में रुचि, सजा, मूर्खता, मूर्खों की संगति, कम बोलना, नौकरी में सुख न होना, धनलाभ न होना, इज्जत न होना, क्रोधी स्वभाव, अनर्थ-प्रियता, ये सब पापफल पुरुष राशियों के तथा मकर राशि के हैं। विपुल जय यह बृहद्यवन जातक का फल तथा पाश्चात्य मत का वैभव एवं स्त्रीसुख का फल, सट्टे में लाभ ये शुभ फल स्त्री राशियों के हैं। पराशर ने पिता को मारक यह फल कहा। किन्तु पंचम स्थान पिता का स्थान नही है तथा मंगल पिता का कारक नही है। अतः

इस की उपपत्ति नही बैठती। शायद दशमस्थान से यह आठवां स्थान है इस लिए यह फल कहा हो।

मेरा अनुभव—मकर को छोड अन्य स्त्री राशियों में तथा मिथुन राशि में इस मंगल से पुत्र सन्तति होती है और जीवित भी रहती है। किन्तु पहला पुत्र मरता है। अन्य राशियों में गर्भपात, मरा हुआ बच्चा पैदा होना या पांच वर्ष के पहले ही मर जाना ये प्रकार होते हैं। माता के पूर्वजन्म के दोषों के कारण ऐसा होता है। इस विषय में दो श्लोक इस प्रकार हैं—आद्ये चतुष्के जननीकृताघैर्मध्ये तु पित्रार्जितपापसंघैः। बालस्त्वन्त्यासु चतुःशरत्सु स्वकीयदोषैः समुपैति नाशम् ॥ आ द्वादशाब्दान्तरयोनिजन्मनामायुष्कला निश्चयितुं न शक्यते। मात्रा च पित्रा कृतपापकर्मणा बालग्रहैर्नाशमुपैति बालकः॥ ऐसे समय माता की कुण्डली देख कर या उसे स्वप्न दीखते हैं उससे फल का ज्ञान कर लेना चाहिए (इसके सम्बन्ध में परिशिष्ट देखिए।) सन्तति होती ही न हो तो स्त्री को सन्तति प्रतिबंधक रोग भी हो सकते हैं। मासिक धर्म ठीक न होना, उस समय पेट में तकलीफ होना, सन्धियों मे दर्द होना, संभोग के समय बहुत कष्ट होना, प्रदर होना ये रोग हो सकते है। स्त्री राशि में यह मंगल हो तो तीन लडके होते हैं। वे दुराचारी होते हैं। पहली कन्या हुई तो जीवित रहती है। पराशर के कहे हुए पितृनाश के फल के बारे में मेरा अनुभव इस प्रकार है—लग्न, धन, चतुर्थ, पंचम तथा षष्ठ इन स्थानों में पाप ग्रह हो तो पिता का मृत्युयोग होता है। तृतीय स्थान में पापग्रह हो तो माता का मृत्युयोग होता है। इसी प्रकार सप्तम, नवम, अष्टम, दशम तथा व्यय स्थान के पापग्रह भी माता की मृत्यु को कारण होते हैं। पराशर का एक और श्लोक इस प्रकार है—सूर्येण नवमस्थानेन

पितुर्मृतिपदं वदेत् । चंद्रेण पंचमेनैव मातुर्मृतिपदं वदेत् ।। सूर्य से चौथे स्थान का विचार कर पिता का मृत्यु कहना चाहिए तथा चंद्र से पांचवें स्थान का विचार कर माता का मृत्यु कहना चाहिए । इसी प्रकार ग्यारहवें स्थान से बन्धु के मृत्यु का विचार योग्य बतलाया है । इस स्थान में स्त्री राशि में मंगल हो तो धन ज्यादा नही मिलता किन्तु कीर्ति प्राप्त होती है । मेष, सिंह, या धनु राशि में हो तो सेना, पुलिस, फॉरेस्टरी, इंजीनियरिंग, विमान विद्या, मोटर ड्राइविंग, टेक्नालजी इन विभागों में शिक्षा प्राप्त होती है । वृषभ, कन्या या मकर राशि में हो तो सर्वे, भूमिति, ओवरसियर, टेलरिंग ये शिक्षाएं प्राप्त होतीं हैं । मिथुन, तुला, कुम्भ में हो तो वैद्यक, डाक्टरी, फौजदारी कानून ये शिक्षाएं मिलती है । कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो सर्जरी, इतिहास, रंग काम आदि की शिक्षा मिलती है । यहां मंगल बलवान हो तो वे विद्यार्थी सन्मानपूर्वक (ऑनर्स कक्षा में) उत्तीर्ण हो सकते हैं । पंचम में मंगल होना यह कीर्तियोग है । श्री भाटे बुवा, स्वर्गीय दादासाहब खापर्डे इनकी कुण्डलियों में पंचम में मंगल है । बरताव व्यवस्थित तथा स्वभाव मिलनसार होता है । ब्याह देर से होता है । आवाज मधुर किन्तु स्त्री जैसा होता है । हिंज मास्टर्स व्हाइस कंपनी के एक अच्छे गायक श्री. जी. एन्. जोशी की कुण्डली में पंचम में मकर का मंगल है । ब्याह देरसे किन्तु अन्य जातीय लडकी से हुआ (जन्म ता. ६-४-१९०९) । इस योग पर जो अधिकारी रिश्वत लेते हैं वे बहुत जल्दी पकडे जाते हैं । ये लोग शृंगारकुशल, कामशास्त्रज्ञ होते हैं । स्त्रियां इन पर प्रसन्न रहती हैं । सदा अग्रणी रहने की और सन्मान पाने की इच्छा तीव्र होती है । खर्च बहुत करते हैं और वह भी ऐश के लिए । व्यभिचारी भी हो सकते हैं । मधुर आवाज के

उदाहरण स्वरूप एक कुण्डली देखिए। कुमार गन्धर्व–जन्म ता० ८–४–१९२४ शक १८४५ चैत्र शु. ४ मंगलवार दोपहर को ३-४५ स्थान सुलेगाव (अक्षांश १९–५०, रेखांश ७४–५०)।
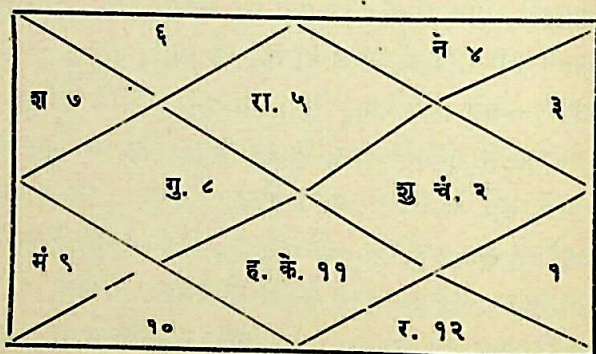
पंचम में मंगल तथा लग्न में राहु होने से बचपन से ही गाने की ओर प्रवृत्ति हुई। मधुर आवाज से प्रसिद्धि भी प्राप्त हुई। चंद्र से राहु चौथा है अतः पूर्व संस्कारों का भी वल मिला। इनके पिता भी गायक थे। पंचम का मंगल किसी भी राशि में हो यह प्रसिद्धियोग होता है। विदेशयात्रा होती है। डाक्टरों के लिए यह योग अच्छा है। इन्हें पेट के रोग (अपेंडिसाइटिस, लिवर, स्पिलन), टानसिल ज्वर तथा गुप्त रोगों की चिकित्सा अधिक करनी पडती है और वे उसमें यशस्वी भी होते हैं। वकीलों की कुण्डली में यह योग हो तो उन्हें झगडे, गालीगलोज, ठगना आदि व्यवहारों में काम करना पडता है। यह पुरुष राशि में हो तो पुरुषों से और स्त्री राशि में हो तो स्त्रियों से सम्बन्ध अधिक रहता है। इस स्थान के मंगल से द्विभार्या योग होता है तथा कामुकता अधिक होती है। इस योग के डाक्टर गरीब लोगों से प्रेम, दया तथा सहानुभूति का व्यवहार करते हैं। ये डाक्टर

तथा वकील अपने विषय को जलदी तथा अच्छी तरह समझ लेते हैं। लोगों पर इनका प्रभाव अच्छा पडता है। ये मधुरभाषी, मिलनसार किन्तु अभिमानी भी होते हैं। इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिर्विद् का मत इस प्रकार है—इसका स्वभाव उत्साही, क्रियाशील, विधायक तथा प्रेरक होता है। यह ग्रह शक्ति, विस्तार तथा ओज का प्रतिनिधि है। स्वतन्त्रता इसे प्रिय होती है। बन्धन, कैद या देरी इसे सहन नही होती। यह उदार, खुले दिल का, शूर, तथा धैर्यशाली होता है। आत्मविश्वास के साथ नियमित कार्य करके यह यश प्राप्त करता है। किन्तु इन्हें साहस तथा गरम मिजाज से सावधान रहना चाहिये। क्योंकि इनकी प्रवृत्ति ही आक्रमक तथा अपनी इच्छानुसार चलने की होती है। अतः साहस से विपत्ति की संभावना है। ये बहुत अभिमानी होते हैं। बात बात पर बिगडते हैं और उत्तेजित होने पर संयम और शान्ति को भूल जाते हैं। ये थोडे समय में बहुत कार्य कर सकते हैं। ये यदि थोडा आत्मसंयम करें तो समर्थ तथा योग्य कार्यकर्ता बन सकते हैं।

छठवां स्थान

पराशर—षष्ठे रिपुसमृद्धिं च जयं बन्धुसमागमम् अर्थवृद्धिं। शत्रु बहुत होते हैं। जय प्राप्त होता है। सम्बन्धियों से मेलमिलाप होता है। धन की वृद्धि होती है।

आचार्य—बलवान् शत्रुजितश्च शत्रुयाते। बलवान, शत्रुओं को जीतनेवाला होता है।

गुणाकर—आचार्य के समान मत है। यह स्वामी होता है-सेवकों से काम कराता है। खुद नौकरी नही कर सकता।

वैद्यनाथ—स्वामी रिपुक्षयकरः प्रबलोदराग्निः श्रीमान् यशोबल-युतोऽवनिजे रिपुस्थे। स्वामी, शत्रुओं का नाश करनेवाला, धनवान, कीर्तिमान तथा बलवान होता है। भूख तेज होती है।

कल्याणवर्मा—प्रबलमदनोदराग्निः सुशरीरो जायते बली षष्ठे। रुधिरे सम्भवति नरः स्वबन्धुविजयी प्रधानश्च॥ कामुक, तीव्र भूख वाला, सुन्दर, अपने सम्बन्धियों पर विजय पाने वाला तथा मुख्य होता है।

आर्यग्रंथ—रिपुगृहगतभौमे संगरे मृत्युभागी सुतधनपरिपूर्ण-स्तुंगगे सौख्यभागी। रिपुगणपरिदुष्टे नीचगे क्षोणिपुत्रे भवति विकल-मूर्तिः कुत्सितः क्रूरकर्मा॥ यहां मृत्युभागी शब्द का अर्थ युद्ध में मृत्यु पाने वाला ऐसा है किन्तु इस विषय में हमें सन्देह है। पुत्र तथा धन से युक्त होता है। उच्च का हो तो सुख मिलता है। नीच अथवा पापग्रह से युक्त अथवा शत्रु ग्रह की राशि में हो तो दुर्बल, निन्दनीय तथा क्रूर होता है।

जागेश्वर—महीजो यदा शत्रुगो वै नराणां तदा जाठराग्नि-र्भवेद् दीप्ततेजाः सदा मातुले दुःखदायी प्रतापी सतां संगकारी भवेत् कामयुक्तः॥ भूख तेज होती है। मामा को दुख देता है। पराक्रमी, सत्संगति में रहनवाला और कामुक होता है।

बृहद्यवनजातक—प्राबल्यं स्याज्जाठराग्नेर्विशेषाद् रोषावेशः शत्रुवर्गेऽपि शान्तिः। सद्भिः संगो धर्मधीः स्यान्नराणां गोत्रैः पुण्यस्यो-दयो भूमिसूनौ॥ बहुत क्रोधी होता है। शत्रु शान्त होते हैं। सत्संगति तथा धार्मिक बुद्धि होती है। अपने कुटुम्बीयों की उन्नति कराता है। भौमो वै जिनसंमिते प्रददते पुत्रं च—२४ वें वर्ष पुत्र होता है।

काशीनाथ—षष्ठे भौमे शत्रुहीनो नानार्थैः परिपूरितः। स्त्रीलालसः पुष्टदेहः शुभचित्तश्च जायते॥ शत्रु नही होते। धनधान्यसंपन्न, स्त्री में आसक्त, पुष्ट शरीर का तथा शुभ अन्तःकरण का होता है।

गर्ग—बहुदाराग्निपुंस्कः स्यात् सुकार्यो बलवान् कुजे॥ बहुत स्त्रियों का उपभोग लेनेवाला, अच्छे काम करनेवाला तथा बलवान् होता है।

जयदेव—कल्याणवर्मा के समान मत है।

पुंजाराम—रुधिरो यदा पशुपयं वाजाविकं चोष्ट्रूचं। षष्ठ में मंगल बलवान हो तो पशु, भेडबकरियां अथवा ऊंट चराने का धंदा करना पडता है। आरो रिपुभावसंस्थः शस्त्राग्निघातस्त्वथवाग्निदग्धं। करोति मर्त्यस्य च मातुलस्य विषोत्थदोषेण विदूषितं वा॥ इसे तथा इस के मामा को विष, अग्नि तथा शस्त्रों का भय होता है।

मन्त्रेश्वर—प्रबलमदनः श्रीमान् ख्यातो रिपौ विजयी नृपः॥ कामुक, धनवान, कीर्तिमान, विजयी, राजा होता है।

जीवनाथ तथा नारायणभट्ट—मन्त्रेश्वर के समान मत हैं।

गोपाल रत्नाकर—धनधान्यवृद्धि, शत्रुओं का क्षय, राजसेवा, ज्ञानी, लोगों के साथ शत्रुता, बडे व्यवसाय करना किन्तु बडप्पन के मोह में व्यवसाय की ओर दुर्लक्ष होना ये इस मंगल के फल हैं।

घोलप—घर में बेफिक्र वृत्ति से रहने वाला, बुद्धिमान, धन से पंडितों को वश कर के कीर्ति प्राप्त करनेवाला, कामुक तथा तेज भूख वाला ऐसा यह व्यक्ति होता है।

हिल्लाजातक—पुत्रलाभकरः षष्ठश्चतुर्विंशे च वत्सरे। चौबीसवें वर्ष पुत्र होता है।

यवनमत—शत्रुओं को मारनेवाला, सुन्दर, आनन्दी, धनवान, कृतज्ञ, उदार तथा कुल में अग्रेसर होता है।

पाश्चात्य मत—इसे हल्के दर्जे के नौकरों से तकलीफ होती है। यह स्थिर राशि में हो तो मूत्रकृच्छ, गंडमाला; हृद्रोग आदि रोग होते हैं। द्विस्वभाव राशि में हो तो छाती और फेफड़ों के रोग होते हैं। चर राशि में हो तो आग का भय होता है, गंजापन, यकृत रोग तथा सन्धिवात ये रोग होते हैं। इस के नौकर अच्छे नही होते। इस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो दुर्घटना का भय होता है। कार्य करने की शक्ति बहुत होती है।

अज्ञात—प्रसिद्धः कार्यसमर्थः शत्रुहन्ता पुत्रवान्। सप्तविंशतिवर्षे कन्यकाश्वादियुत उष्ट्रवान्। पापर्क्षे पापयुते पापदृष्टे पूर्णफलानि। वातशूलादिरोगः। बुधक्षेत्रे कुष्ठरोगः। शुभदृष्टे परिहारः। कीर्ति प्राप्त होती है। कार्य करने का सामर्थ्य होता है। शत्रुओं का नाश करता है। पुत्रप्राप्ति होती है। २७ वें वर्ष कन्या प्राप्त होती है, ऊंटघोडे आदि प्राप्त होते हैं। यह मंगल पापग्रह के साथ, उस की राशि में अथवा दृष्टि में हो तो पूरा फल अशुभ होता है। वात तथा शूल रोग होते हैं। यह मिथुन या कन्या में हो कुष्ठ रोग होता है। शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो वह दूर होता है।

मेरे विचार—इस स्थान में आचार्य, गुणाकर, कल्याणवर्मा, वैद्यनाथ, पराशर, यवनमत, गोपाल रत्नाकर, हिल्लाजातक, गर्ग, काशीनाथ, जयदेव, मन्त्रेश्वर, नारायणभट्ट, जीवनाथ इन ने जो फल कहे वे स्त्री राशियों के हैं। आर्यग्रंथ, जागेश्वर, बृहद्यवनजातक, पुंजराज, घोलप, पाश्चात्य इन के फल-कामुकता, भूख तेज होना, ज्ञानी लोगों के साथ शत्रुता—ये पुरुष राशियों के है। आर्यग्रंथ के

पहले चरण का फल स्त्री राशि का तथा दूसरे चरण का फल पुरुष-राशि का है। वृद्द्यवनजातक में तेज भूख तथा क्रोध ये फल कहे वे पुरुष राशि के हैं। जागेश्वर ने मामा को दुख यह फल कहा वह पुरुष राशि का है। पुंजराज का फल—भेडबकरी तथा ऊंट चराना-स्त्री राशि का है। शस्त्र, अग्नि अथवा विष से भय यह फल मे", सिंह तथा धनु राशियों का है।

मेरा अनुभव—इस स्थान के मंगल के फलों का वर्णन ऊपर किया ही है। विशेष यह कि मामा और मौसी मरती है तथा सन्तान भी मरती है। मौसी विधवा होती है अथवा ये दोनों निपुत्रिक होते हैं। इस योग पर अधिकारी रिश्वत लेने पर भी पकडा नही जाता। द्विभार्या योग हो सकता है। षष्ठ के मंगल के उदाहरण स्वरूप एक कुण्डली देखिए। विल्यम मार्कोनी-रेडिओ के आविष्कार का जनक-जन्म ता २९-४-१८७४ स्थान रोम (अक्षांश ४१-५४ रेखांश १२। लग्न-धनु-२९ वां अंश।

१० श.
८
११
९
७
६ गु.
१२
१ र. शु. रा. ने.
५ चं.
३
४ ह.
मं. २
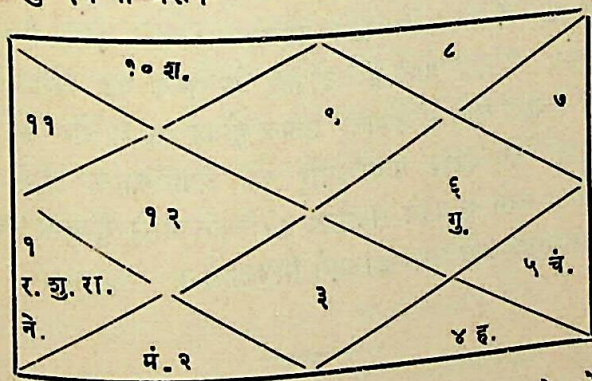
(२९ वें अंश के बारे में चारुवेल ने लिखा है—काले मेघों के ऊपर बलून में उडनेवाले व्यक्ति के समान यह होता है। वैज्ञानिक

प्रयोग करके असम्भव बातों का पता लगाने की कोशिश करता है। बहुत प्रयोगों के बाद इसे यश निश्चित रूप से मिलता है।) मार्कोनी को स्त्रीसुख बहुत कम मिला। १९१० में इसकी पत्नी ने तलाक लिया। इसके मांबाप चाहते थे कि यह अच्छा संगीतज्ञ बने। किन्तु इसने इंजीनियरिंग तथा विज्ञान का अभ्यास करके उसी में कीर्ति प्राप्त की। मृत्यु ता. २०-७-१९३७। षष्ठ स्थान में मंगल पुरुष राशि में हो तो कामुकता बहुत होती है और सम्भोग के समय कठोर बरताव करता है। एकाध दूसरा पुत्र होता है। किन्तु पुत्र मरते हैं। पहला या दूसरा पुत्र सयाना होकर धनार्जन प्रारंभ करने की उम्र में मरता है जिससे बहुत शोक होता है। स्त्री को गर्भाशय के विकार होने से सन्तति बिलकुल न होने का सम्भव होता है। हिल्लाजातक में २४ वें वर्ष पुत्र प्राप्ति यह फल कहा है। कुछ प्रतिष्ठित समाजों में २९ या ३० वें वर्ष के बाद ही आजकल विवाह होते हैं। अतः इस फल का उपयोग विचारपूर्वक ही करना चाहिये। भूख तेज होती है। खासकर तीखे या नमकीन पदार्थों पर रुचि होती है। इससे कामवासना भी तीव्र होती है। दोपहर के समय यह विशेष जागृत होती है। बहुत खाने से उष्णता उत्पन्न होकर नाना रोग होते हैं। बहुत खाना और शराब पीना शरीर को अपायकारक ही है। इन्हें कीर्ति प्राप्त करने के पहले संघर्षमय परिस्थिति में से गुजरना पडता है और निराश हो जाने पर कहीं मार्ग मिलता है।

सातवां स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—स्त्री अनादर करती है।

कल्याणवर्मा—मृतदारो रोगार्तोऽमार्गरतो भवति दुःखितः पापः। श्रीरहितः सन्तप्तः शुष्कतनुर्भवति सप्तमे भौमे॥ स्त्री का मृत्यु होता है। रोगी, दुराचारी, दुःखी, पापी, निर्धन, तथा दुबला होता है।

वैद्यनाथ—स्त्रीमूलप्रविलापको रणरुचिः कामस्थिते भूमिजे। स्त्री के लिए विलाप करना पड़ता है। युद्धप्रिय होता है।

पराशर—स्त्रियां दारमरणं नीचसेवनं नीचस्त्रीसंगमः। कुजोक्ते सुस्तना कठिनोर्ध्वकुचा। पत्नी की मृत्यु होती है। नीच स्त्रियों से कामसेवन करता है। स्त्री के स्तन उन्नत तथा कठिन होते हैं।

सारावली—स्त्री की योनि सूखी, चरपरी तथा छोटी होती है।

गर्ग—मुनिगृहगतभौमे नीचसंस्थेऽरिगेहे युवतिमरणदुःखं जायते मानवानां। मकरगृहनिजस्थे नान्यपत्नीश्चधत्ते चपलमतिविशालां दुष्टचित्तां विरूपाम्॥ यह मंगल नीच राशि में अथवा शत्रु ग्रह की राशि में हो तो पत्नी की मृत्यु होती है। यह मकर में अथवा स्वगृह में हो तो एकही स्त्री होती है और वह चंचल, बुद्धिमान किन्तु दुष्ट और कुरूप होती है।

मन्त्रेश्वर—अनुचितकरो रोगार्तोऽस्तेऽध्वगो मृतदारवान्। दुराचारी, रोगी, प्रवासी होता है। पत्नी की मृत्यु होती है।

काशीनाथ—भूमिपुत्रे सप्तमगे रुधिराक्तोऽपि कोपवान्। नीचसेवी वंचकश्च निर्गुणोऽपि भवेन्नरः॥ रक्त के रोगों से युक्त, क्रोधी, हलके लोगों का नौकर, ठगानेवाला तथा गुणरहित होता है।

वृहद्यवनजातक—नानानर्थव्यर्थचित्तोपसर्गैर्वैरित्रातैर्मानवं हीन-देहं। दारापत्यानन्तदुःखप्रतप्त दारागारेंगारकोयं करोति ॥ अनेक अनर्थों से मनको व्यर्थ ही तकलीफ होती है। शत्रुओं से पीडा होती है। शरीर दुबला होता है। स्त्री पुत्रों के बारे में तथा और भी कई दुःखों से पीडित होता है। तिथ्यसृगथाग्निभयं मुनींदौ। १७ वें वर्ष अग्निभय होता है।

जागेश्वर—यदा मंगलः सप्तमे स्यात्तदानीं प्रियामृत्युमाप्नोत्यवश्यं व्रणैर्वा। परं जाठरे क्रूररोगैश्च रक्ताद् विचार्यं त्विद जन्मकालेऽथ प्रश्ने ।। सुखं नो नराणां तथा नो कृपाणां तथा पादमुष्टिप्रहारैर्हतःस्यात्। परस्पर्धया क्षीयते शत्रुवर्गात् यदा मंगलो मंगलाया गृहे स्यात् ॥ स्त्री का मृत्यु होता है। व्रण तथा पेट के रोग होते हैं। रक्त दूषित होता है। इन फलों का विचार जन्म कुण्डली तथा प्रश्नकुण्डली दोनों में किया जा सकता है। इस व्यक्ति को सुख नही मिलता, व्यापार में यश नही मिलता, घूसों लातों से अपमानित होना पडता है। शत्रुओं के साथ स्पर्धा करने से हानि होती है।

जयदेव—अवलागतगेहसंचयो रुगनर्थोऽरिभयोद्युने कुजे। घर-बार प्राप्त होता है। रोगी, अनर्थकारी, शत्रुओं से भयभतीत होता है।

पुंजराज—यौवनारेप्यतीता ॥ क्षितिजे नरस्य रमणी पित्तव्रणे-नान्विता दग्धा वा विषवन्हिना यदि तदा वा बस्तिरोगान्विता। भूमिपुत्रद्यूनभावोपयाते कान्ताहीनः सन्ततं मानवः स्यात् ॥ स्त्री तरुण नही होती। वह पित्त या व्रणरोग से पीडित होती है अथवा विष से या आग में जल कर मरती है अथवा योनिरोग से युक्त होती है। इस से पत्नी की मृत्यु अवश्य होती है।

जीवनाथ—कुजे कान्तागारं गतवति जनोतीव लघुतां समाधत्ते युद्धे प्रबलरिपुणा स क्षततनुः। तथा कान्ताघाती परविषयवासी खलमतिर्निवृत्तो वाणिज्यादपि परवधूरंगविरतः॥ हीन, युद्ध में शत्रु के द्वारा आहत होता है। स्त्री का मृत्यु होता है। विदेश में रहना पडता है। दुष्ट बुद्धि होती है। व्यापार नही करता तथा परस्त्री से विलास नही करता।

नारायणभट्ट—जीवनाथ के समान ही मत है।

गोपालरत्नाकर—स्त्री को शारीरिक कष्ट होते हैं। यह पापग्रहों से युक्त हो तो स्त्री का मृत्यु होता है। शुभग्रहों से युक्त हो तो मृत्यु नही होता। पेट तथा हाथ में रोग होते हैं। भाई, मामा तथा मौसियां बहुत होती हैं। बुद्धिमान होता है।

वसिष्ठ--भौमः किल सप्तमस्थो जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्ततिं च। पत्नी दुराचारिणी होती है। सन्तति कम होती है।

घोलप—इस ने सप्तम स्थान का फल ठीक तरह नही कहा है।

रामदयाल—यौवनाढ्या कुजेपि। (टीकाकार-अपि शब्दात् क्रूरा कुटिला नातिसुन्दरी च।) यह मंगल बलवान हो तो स्त्री तरुण, क्रूर, कुटिल स्वभाव की और साधारण रूप की होती है-बहुत सुन्दर नही होती।

हिल्लाजातक—सप्तत्रिंशन्मिते वर्षे जायानाशं च सप्तमः। ३७ वें वर्ष स्त्री का मृत्यु होता है।

यवनमत—स्त्री का उपभोग कम प्राप्त होता है। अत्याचारी काम करता है। झगडा पसन्द नही होता। स्त्री का मृत्यु होता है।

पाश्चात्य मत—स्त्री कठोर स्वभाव की तथा झगडालू होती है। विवाह सुख अच्छा नही मिलता। विभक्त रहना पडता है

तथा हमेशा झगडे होते हैं। स्त्री के लिए झगडे या अदालती व्यवहार करने पडते हैं। व्यापार में शत्रु की स्पर्धा प्रबल और खुले रूप से होती है। साझीदारी में यश नही मिलता। छोटी बातों पर चिढता है। यह मंगल कर्क या मीन राशि में हो तब तो स्त्री का स्वभाव बहुत ही तापदायी होता है। बहुत बार अपने मन के विरुद्ध बरताव करना पडता है। अदालती झगडों में पराजय होने से नुकसान होता है। स्थावर जायदाद नष्ट होती है।

अज्ञात—स्वदारपीडा पापर्क्षे पापयुते स्वर्क्षे स्वदारहानिः। शुभयुते जीवति। अपत्यनाशः विदेशवासः। विगततनुः मद्यपानप्रियः रणरुचिः। चोरव्यभिचारमूलेन कलत्रान्तरं दुष्टस्त्रीसंगः। भगचुम्बकः। मन्दयुते दृष्टे शिश्नचुम्बकः। वन्ध्यारजस्वलास्त्रीसम्भोगी। तत्र शत्रुयुते बहुकलत्रनाशः। अहंकारी॥ पापग्रह की राशि में अथवा पापग्रह से युक्त मंगल सप्तम में हो तो पत्नी को शारीरिक पीडा होती है। यह वृश्चिक में हो तो पत्नी की मृत्यु होती है। यह शुभ ग्रह युक्त हो तो पत्नी की मृत्यु नही होती किन्तु सन्तति जीवित नही रहती। विदेश में रहना पडता है। शरीर दुबला होता है। शराबी तथा झगडालू होता है। चोरी या व्यभिचार के लिए स्वस्त्री को छोड कर दुष्ट स्त्रियों का सेवन करता है। यह शनि के साथ अथवा उस के द्वारा दृष्ट हो तो सममैथुन करता है। वंध्या अथवा रजस्वला स्त्री से भी कामसेवन करता है। शत्रुग्रह से युक्त हो तो अनेक पत्नियों की मृत्यु होती है। अहंकारी होता हैं।

मेरे विचार—सभी शास्त्रकारों ने इस मंगल के फल अशुभ कहे हैं—स्त्री का मृत्यु, द्विभार्यायोग, स्त्री का स्वभाव क्रूर तथा झगडालू होना, सुन्दर न होना, शत्रुओं द्वारा पराजय, व्यापार में

अपयश, रोग, दुःख, पाप, दारिद्र्य आदि सभी अशुभ फल हैं। इन का अनुभव वृषभ, कर्क, कन्या, धनु तथा मीन इन्ही राशियों में आता है। अन्य राशियों में शुभ फल मिलते हैं।

मेरा अनुभव—इन स्थान में किसी भी राशि में मंगल हो, उस व्यक्ति को जो देखे वही उद्योग करने की इच्छा होती है किन्तु ठीक तरह से एक भी उद्योग नही होता। १८ वें वर्ष से ३६ वें वर्ष तक कुछ स्थिरता प्राप्त होती है और मंगल के कारकत्व का कोई एक उद्योग करता है। इस योग में पत्नी अच्छी होती है किन्तु झगडालू और पति को वश में रखनेवाली होती है। मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुंभ इन राशियों में द्विभार्यायोग होता है। वृषभ या तुला में यह मंगल हो तो वह अपनी पत्नी पर बहुत प्रेम करता है। कन्या या कुंभ में हो तो विवाह के बाद भाग्योदय हो कर स्थिरता प्राप्त होती है। उद्योग ठीक तरह से चलता है और धन मिलता है। दूसरे विवाह के बाद अधिक उत्कर्ष होता है। कर्क या मकर में हो तो ३६ वें वर्ष तक उद्योग में खूब मेहनत करनी पडती है। फिर जीवनभर किसी बात की कमी नही रहती। अन्य राशियों में अस्थिरता रहती है।

सप्तम के मंगल के व्यवसाय—मेष, सिंह तथा धनु लग्न में-प्रिन्टिंग प्रेस, जिनिंग प्रेस। वृषभ, कन्या तथा मकर लग्न में-बिल्डिंग कॉन्ट्रॅक्टर, इमारती लकडी के विक्रेता, खेतीबाडी। मिथुन, तुला तथा कुम्भ में-साइकिल तथा मोटर के विक्रेता तथा रिपेरर, विमान वाहक। कर्क, वृश्चिक तथा मीन लग्न में-सर्जरी, इंजीनियरिंग। उच्च के मंगल के उदाहरण स्वरूप तीन कुण्डलियां देखिए। एक क्ष—जन्म

ता. १०-५-१८९२, वैशाख शु. १४ शक १८१४ मंगळवार, इष्ट घटी १९-२३, जन्मस्थान अक्षांश २१-३० रेखांश ७९-३०।
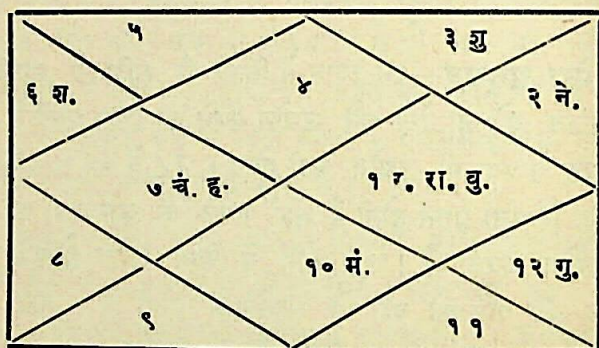
इनका एकही विवाह हुआ। पत्नी कुछ झगडालू थी। सन्तान जीवित रही। व्यवसाय खेती का था।

दूसरे व्यक्ति—जन्म ता. १०-६-१८९२ ज्येष्ठ पौर्णिमा शक १८१४ शुक्रवार, सूर्योदय ९-३०, जन्मस्थान अक्षांश १६ रेखांश ७३-३०।
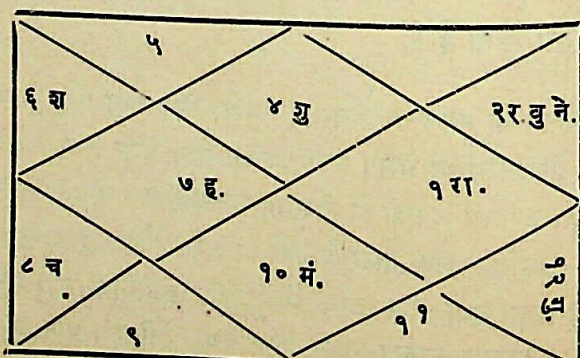
ये एक बडे प्रोफेसर हैं। अच्छी खासी तनखा है। कीर्ति प्राप्त हुई है। दो तीन वार विदेश हो आए हैं। स्थावर जायदाद हुई है। किन्तु विवाह नही हुआ। इनके सप्तम में मंगल वक्री तथा स्तंभित है तथा लग्न में शुक्र वक्री है। इसी प्रकार चंद्र के सप्तम में रवि, बुध हैं तथा शुक्र के केंद्र में तीन पापग्रह हैं। अतः विवाह के बारे में यह फल मिला। हमेशा मुंह टेढा रहता है। चेहरे पर आपरेशन करना पडा। हमेशा रोगी रहते हैं। दुवला पतला शरीर तथा कद मंझला है।

तीसरे व्यक्ति—जन्म ता. १३-७-१८९०, स्थान रत्नागिरी, सुबह ९ (स्थानिक समय) इनका विवाह नही हुआ।
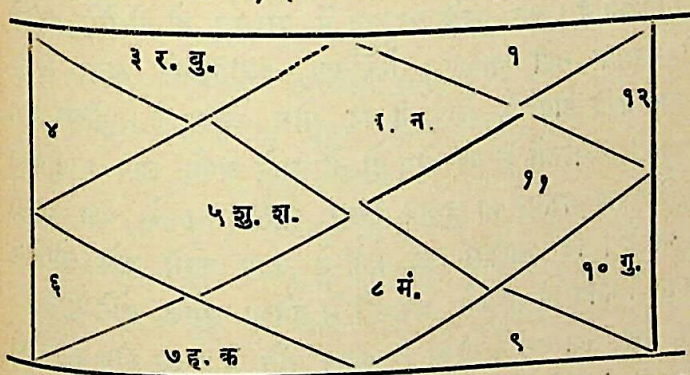
मिथुन, कन्या, धनु, मकर, वृश्चिक तथा सिंह इन राशियों में पति की कुण्डली में मंगल हो तो वह स्त्री सन्तति प्राप्त करने के लिए व्यभिचारी होती है। इसमें पति की सम्मति भी हो सकती है। (इस विषय में चन्द्र की स्थिति का भी ठीक विचार करना चाहिए।) इस मंगल के फलस्वरूप अपनी बुद्धिमत्ता के बारे में बहुत अभिमान होता है। हठी और दुराग्रही स्वभाव होता है। यह स्त्री राशि में हो

तो संकट के समय घबरा जाते हैं। यही पुरुष राशि में हो तो धैर्य और विचार पूर्वक आपत्ति सहन करता है। इन्हें मित्र बहुत कम होते हैं। स्त्रीसुख कम मिलता है। (पूर्व जन्म में किसी अच्छे दंपति में झगडा लगाने का पाप करने के फलस्वरूप इस जन्म में यह दुख मिलता है।) पत्नी के मांबाप में से किसी एक की मृत्यु जलदी ही होती है। पत्नी को भाई कम होते हैं अथवा बिलकुल नही होते। सप्तम में मंगल हो तो डाक्टरों को दुर्घटना में मृत व्यक्तियों की चीरफाड करने का मौका आता है। बडे आपरेशन बहुत करने पडते हैं तथा उनमें यश भी मिलता है। विदेश यात्रा होती है। वकीलों को फौजदारी अदालतों में और खास कर अपीलों में अच्छा यश मिळता है। अतः पहले अदालत में पराजय हो तो ऐसे वकीलों को घबराना नही चाहिए। मेकॅनिक, इंजीनियर, टर्नर, फिटर, ड्राइवर आदि लोगों के लिए भी यह योग अच्छा है। पुलिस तथा अबकारी इन्स्पेक्टरों के यह योग हो तो उनने अपने साथ काम करने के लिए स्त्री अफसर का चुनाव करना चाहिए। इससे यश जलदी मिलता है। बडे आफिसों तथा फर्मों में काम करने वाले लोगों के सप्तम में मंगल हो तो बडे अफसरों से हमेशा झगडे होते रहते हैं। मेष, सिंह, तथा धनु में नौकर ईमानदार होते हैं। इस योग में नौकर होना ही संभव है, मालिक नही होते।

आठवां स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—निधनगेल्पसुतो विकलेक्षण:। पुत्र कम होते हैं तथा आंखें अच्छी नही होती।

पराशर—मृत्यौ धननाशं पराभवं। धनहानि तथा पराभव होता है।

कल्याणवर्मा—व्याधिप्रायोल्पायुः कुशरीरो नीचकर्मकर्ता च। निधनस्थे क्षितितनये भवति पुमान् नित्यसन्तप्तः॥ रोगग्रस्त, अल्पायुषी, शरीर अच्छा न होना, दुराचारी, दुःखित।

वैद्यनाथ--विनीतवेषो धनवान् गणेशो महीसुते रन्ध्रगते तु जातः। कपडे सादे होते हैं, धनवान, लोगों में प्रमुख होता है।

गर्ग—मृत्युं गतो मृत्युकरो महीजः शस्त्रादिलूतादिभिरग्नितो वा। कुष्ठव्रणाशो गृहिणीप्रपीडा नयत्यधो नाशकमानयेच्च॥ शस्त्रों से, कोढ से, शरीर के अवयव सडने से अथवा जलकर मृत्यु होती है। पत्नी को कष्ट होता है। अधोगति होती है।

काश्यप-१ संग्रामाद् २ गोग्रहणात् ३ स्वहस्तात् ४ निजशत्रुतः ५ द्विजपार्श्वात् ६ अश्मपातात् ७ काष्ठात् ८ कूपप्रपाततः॥ ९ भित्तिपातात् १० गुप्तरोगात् ११ विषभक्षणतस्ततः। १२ चौरप्रहरणाद् भौमे मृत्युः स्यान्मृत्युभावगे॥ यह मंगल क्रमशः मेषादि राशियों में हो तो आगे कहे हुए प्रकारों से मृत्यु होता है—१ युद्ध में, २ गायों की चोरी का प्रतिकार करते हुए, ३ अपने ही हाथ से, ४ शत्रुओं से, ५ सांप से, ६ पत्थर गिरने से, ७ लकडी के आघात से, ८ कुंए में गिरने से, ९ दिवाल गिरने से, १० गुप्त रोग से, ११ विष खाने से तथा १२ चोरों के प्रहार से।

बृहद्यवनजातक--वैकल्यं स्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वं रक्तात् पीडा नीचकर्मप्रवृत्तिः। बुद्धेरान्ध्यं सज्जनानां च निन्दा रन्ध्रस्थाने मेदिनीनन्दनश्चेत्॥ आंखें अच्छी नही होतीं, कुरूप होता है। खून के रोग होते हैं! बुरे कामों की ओर प्रवृत्ति होती है। बुद्धि अन्ध होती है। सज्जनों की निन्दा करता है। कुजस्तु विपदाक्षयं। ३२ वें वर्ष विपत्ति आती है।

काशीनाथ—अष्टमे मंगले कुष्ठी स्वल्पायुः शत्रुपीडितः । अल्प-द्रव्यः सरोगश्च निर्गुणोऽपि हि जायते ॥ कोढ होता है । अल्पायुषी, शत्रुओं द्वारा पीडित, निर्धन, रोगी तथा गुणरहित होता है ।

जयदेव—रुधिरार्तो गतनिश्चयः कुधीर्विदयो निन्द्यतमः कुजेष्टमे खून के रोग (संग्रहणी आदि) होते हैं । बुद्धि के द्वारा निश्चय नही कर सकता । बुरे विचारों का, निर्दय तथा बहुत ही निन्दनीय होता है ।

जागेश्वर—शरीरं कृशं किं शुभं तस्य कोशे परं स्वस्य वर्गो भवेच्छत्रुतुल्यः । प्रयासे कृते नाशमायाति कामो यदा मृत्युगो भूमिजो वै विलग्नः ॥ शरीर दुबला होता है । धन नही होता । अपने ही लोग शत्रु के समान होते हैं । बहुत प्रयास करने पर भी इच्छा पूरी नही होती । अविवाहित रहना पडता है ।

मन्त्रेश्वर—कुतनुरधनोल्पायुः छिद्रे कुजे जननिन्दितः । बुरे शरीर का, निर्धन, अल्पायुषी तथा निन्दनीय होता है ।

पुंजराज तथा रामदयाल - इन ने इस स्थान का फल ठीक तरह नही कहा है ।

आर्यग्रन्थ—प्रलयभुवनसंस्थे मंगले क्षीणनीचे व्रजति निधनभावं नीरमध्ये मनुष्यः । धनकनकचरार्कः सर्वदा चैव भोगी करपदगसुनीलो मृत्युलोकं प्रयाति ॥ सोनाचांदी आदि धन प्राप्त होता है । हाथ पांव काले होकर (कोढ से) मृत्यु होती है । यह मंगल क्षीण अथवा नीच राशि में हो तो पानी में डूबने से मृत्यु होती है ।

वसिष्ठ—सर्वे ग्रहा दिनकरप्रमुखा नितान्तं मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिं । शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रभागं सौख्यैर्विहीनमति-रोगगणैरुपेतम् ॥ बुद्धि दुष्ट होती है । शस्त्रों के प्रहार से अवयवों को पीडा होती है । सुख प्राप्त नही होता । बहुत रोग होते है ।

नारायणभट्ट—शुभास्तस्य किं खेचराः कुर्युरन्ये विधानेऽपि चेदष्टमे भूमिसूनुः । सखा किं न शत्रूयते सत्कृतोपि प्रयत्ने कृते भूयते चोपसर्गैः ॥ मंगल अष्टम स्थान में हो तो अन्य शुभ ग्रहों का कुछ भी उपयोग नही होता । मित्र भी शत्रु जैसा बरताव करते हैं । प्रयत्न करने पर भी इसे आपत्ति ही प्राप्त होती है ।

गोपाल रत्नाकर—पुत्र थोडे होते हैं । नेत्ररोग होता है । आयु मध्यम होती है । पिता और दादा को कष्ट होते हैं । मामा का मृत्यु होता है । वेश्यागमन करता है ।

घोलप—अपूज्य, निन्दनीय, उन्मत्त, वातपीडा से युक्त, मूर्ख, डरपोक, दुराचारी, स्त्रीपुत्रों का भरणपोषण करने में असमर्थ, पापी, दुबला, खर्चीला, रक्तपित्त रोगों से युक्त, नेत्ररोग से युक्त, शत्रु से भयभीत ऐसा यह व्यक्ति होता है ।

हिल्लाजातक--पंचविंशे तथा वर्षे मृत्युकर्ताष्टमः कुजः । २५ वें वर्ष मृत्यु होती ।

यवनमत--इसे गुह्यरोग होते हैं । स्त्री से दुःख प्राप्त होता है । चिन्ताग्रस्त होता है । अच्छा परीक्षक होता है । शस्त्रों के प्रहार से जखमी होता है । यह मंगल नीच का हो तो रक्तपित्त रोग होता है ।

पाश्चात्यमत—इसे विवाह से लाभ नही होता । रवि और चंद्र से अशुभ योग हो तो अकस्मात मृत्यु होता है । यह मंगल अकेला हो तो मृत्यु जलदी नही होता । बन्दूक की बारूद से मृत्यु होता है । यह जलराशि में हो तो पानी में डूबकर, अग्नि राशि में हो तो आग में जलकर तथा वायु राशि में हो तो मानसिक व्यथा से मृत्यु होता है । पृथ्वीतत्त्व में यह मंगल हो तो शुभ फल मिलता है ।

अज्ञात--नेत्ररोगी। मध्यमायुः। पित्ररिष्टं। मूत्रकृच्छ्ररोगः। अल्पपुत्रवान्। वातशूलादिरोगः। दारसुखयुतः। करवालात् मृत्युः। शुभयुते देहारोग्यवान्। दीर्घायुः। मनुष्यादिवृद्धिः। पापक्षेत्रे पापयुते इक्षणवशात् वातक्षयादिरोगः मूत्रकृच्छ्राधिक्यं वा। भावाधिपे बलयुते पूर्णायुः। आंखों के रोग, मध्यम आयु, पिता का मृत्यु, मूत्रकृच्छ रोग, पुत्र थोडे होना, वातशूल इत्यादि रोग, स्त्रीसौख्य, तलवार से मृत्यु ये मंगल के फल हैं। यह शुभग्रहों से युक्त हो तो नीरोग शरीर, दीर्घ आयु तथा घर में समृद्धि होती है। पापग्रह की राशि में अथवा पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो वातक्षयादिक रोग होते हैं या मूत्रकृच्छ्र से बहुत पीडा होती है। अष्टम स्थान का अधिपति बलवान हो तो पूर्ण आयु मिलती है।

मेरे विचार--इस स्थान के फल सभी शास्त्रकारों ने अशुभ कहे हैं—सिर्फ वैद्यनाथ का अपवाद है। ये अशुभ फल पुरुष राशियों के हैं। वैद्यनाथ के फल स्त्री राशि के हैं। काश्यप ने बारह प्रकार से मृत्यु का वर्णन किया है उस में विशेष तथ्य प्रतीत नही होता। मृत्यु के विषय में हमारे शनि विचार में विशेष विवेचन किया है।

मेरा अनुभव—यह मंगल पुरुष राशि में हो तो घर के रहस्य स्त्री या नौकरो द्वारा बाहर के लोगों को मालूम हो जाते हैं। विवाह के बाद ससुर दरिद्री होता है और स्त्री खर्चीली होती है। यह व्यभिचारी हो सकता है। चेचक आदि के दाग मुंह पर रहते हैं। कई शास्त्रकारों ने यहां सन्तति का भी फल बतलाया है। शायद यह पितृस्थान से नौवां और मातृस्थान से पांचवां स्थान होने से ऐसा फल बतलाया होगा। वैसे अष्टमस्थान सन्ततिस्थान नही है। यह मंगल पुरुष राशि में हो तो संतति बहुत कम होती है। स्त्री राशि में कर्क,

वृश्चिक तथा मीन में अधिक सन्तति होती है, वृषभ और कन्या में कम होती है, मकर में बिलकुल नही होती। स्त्री राशि में घर के रहस्य घर में रहते हैं। यह स्थान पत्नी का धनस्थान है अतः वह दरिद्री होती है। इससे पति को बहुत कष्ट होता है। स्त्री राशि के मंगल से लाभ होता है। पत्नी बोलने में चतुर तथा प्रेम करनेवाली होती है किन्तु स्त्रीसुख अधिक काल नही मिलता। इस योग में अफसर बहुत रिश्वत लेने पर भी पकडे नही जाते। इस व्यक्ति की पूर्व वय में ३० वें वर्ष तक बहुत खाने की आदत होती है। इससे उत्तर आयु में अपचन के कारण मलेरिया, एनिमिया, एनेस्थेशिया, अर्धांगवायु, ब्लड प्रेशर आदि रोग होते हैं। इसका मृत्यु शान्त रीति से होता है। मृत्यु के समय कष्ट नही होता। कर्क, वृश्चिक, धनु या मीन लग्न हो और इन राशियों में अष्टम का मंगल हो तो हठयोग का अभ्यास पूरा होता है। मेष, सिंह, धनु लग्न हो तो राजनीतिज्ञ होता है। अल्पायु होना यह फल ठीक नही है। रवि, चंद्र, शनि के सम्बन्ध से दूषित हों तो ही यह फल मिलता है। अष्टम का मंगल स्त्री राशि में हो तो दोपहर ४ बजे से ही स्त्रीभोग की उत्सुकता उत्पन्न होती है।

नौवां स्थान

आचार्य – धर्मेऽधवान्। पापी होता है।

गुणाकर—धर्मेर्थसंपत्तिवान्। धनवान होता है।

कल्याणवर्मा—अकुशलकर्मा द्वेष्यः प्राणिवधपरो भवेन्नवमसंस्थे। धर्मरहितोऽतिपापो नरेन्द्रकृतगौरवो रुधिरे॥ कुशलता से कार्य नही करता। लोग इसका द्वेष करते हैं। हिंसक, धर्महीन, बहुत पापी किन्तु राजमान्य होता है।

पराशर—पराभवमनर्थं च धर्मे पापरुचिक्रिया। पराभव, अनर्थ तथा पाप कर्म में रुचि होती है।

वैद्यनाथ—भूसूनौ यदि पित्रनिष्टसहितः ख्यातः शुभस्थानगे। पिता का अनिष्ट होता है। कीर्ति मिलती है।

गर्ग—कुजे रक्तपटानां हि भवेत् पाशुपती वृत्तिः। भाग्यहीनश्च सततं नरः पुण्यगृहं गते॥ यह बौद्ध हो तो भी शैवों के समान प्राणिवध में रुचि रखता है। अभागा होता है।

आर्यग्रन्थ—नवमभवनसंस्थे क्षोणिपुत्रेऽतिरोगी नयनकरशरीरैः पिंगलः सर्वदैव। बहुजनपरिपूर्णो भाग्यहीनः कुचैलो विकलजनसुवेशी शीलविद्यानुरक्तः॥ बहुत रोगी, आंखें हाथ तथा शरीर लाल-पीले वर्ण के होते हैं। अनेक लोगों से घिरा हुआ, भाग्यहीन होता है। वस्त्र अच्छे नही होते। शीलवान तथा विद्यानुरागी होता है।

जयदेव—सीमायुतो भूपतिमानयुक्तः सस्वो विधर्मो नवमे धराजे॥ मर्यादित शक्ति का, राजमान्य, धनवान किन्तु धर्महीन होता है।

जागेश्वर—सभौमे त्रिषाद्यग्निपीडा॥ कुशीलः कुलीलः परं भाग्यहीनः पदे रक्तरोगी कृशः क्रूरकर्मा। प्रतापी तपेज्जन्मकाले यदि स्यान्महीजो यदा पुण्यभावं प्रयातः॥ विष तथा आग से पीडा होती है। व्यभिचारी, दुराचारी, भाग्यहीन, पांव में रक्तरोग से युक्त, दुबला, क्रूर, तथा पराक्रमी होता है।

बृहद्यवनजातक—हिंसाविधाने मनसः प्रवृत्तिर्धरापतेगौरवतोऽपि लब्धिः। क्षीणं च पुण्यं द्रविणं नराणां पुण्यस्थितः क्षोणिसुतः करोति॥ हिंसक कामों की ओर रुचि होती है। राजमान्य, पुण्यहीन और धनहीन होता है। अष्टाविंशतिभूमिनन्दनसमालाभोदये संस्मृतम्। २८ वें वर्ष भाग्योदय होता है।

काशीनाथ—धर्मस्थे धरणीपुत्रे कुकर्मा गतपौरुषः। नीचानुरागी क्रूरश्च सकष्टश्च प्रजायते॥ दुराचारी, पौरुषहीन, नीच लोगों के साथ रहनेवाला, क्रूर तथा कष्टी होता है।

मन्त्रेश्वर—नृपसुहृदपि द्वेष्योऽताततः शुभे जनघातकः। राजा का मित्र किन्तु लोग इसका द्वेष करतें है। पिता का सुख नही मिलता। लोगों का घात करता है।

पुंजराज—आरौ भ्रातृनाशप्रदौ स्तः। द्वाभ्यां हीनः॥ दो भाइयों की मृत्यु होती है।

रामदयाल—आरेग्न्यादिविषार्दितः ससहजः। विष तथा अग्नि से पीडा होती है। बन्धुओं से युक्त होता है।

वसिष्ठ—धर्मस्थिता—भूमिपुत्राः कुर्वन्ति धर्मरहितं विमतिं कुशीलं। धर्महीन, दुर्बुद्धि और दुराचारी होता है।

गोपाल रत्नाकर—पिता का सुख नष्ट होता है। नौकरी करनेवाला, क्रूर, व्यापार के लिए नाव में घूमनेवाला होता है।

घोलप—अधिकारी, कवि, शत्रुहीन होता है।

हिल्लाजातक—भूसुतो नवमगश्चतुर्दशे वत्सरे दिशति तातनाशनम्॥ चौदहवें वर्ष पिता का मृत्यु होता है।

यवनमत—राजमान्य, विख्यात, परस्त्रियों का उपभोग करने-वाला, भाग्यवान तथा अपने गांव में सुखी होता है।

पाश्चात्य मत—कठोर स्वभाव का, ईर्ष्यालु, झूठ बोलने वाला, प्रवासी, शंकाशील, दुराग्रही होता है। पानी के सम्बधितों से हानि होती है। धर्मपर थोडी श्रद्धा होती है। अध्यात्म के बारे में दुराग्रही विचार होते हैं। अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो उद्धत और दुरभिमानी होता है। मन पर संयम नही होता, चाहे जैसा बरताव करता है

अग्नि राशि में हो तो उद्धत होता है। पृथ्वी तथा जलतत्त्व की राशियों में हो तो कुछ अच्छा स्वभाव होता है। वायुराशि में हो तो कानून और नीतितत्वों का उल्लंघन सहज ही करता है।

अज्ञान—पित्ररिष्टं। भाग्यहीनः। उच्चे स्वक्षेत्रे गुरुदारगः देशान्तरे भाग्ययोगः। शुभे शुभयुते शुभक्षेत्रे पुण्यशाली धराधिपः। पिता का मृत्यु होता है। भाग्यहीन होता है। यह उच्च अथवा स्वगृह में हो तो गुरुपत्नी से व्यभिचार करता है। विदेश में इस का भाग्योदय होता है। यह शुभग्रहों से युक्त अथवा उन की राशियों में हो तो पुण्यवान होता है। यह राजयोग होता है। विदेश में भाग्योदय के उदाहरणस्वरूप एक कुण्डली देखिए-एक क्ष-जन्म ता० १२-६-१८९३ सुबह।
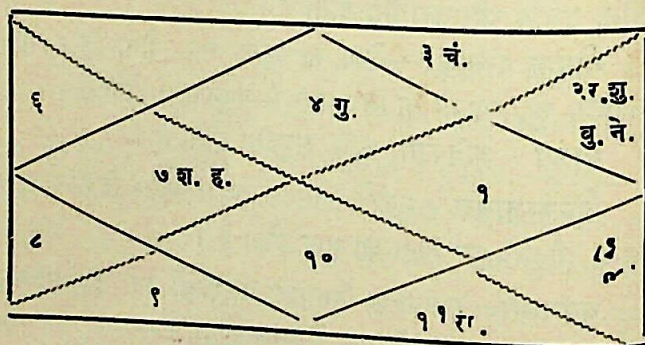
इस व्यक्ति ने जन्मभूमि छोड कर उत्तर में दूर के प्रदेश में व्यवहार किया तब भाग्योदय हुआ।

मेरे विचार—इस स्थान के फल आचार्यों ने मिश्र स्वरूप के कहे हैं। आचार्य, कल्याणवर्मा, पराशर, आर्यग्रंथकार, जागेश्वर, बृहद्‌यवनजातक, काशीनाथ, वसिष्ठ तथा गोपाल रत्नाकर ने पापी, क्रूर,

दुराचारी, हिंसक, व्यभिचारी होना ऐसा फल कहा। यह मकर और मीन राशि के लिए ही ठीक है। राजमान्य, धनवान, गांव में प्रसिद्ध होना ये शुभ फल मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि में मिलते हैं। भाई का मृत्यु यह पुरुष राशि का फल है। विद्यावान किंतु धर्महीन यह विशेषता मेष, सिंह तथा मकर को छोड अन्य राशियों में मिलती है। कानून और नीतिनियमों का उल्लंघन करना यह फल मिथुन, तुला और कुम्भ में ठीक प्रतीत होता है। आंखें नष्ट होना, गुप्त रोग होना, मुंह टेढामेढा होना, त्वचारोग होना, नपुंसकता निर्माण होना, हाथ पांव टूटना आदि शारीरिक अशुभ फल इस स्थान में मिलते हैं। दूसरों का नुकसान कर के भी ये लोग अपना फायदा करना चाहते हैं। ये पीछे निन्दा करने में चतुर होते हैं किन्तु आगे आकर कुछ कहने का धैर्य इन में नही होता। ये क्रोधी होते हैं किन्तु वैसा लोगों को बतलाते नही। ये राजनीतिक मनोवृत्ति के-षड्यंत्र करने में कुशल होते हैं। किसी को ऊंचा नीचा दिखाना इन्हें वहुत पसन्द होता है। अपमान होने पर उस वक्त तो हंस कर बात टाल देते हैं किन्तु मन में दंश रख कर प्रतिशोध लेते हैं। इन्हें अपने कार्य में यश भी मिलता है। इन पर विश्वास रखना उचित नही। ये खुद को अति विद्वान समझते हैं। गुरु को भी अपना शिष्य बतलाने में नही हिचकिचाते। दुरभिमानी, दुराग्रही और गायें हांकनेवाले होते हैं। विदेशयात्रा हो सकती है। सन्तान भाग्यवान नही होती। मांबाप को तकलीफ देनेवाले होते हैं। कभी मारपीट करते हैं अथवा उन से विभक्त होते हैं। मेष, सिंह, धनु, कर्क तथा वृश्चिक राशियों में अधिकारी, फुर्तीले, उदार, प्रेमी, मिलनसार होते हैं। कुंभ, वृश्चिक और मीन में कुछ स्वार्थी होते हैं। कर्क में फल अच्छा मिलता है।

नवम मंगल के उदाहरण स्वरूप दो कुण्डलियां देखिए–

१ श्रीमान काशीनाथ गालवनकर–जन्म ता० २९·४-१८९८, इष्ट घटिका १९--२९, स्थान वसई ।
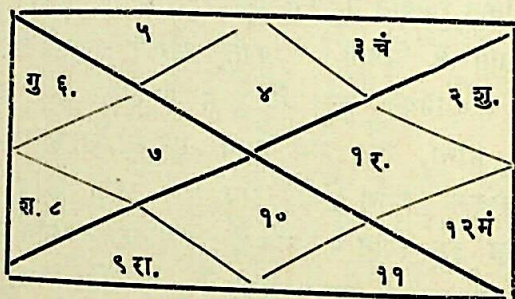
२ इन्हीं के छोटे बंधु डाक्टर सदानंद गालवनकर–जन्म ता. ३-११·१९०० इष्ट घटिका ०–४ ।
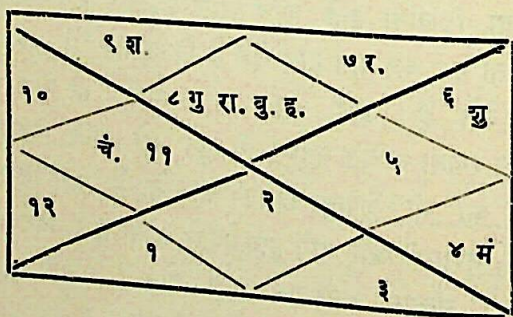
ये युनिवर्सिटी में सीनेटर रह चुके हैं। इन दोनों की कुण्डली में नवम में मंगल है। इन की चार बहनों का मृत्यु हुआ। तथा दोनों के दो वार विवाह हुए।

मेरा अनुभव—इस स्थान में मिथुन, तुला, कुंभ, वृषभ, कन्या तथा मकर में मंगल हो तो मां का सुख कम मिलता है। इस योग में पत्नी विजातीय होती है। अथवा उस में पति से बहुत भिन्नता और नवीनता होती है। मंगल प्रधान युवक नवमतवादी और सुधारक प्रवृत्ति का होता है। विवाह संस्था पर विश्वास न होना तथा चाहे जिस स्त्री से सम्बन्ध रखना ऐसी इस की प्रवृत्ति होती है। विवाह न होना भी संभवनीय है। किन्तु विवाह के बाद पत्नी से प्रेमपूर्वक रहते हैं। द्विभार्या योग भी हो सकता है। ऐसे समय पत्नी की मृत्यु होती है कि बच्चों को देखभाल करने के लिए तथा घरगृहस्थी के लिए उस की बहुत ही जरूरत होती है। ये लोग व्यभिचारी हो सकते हैं। प्रसिद्ध होते हैं किन्तु भाग्यवान नही होते। डाक्टरों के लिए यह योग अच्छा है। कीर्ति मिलती है तथा नैतिक आचरण भी अच्छा रहता है। इन्हें आयुभर किसी चीज की कमी नही रहती। वकीलों के लिए यह योग मामूली होता है। सिर्फ फौजदारी मामलों में कुछ सफलता मिलती है। इंजीनियर, टर्नर, फिटर, बढई, सुनार, लुहार आदि लोगों के लिए यह अच्छा योग है। इन के काम की प्रशंसा होती है और नौकरी में उन्नति होती है। पुलिस और अबकारी इन्स्पेक्टरों को अफसरों से लड झगड कर उन्नति करनी पडती है। इन के विभाग के कर्मचारी ही इन के विरुद्ध रिपोर्ट करते रहते हैं। इस स्थान का मंगल स्त्री राशि में हो तो भाइयों को मारक नही होता, बहनों को मारक होता है। पुरुष राशि में हो बहनों को तारक और भाइयों को मारक होता है। इन का भाग्योदय २७-२८ वें वर्ष से होता है। नीचे के वर्गों में १८ वें वर्ष से भी होता है। ये लोग म्युनिसिपालिटी, लोकल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, असेंब्ली आदि में चुन कर आते हैं।

लोगों पर प्रभाव पडता है। लोग विरोध में हों तो भी इन के विरुद्ध मुंहपर कुछ नही बोल पाते। कर्क, वृश्चिक, मकर, मीन में यह मंगल हो तो विवाह के बाद स्थिरता प्राप्त हो कर भाग्योदय होता है। डाक्टर, किसान या रसायनशास्त्रज्ञ होते हैं। कर्क में स्वभाव बहुत विचित्र होता है। वृश्चिक में धूर्त होता है। अपने फायदे के लिए दूसरों का नुकसान भी करते हैं। मकर और मीन में स्वभाव नीच होता है। झूठ बोलने वाले, निर्लज्ज और अपनी ही डींग हांकने वाले होते हैं।

दसवां स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—सुखशौर्यभाक्। सुखी तथा शूर होता है।

कल्याणवर्मा—कर्मोद्युक्तो दशमे शूरोऽधृष्यः प्रधानजनसेवी। सुतसौख्ययुतो रुधिरे प्रतापबहुलः पुमान् भवति॥ क्रियाशील, पराक्रमी, अजेय, महान पुरुषों की सेवा करनेवाला, पुत्रसुख से युक्त तथा बहुत प्रतापी होता है।

वैद्यनाथ—मेषूरणस्थेऽवनिजे तु जाताः प्रतापवित्तप्रबलप्रसिद्धाः। प्रतापी, धनवान, बलवान तथा प्रसिद्ध होता है। माने कुलीरभवने च सुखं ददाति। यह कर्क राशि में हो तो सुख देता है।

गर्ग—वैद्यनाथ के समान मत है।

जयदेव-तोषावतंसोपकृतार्थयुक्तः। संतुष्ट, भूषणभूत, परोपकारी तथा धनवान होता है।

जागेश्वर - यदा लग्नचंद्रात् खमध्ये महीजस्तदा साहसं क्रूरभिल्लस्य वृत्तिः। भवेद्दूरवासः कदाचिन्नराणां तथा दुष्टसंगः परं नीचसंगः॥

दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रे स्थितस्तदा। म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥ लग्न से अथवा चंद्र से दसवें स्थान में मंगल हो तो साहसी, भील के समान क्रूर प्रवृत्ति का, जन्मभूमि से दूर रहनेवाला, दुष्ट तथा नीचों के साथ रहनेवाला होता है। यह शत्रु ग्रह की राशि में हो तो पिता का मृत्यु होता है।

काशीनाथ—शुभकर्मा सुपुत्री गर्विष्ठोपि भवेन्नरः। अच्छे काम करनेवाला किन्तु गर्विष्ठ होता है। पुत्र अच्छे होते हैं।

बृहद्यवनजातक-विश्वंभराप्राप्तिमथो। क्षितिजो भवर्षे शस्त्राद् भयम्। जमीन मिलती है। २७ वें वर्ष शस्त्रों से भय होता है। इस के अन्य वर्णन आचार्य, कल्याणवर्मा, वैद्यनाथ, गर्ग और जयदेव के समान हैं।

मन्त्रेश्वर—उपर्युक्त शास्त्रकारों के समान ही मत है।

पुंजराज तथा रामदयाल—इन के मत जागेश्वर के समान हैं। विषयासक्त अधिक होना इतना फल अधिक कहा है।

आर्यग्रन्थ-दशमगतमहीजे दान्तिकः कोशहीनो निजकुल-जयकारी कामिनीचित्तहारी। जरठसमशरीरो भूमिजीवोपकोपी द्विज-गुरुजनभक्तो नातिनीचो न व्हस्वः ॥ संयमी, निर्धन, कुल का उद्धार करनेवाला, स्त्रियों को प्रिय, वृद्ध के समान शरीर से युक्त, जमीन पर उपजीविका करनेवाला, ब्राह्मणों का तथा वडेबूढों का भक्त, एवं मंझले कद का होता है।

पराशर—धनव्ययं च दशमे धनलाभं कुकर्म च। धन प्राप्त होता है किन्तु खर्च हो जाता है। बुरे कर्म करता है।

वसिष्ठ—भौमः किल कर्मसंस्थो कुर्यान्नरं बहुकुकर्मरतं कुपुत्रम्। दुराचारी होता है। इस के पुत्र भी अच्छे नही होते।

गोपाल रत्नाकर—कुल का उद्धार करनेवाला, नगर का प्रमुख, अपना कमाया हुआ धन उपभोगनेवाला, किसी देवालय का अधिकारी होता है।

घोलप—वाहनसुख मिलता है। घर अच्छा तथा बुद्धि तीक्ष्ण होती है। शत्रुहीन, काव्य तथा कलाओं में कुशल होता है।

हिल्लाजातक—वत्सरे षडधिके विंशतिभिः शस्त्रभीतिमतुलां दशमस्थः। २६ वें वर्ष शस्त्रों से भय होता है।

महेश – वृहद्यवनजातक के समान मत है।

यवनमत धनवान, गुणवान, पूज्य, दयालु और उदार होता है। अच्छा धनवान जमीनदार हो सकता है।

पाश्चात्य मत—धैर्यशाली, अभिमानी, उतावले स्वभाव का, लोभी होता है। किसी बॅन्क या संस्था का चालक हो सकता है। व्यापार में प्रवीण होता है। किन्तु कभी फायदा तो कभी नुकसान भी होता है। वृत्ति पाशवी होती है। टीकाकार होता है। यह मंगल शुभ सम्बन्ध में हो तो धैर्यशाली और वहादुर होता है। सुख और दुःख दोनों मिलते हैं—स्थिरता नहीं होती।

अज्ञात—जनवल्लभः। भावाधिपे बलयुते भ्राता दीर्घायुः। विशेषभाग्यवान्। ध्यानशीलवान्। गुरुभक्तियुक्तः। पापयुते कर्मविघ्नवान्। शुभयुते शुभक्षेत्रे कर्मसिद्धिः। कीर्तिप्रतिष्ठावान्। अष्टादशे वर्षे द्रव्यार्जनसमर्थः। व्यापारात् भूमिपालतः प्रसादात् साहसात् वन्हिशस्त्रात्। सर्वसमर्थः। तेजवान्। आरोग्यं। दृढगात्रः। चौरबुद्धिः। दुष्कृतिः। भाग्येशकर्मेशयुते महाराजयौवराज्यपट्टाभिषेकवान्। गुरुयुते गजान्तैश्वर्यवान्। भूसमृद्धिमान्। लोकप्रिय होता है। दशम स्थान का स्वामी बलवान हो तो भाई दीर्घायु होता है। विशेष भाग्यवान होता

है। ध्यान धारणा करता है तथा शीलवान, गुरु का भक्त होता है। पापग्रह के साथ हो तो किसी भी कार्य में विघ्न उपस्थित करता है। शुभ ग्रह के साथ या उस की राशि में हो तो काम सफल होते हैं, कीर्ति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। १८ वें वर्ष व्यापार में, या राजा की कृपा से अथवा साहस से धन प्राप्त करता है। सामर्थ्यवान, तेजस्वी, नीरोग, मजबूत शरीर का होता है। बुद्धि चोर जैसी और आचरण बुरा होता है। भाग्य और कर्म स्थान के अधिपति भी मंगल के साथ दशम में ही हों तो वह राजयोग होता है। गुरु के साथ हो तो गजान्त ऐश्वर्य प्राप्त होता है। जमीन बहुत मिलती है।

मेरे विचार—इस स्थान में जागेश्वर, पुंजराज, रामदयाल, पराशर तथा आर्यग्रंथकार ने कुछ शुभ और कुछ अशुभ ऐसे मिश्र फल कहे हैं। वसिष्ठ, हिल्लाजातक तथा पाश्चात्य ग्रंथकार ने अशुभ फल कहे है। अन्य शास्त्रकारों ने शुभ फल कहे हैं। इन में जो अशुभ फल हैं उन का अनुभव वृषभ, मिथुन, तुला तथा कुम्भ में आता है। शुभ फलों का अनुभव मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में आता है। आर्यग्रंथकार ने कामिनीचित्तहारी तथा जरठसमशरीर ये दो परस्परविरुद्ध फल बतलाए हैं। इन की संगति लगाना सम्भव नही। स्त्रियां एक तो सुंदरता पर मोहित होती हैं अथवा संपत्ति या विद्वत्ता पर भी मोहित होती हैं।

मेरा अनुभव—इस स्थान में मंगल हो तो माता या पिता की मृत्यु बचपन में ही होती है। व्यक्ति दत्तक लिया जा सकता है। यह योग वृषभ, कन्या और मकर में होता है। पुत्रों का मृत्यु होता है। समाज में कीर्ति प्राप्त नही होती। नवमेश और दशमेश के साथ यह मंगल हो तो राजयोग होता है। गुरु के साथ हो तो

गजान्त संपत्ति होती है ऐसा कहा है किन्तु इस के बिलकुल विपरीत एक कुण्डली देखिए—

एक क्ष जन्म वैशाख शु. ८ शक १८१७ गुरुवार इष्ट घटिका २३-३० । लग्न ९-२-३९-३० ।
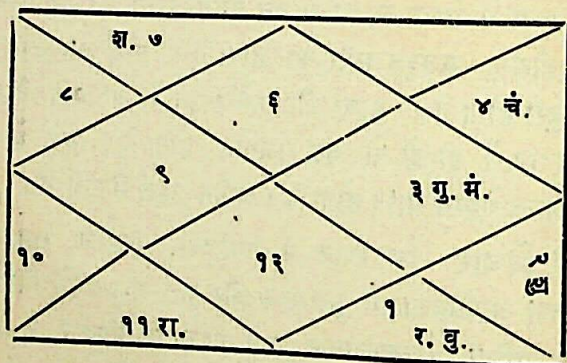
यह व्यक्ति आयु भर ३० रुपया माहवार पर नौकरी करता रहा। गजान्त संपत्ति का योग कर्क, सिंह या मीन लग्न हो और दशम में गुरु-मंगल हों तो ही होता है। लग्न में स्त्रीराशि हो तो अपने प्रयत्न से बडे कष्ट के बाद उन्नति होती है। पुरुष राशि लग्न में हो तो प्रयत्न न करते हुए भी उन्नति होकर कीर्ति प्राप्त होती है। कुछ शास्त्रकारों ने इस स्थान में पूर्वजन्मों के कर्मों का विचार करना चाहिए ऐसा कहा है। दशम में पापग्रह हों तो पूर्वजन्म के पाप के फलस्वरूप इस जन्म में दुख भोगना पडता है। संतति होती है तो संपत्ति नही होती और संपत्ति हो तो संतति नही होती या मान-सन्मान प्राप्त नही होता। इस स्थान के मंगल से वंशक्षय होता है ऐसा भी अनुभव मिलता है। इसका फल कई अंशों में लग्न के मंगल के समान होता है। बहुत धंदे करने की रुचि होती है किन्तु ठीक

तरह से एक भी नही होता। २६ वें वर्ष से कुछ भाग्योदय होता है और ३६ वें वर्ष से स्थिरता प्राप्त होती है। इन लोगों को मृत्यु के पूर्व अपना घर देखने की बहुत इच्छा होती है।

दशम के मंगल के उदाहरण स्वरूप महाराष्ट्र के विख्यात गायक श्री. बालगन्धर्व की कुण्डली देखिए—
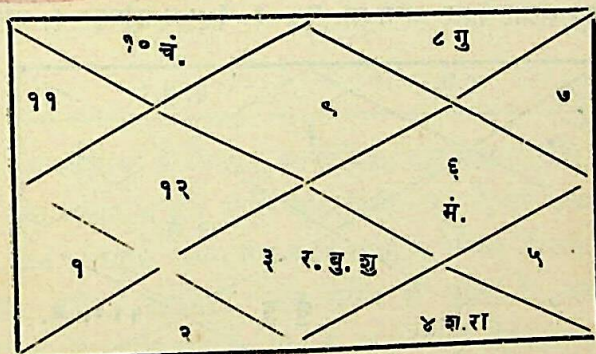
अमरावती के साप्ताहिक पत्र उदय के संपादक श्री. वामणगांवकर की कुण्डली भी ऐसी ही है। दोनों को पुत्रसन्तति नही। सिर्फ लडकियां हैं। किन्तु श्री. बालगन्धर्व का एकही विवाह हुआ और श्री. वामणगांवकर के दो विवाह हुए।

वैद्यनाथ ने कहा है कि दशम में कर्क राशि का मंगल बहुत सुख देता है। किन्तु ऐसे समय लग्न में तुला राशि होती है और लघुपाराशरी के अनुसार लग्न के लिए 'जीवार्कमहिजाः पापाः'— गुरु, रवि और मंगल ये ग्रह अशुभ हैं। इन दो मतों में विरोध है किन्तु वह दूर किया जा सकता है। लघुपाराशरी का मत लग्नकुण्डली के विचार के लिए ठीक है। इस मंगल के फलस्वरूप बचपन में माता या पिता का मृत्यु होकर पूर्वार्जित जायदाद नष्ट होती है।

वैद्यनाथ का मत महादशा के विचार के लिए ठीक है। इस मंगल की महादशा में स्थिरता प्राप्त होती है, मानसन्मान होता है, जायदाद मिलती है, कीर्ति प्राप्त होती है। महत्त्वाकांक्षा बहुत होती है। प्रयत्नपूर्वक उन्नति करते हैं। सब लोगों के साथ झगड कर प्रगति करने की प्रवृत्ति होती है। इसके उदाहरणस्वरूप एक कुण्डली देखिए—जर्मनी के भूतपूर्व सम्राट कैसर जन्म ता. २७-१-१८५९ दोपहर ३, बर्लिन।
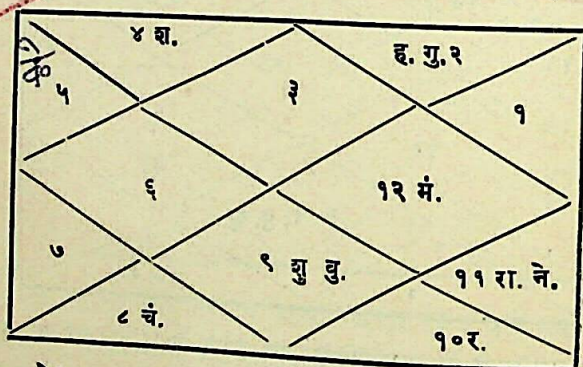
इनने सन १९१४ में पहला विश्वयुद्ध शुरू किया। इसमें दशम का मंगल प्रेरक रहा। किन्तु षष्ठ के चंद्र से इस युद्ध में इनका पराजय हुआ। रवि शनि प्रतियुति से इन्हें राज्यत्याग करना पडा।

दशम का मंगल कर्क, वृश्चिक, मीन तथा मेष, सिंह, धनु में साधारण अच्छे फल देता है। वृषभ, कन्या, मकर तथा मिथुन, तुला, कुंभ में साधारण अशुभ फल देता है। विदर्भ कांग्रेस के भूतपूर्व नेता वीर वामनराव जोशी की कुण्डली में दशम में मकर का मंगल था। इन्हें कीर्ति बहुत मिली किन्तु पुत्रसन्तति नही हुई। एक और उदाहरण देखिए। आचार्य अत्रे—ता. १३-८-१८९८ सुबह ७-३० स्थान सासवड (पूना के पास)।
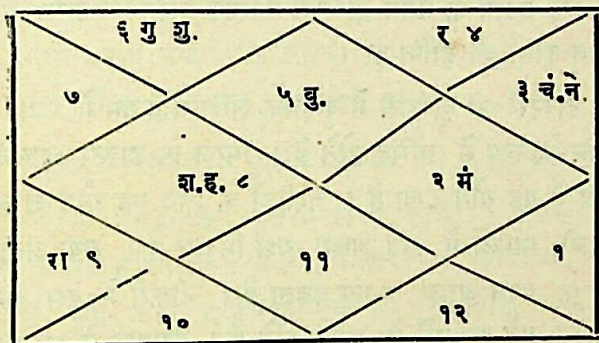
ये महाराष्ट्र के विख्यात साहित्यिक, नाटककार, कवि, आलोचक तथा सम्पादक हैं। कीर्ति बहुत मिली। २६ वें वर्ष से भाग्योदय शुरू हुआ। चतुर्थ, पंचम तथा व्यय स्थान में पापग्रह हैं अतः विदेश यात्राएं हुईं। सप्तमेश शनि हर्षल से युक्त है अतः स्त्री विजातीय है। शुक्र गुरु के साथ है अतः पत्नी सुशिक्षित, शान्त संसारदक्ष तथा स्नेहल है। (सिंह लग्न के व्यक्ति प्रायः पत्नी के विषय में भाग्यवान होते हैं।)

महाराष्ट्र के एक और कवि तथा नाटककार श्री स. अ. शुक्ल जन्म ता० २६-९-१९०२ सुबह १० स्थान कऱ्हाड।
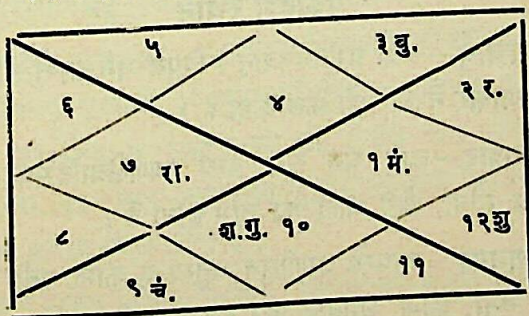
इन्हें दशम के मंगल के फल स्वरूप लेखन व्यवसाय में कीर्ति तथा धन दोनों की प्राप्ति हुई।

डाक्टरों की कुण्डली में वृश्चिक राशि में दशम में मंगल हो तो वे सर्जन के रूप में प्रसिद्ध होते हैं। मिरज के डाक्टर वालनेस की कुण्डली में यह योग देखा है। वकीलों के लिए यह योग अच्छा है। फौजदारी मामलों में इन्हें अच्छा यश मिलता है। तथा अदालत में अपील के वक्त अच्छा प्रभाव पडता है। नौकरी में इस मंगल के फलस्वरूप वडे अफसरों से झगडे होते हैं। वैद्यनाथ ने इस मंगल के वारे में एक और श्लोक कहा है—माने वा यदि पंचमे कुजरविच्छाया-कुमारेन्द्वः सद्यो मातुलतातबालजननीनाशं प्रकुर्वन्ति ते। दशम या पंचम में मंगल हो तो मामा का तत्काल नाश होता है, रवि हो तो पुत्र का तथा चन्द्र हो तो माता का नाश होता है। किन्तु दशम में मंगल का मामा के मृत्यु से कुछ संबंध प्रतीत नहीं होता।

भारत सरकार के राज्यमंत्री डाक्टर पंजाबराव देशमुख की कुण्डली में दशम में कर्क राशि में मंगल है। विख्यात वैज्ञानिक सर रमन की कुण्डली में दशम में धनु राशि में मंगल है।

एकादश स्थान

आचार्य—लाभे प्रभूतधनवान्। विपुल धन प्राप्त होता है। गुणाकर ने भी यही फल कहा है।

पराशर—लाभे धनं सुखं वस्त्रं स्वर्णक्षेत्रादिसंग्रहम्। धन, सुख, वस्त्र, सोना, खेती आदि का लाभ होता है।

वैद्यनाथ—आयस्थे धरणीसुते चतुरवाक् कामी धनी शौर्यवान्। बोलने में चतुर, कामी, धनवान और शूर होता है।

कल्याणवर्मा—एकादशगे धनवान् प्रियसुखभागी तथा भवेत् शूरः। धनधान्यसुतैः सहितः क्षितितनये विगतशोकश्च ॥ यह धनवान्, सुखी, शूर, पुत्रों से युक्त तथा शोकरहित होता है।

वसिष्ठ—क्षितिजश्च नारीम्। स्त्रियों का लाभ होता है।

गर्ग—प्रभूतधनवान् मानी सत्यवादी दृढव्रतः। अश्वाढ्यो गीत-संयुक्तो लाभस्थे भूमिनन्दने॥ विधेयः प्रियवाक् शूरो धनधान्यसमन्वितः। लाभे कुजे मृतो मानी हृतचित्तोग्नितस्करैः॥ धनवान, मानी, सत्य बोलनेवाला, व्रत का दृढता से पालन करनेवाला, अश्वों का स्वामी, गायक, मधुर बोलनेवाला, सेवक, शूर, मृत जैसा निष्क्रिय तथा निराश अन्तःकरण का होता है। अग्नि और चोरों से इस की हानि होती है।

जीवनाथ—यदाये माहेयः प्रभवति बलादेव समरे। जयत्यद्धा शत्रूनपि सुतविषादेन विकलः॥ धनग्रामक्षोणीचपलतुरगानंदकृदसौ। परार्थव्यापारात् क्षतिमतितरामत्र लभते॥ संग्राम में शत्रुओं पर विजय पाने वाला तथा पुत्र के दुःख से पीडित होता है। इस मंगल के फल-स्वरूप जमीन, धन, वाहन आदि से सुख प्राप्त होता है। किन्तु दूसरों की दी हुई पूंजी से व्यापार किया तो उसमें बहुत नुकसान होता है।

नारायणभट्ट—का मत भी प्रायः इसी प्रकार है।

बृहद्यवनजातक—ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरूप्यवस्त्रागमं सुललितानि च वाहनानि। भूपप्रसादसुकुतूहलमंगलानि दद्यादवाप्ति-भवने हि सदावनेयः॥ सभी प्रकार की संपत्ति—जैसे तांबा, प्रवाल, चांदी, सोना, वस्त्र तथा वाहन—का सुख प्राप्त होता है तथा राजा की कृपा प्राप्त होकर मंगल होता है।

लाभे सृजेत् जिनवर्षलक्ष्मीम्। २४ वें वर्ष में धन प्राप्त होता है।

जागेश्वर—कुजैकादशे पुत्रचिन्ता नराणाम् भवेज्जाठरं गुल्मरोगादियुक्तम्। प्रतापो भवेत् सूर्यवत् तस्य नूनं: नृपात्तुल्यता वा भ्रमस्तस्य देहे ॥ पुत्रचिन्ता होती है। पेट में गुल्म आदि रोग होते हैं। इस का प्रताप सूर्य जैसा और वैभव राजा जैसा होता है। किन्तु इसे भ्रम भी हो सकता है।

काशीनाथ—लाभे भौमे भूरिलाभो नानापापान्नभक्षकः। नेत्ररोगी भूपमान्यो देवद्विजरतो नरः ॥ इसे बहुत लाभ होता है। यह गन्दा अन्न खाता है। आंखों के रोग होते हैं। राजा द्वारा सन्मान होता है। दव और ब्राह्मणों का भक्त होता है।

मन्त्रेश्वर—धनसुखयुतोऽशोकः शूरो भवेत्सुशीलः कुजे। धनवान, सुखी, शोकरहित, शूर तथा सदाचारी होता है।

जयदेव—इस का मत बृहद्यवनजातक के समान है।

आर्यग्रंथ—सुरजनहितकारी चायसंस्थे च भौमे नृप इव गृहमेधी पीडितः कोपपूर्णः। भवति च यदि तुंगो लोकसौभाग्ययुक्तो धनकिरणनियुक्तः पुण्यकामार्थलोभी ॥ देवों का भक्त, राजा के समान घर के काम करनेवाला, दुःखी तथा क्रोधी होता है। उच्च राशि में हो तो लोकप्रिय होता है। बहुत किरणों से युक्त हो तो पुण्य कार्य करने वाला और धन का लोभी होता है।

पुंजराज—एवं भूमिसुतेऽग्निशस्त्रजनितो यात्राधनैः साहसैः स्वर्णैर्वा मणिभूषणेसु नितरां द्रव्यागमः संवदेत्। यात्रा से, साहस से, अग्नि या शस्त्रों से अथवा सोने जवाहरात के व्यापार में बहुत धन प्राप्त होता है।

रामदयाल—पुंजराज के समान ही मत है।

नारायणभट्ट—सकृच्छून्यतार्थे च पैशून्यभावात् । धनहीन तथा दुष्ट होता है।

घोलप—स्वामी की संगति से सुख होता है। शत्रु से द्रव्य प्राप्ति होती है। अच्छे घर में रहता है। श्रेष्ठ कवि, वाहनों से युक्त, धनवान, मित्रोंद्वारा घिरा हुआ और प्रतापी होता है।

गोपालरत्नाकर— बहुत जमीन मिलती है। खेतीबाडी करता है। भाईबंद बहुत होते हैं। बहुश्रुत किन्तु ठगानेवाला होता है।

हिल्लाजातक--एकादशो भूमिसुतो धनलाभकरः सदा। सदा धनलाभ होता है।

यवनमत— इस के वस्त्र रेशमी या जरी के होते हैं। घर में नौकरचाकर होते हैं। घोडे, गाडी आदि वाहन होते हैं। कामुक, पडित तथा सत्यभाषी होता है।

पाश्चात्य मत— इस व्यक्ति के मित्र विश्वस्त नही होते। मित्रों द्वारा ठगाया जाता है। किन्तु इस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो मित्रों से अच्छा लाभ होता है। जलतत्त्व की राशि में यह मंगल हो तो मित्रों के सम्बन्ध से आपत्ति आती है। उन की जमानत भरनी पडती है। यह अग्नि तत्त्व की राशि में हो तो सट्टा, लाटरी, रेस और जुए में अच्छा लाभ होता है। इस स्थान में मंगल की आत्म संयमन की शक्ति प्रबल होती है।

अज्ञात—बहुकृत्यवान् । धनी। स्वगुणैः अमितलाभवान् । सिंहस्थे वा क्षेत्रेशयुते राज्याधिपत्यवान् । शुभद्वययुते महाराज्याधिपत्ययोगः । भ्रातृवित्तवान् । द्रव्यार्थमानभोगी। सन्ततिपीडा। विचित्रयानम् । हर्म्यभूस्वर्णलाभो भवति। बहुत काम करता है। धनवान तथा अपने गुणों से बहुत लाभ प्राप्त करनेवाला होता है।

यह सिंह राशि में अथवा लाभेश के साथ हो तो बडा अफसर होता है। दो शुभग्रहों के साथ हो तो बडे राज्य का अधिकारी होता है। भाई का द्रव्य प्राप्त होता है धन तथा मान प्राप्त होता है। सन्तान के बारे में कष्ट होता है। तरह तरह के वाहनों में घूमता है। बडी बिल्डिग, जमीन तथा सोने-जवाहरात की प्राप्ति होती है।

मेरे विचार—ऊपर के फलवर्णन में गर्ग, जीवनाथ, जागेश्वर, नारायणभट्ट इन के मत पुरुषराशियों में ठीक प्रतीत होते हैं। अन्य शास्त्रकारों ने कुछ शुभ फल कहे हैं उन का अनुभव स्त्री राशियों में आता है।

मेरा अनुभव—इस स्थान में मंगल पुरुष राशि में-मेष, सिंह, धनु, मिथुन, तुला या कुंभ में हो तो पुत्र नही होते, हुए भी तो जीवित नही होते अथवा गर्भपात होते हैं अथवा बडे होने पर मांबाप से झगडते हैं। महत्त्वाकांक्षा बहुत होती है किन्तु साध्य नही हो पाती। मंगल स्त्रीराशि में हो तो तीन पुत्र होते हैं। कीर्ति मिलती है। अफसर रिश्वत लें तो पकडे जाते हैं। (लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम और लाभ स्थान ये गुप्त बातें प्रकट करने के स्थान हैं। धन, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम ये स्थान गुप्त ही रखते हैं। व्यय स्थान के बारे में सन्देह है।) इस स्थान में स्त्री राशि के मंगल से द्रव्यलाभ तथा अधिकार प्राप्ति के लिए चाहे जो करने की प्रवृत्ति होती है। अपनी पत्नी का शील तक बेच सकते हैं। (इस फल का अनुभव मेष, तुला और वृश्चिक में शायद नही मिलता) पुरुष राशि में यह मंगल हो तो स्त्रियों को मासिक धर्म के समय तकलीफ होती है. बहुत रक्तस्राव होना, गर्भाशय फिसल जाना इत्यादि बातें होती हैं। सन्तति प्रतिबन्धक रोग होते हैं।

डाक्टरों के लिए यह योग अच्छा है। उत्तम सर्जन तथा स्त्री रोगों के विशेषज्ञ होते हैं। ग्रॅन्ट मेडिकल कालेज बंबई के भूतपूर्व डीन डाक्टर नाडगीर की कुण्डली देखिए–जन्म ता॰ १६–११–१८८०, स्थान धारवाड।
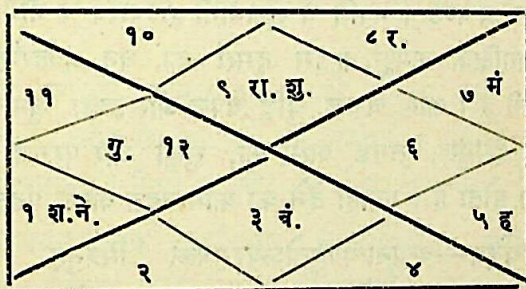
ये अस्थिशास्त्रज्ञ और सर्जन के रूप में प्रसिद्ध हुए। व्ययस्थान के रवि के फलस्वरूप जीवन में प्रगति हुई। गरीबों के लिए आपरेशन की मुफ्त व्यवस्था हो इस लिए इन ने हुबळी में कोआपरेटिव सोसाइटी का अस्पताल स्थापित किया। सन १९२७ में अर्धांगवायु से इन की मृत्यु हुई।

वकीलों की कुण्डली में यह योग अच्छा होता है। अदालत में प्रभाव पडता है और धन भी मिलता है। किन्तु एखाद बार सनद रद्द होने की नौबत आ जाती है। वादी और प्रतिवादी दोनों से रिश्वत लेने की इन्हें आदत होती है किन्तु उसी से कठिनाई होती है। इंजीनियर, टर्नर, फिटर, ड्राइवर, सुनार, लुहार, बढई आदि लोगों को यह मंगल अच्छा होता है।

बारहवां स्थान

वैद्यनाथ--भौमे विरोधी धनदारहीनः। विरोधक, धनहीन तथा स्त्रीहीन होता है।

आर्यग्रन्थ - परधनहरणेच्छुः सर्वदा चंचलाक्षश्चपलमतिविहारी हास्ययुक्तः प्रचण्डः। भवति च सुखभागी द्वादशस्थे च भौमे परयुवतिविलासी साक्षिकः कर्मपूरः॥ इसे दूसरों का धन अपहरण करने की इच्छा होती है। आंखे चंचल, बुद्धि चपल और इच्छा घूमनेफिरने की होती है। हंसमुख, तगडे शरीर का, सुखी और परस्त्री से सम्बन्ध रखनेवाला होता है। गवाही देने का काम बहुत करना पडता है।

जयदेव—बन्धनात्ययुतोऽस्पदृग्बलो मित्रनुत् कुमतिमान् कुजेऽन्त्यगे। कैद, मृत्यु के समान आपत्ति आदि से युक्त होता है। नेत्ररोगी और दुर्बल होता है। मित्रों को कष्ट देने वाला, दुर्बुद्धि होता है।

मन्त्रेश्वर--नयनविकृतः क्रूरोऽदारो व्यये पिशुनोऽधमः। नेत्ररोगी, क्रूर, स्त्रीहीन, दुष्ट और अधम होता है।

पुंजराज—भूमीपुत्रे चेत् व्ययस्थानसंस्थे द्रव्यं पुंसां नीयते क्षत्रियैस्तत्। घातः कट्यां दक्षभागे च पादे वामे कर्णे लोचने तत्स्त्रिया वा॥ पुण्याधिक्यादल्पकं तन्नृनार्योः पापाधिक्याच्चाधिकं वा तदंगं। दग्धं वाच्यं वन्हिना वाऽयुधोत्थं घातं यद्वा सव्रणं दीर्घकालम्॥ कुजो वा व्ययस्थितश्चेन्मनुजस्य नूनं। तदा पितृव्यो निधनं प्रयाति पितृष्वसादृष्टयुतो न सद्भिः॥ चोरी डकैतों से द्रव्यहानि होती है। स्त्री के बाईं ओर के किसी अवयव को-आंख, कान, पैर या हाथ को अपघात होता है। यह मंगल शुभ सम्बन्ध में हो तो जखम थोडे समय तक रहती है। अशुभ सम्बन्ध में हो तो अधिक काल तक रहती है। चाचा का और फूफा का मृत्यु होता है।

आचार्य—पतितस्तु रिःफे—पतित होता है।

गुणाकर—आचार्य के समान मत हैं।

कल्याणवर्मा—नयनविकारी पतितो जायाघ्नः सूचकश्च। द्वादशगे परिभूतो बन्धनभाक् भवति भूपुत्रे॥ नेत्ररोगी, पतित, अपमानित होता है। पत्नी का घात करनेवाला तथा कारागृह में जानेवाला होता है।

गर्ग--कोपनो बहुकामाढ्यो व्यंगो धर्मस्य दूषकः। क्रोधी, कामुक, किसी अवयव से हीन, धर्म भ्रष्ट होता है। भूमिजे द्वादशस्थे तु विद्वेषो मित्रबन्धुषु। मित्रों का और बंधुओं का द्वेष करता है।

बृहद्यवनजातक–स्वमित्रवैरं नयनातिबाधा क्रोधाभिभूतिं विकलत्वमंगे। धनव्ययं बन्धनमल्पतेजो व्ययस्थभौमो विदधाति नूनम्॥ मित्रों से वैर, आंखों को बहुत पीडा, बहुत क्रोध, अवयवों में हीनता, धनहानि, कारागृहवास, तेज कम होना ये इस मंगल के फल हैं। पंचवेदमिते कुजो धनहरः। ४५ वें वर्ष धनहानि होती है।

जागेश्वर—तथा कर्णकण्ठे परा रक्तपीडा जने नैव मान्यः। कान और गले में तथा खून बिगडने से बहुत पीडा होती है। लोगों में मान्यता नही मिलती।

काशीनाथ—असद्व्ययी व्यये भौमे नास्तिको निष्ठुरः शठः। बहुवैरी विदेशे च सदा गच्छति मानवः॥ अयोग्य कामों में खर्च करनेवाला, नास्तिक, निष्ठुर, दुष्ट, बहुतों का शत्रु और सदा विदेश जाने वाला होता है।

नारायणभट्ट—शाताक्षोऽपि तत्सक्षतो लोहघातैः कुजो द्वादशोऽर्थस्य नाशं करोति। मृषा किंवदन्तो भयं दस्युतो वा कलिः पारधीहेतुदुःखं विचिन्त्यम्॥ इस का शस्त्र का आघात भयंकर होता है।

धनहानि होती है। झूठीं अफवाहें उठती हैं। चोरों से तथा झगड़ों से और पराधीनता से भय होता है।

वसिष्ठ—क्षितिसुतो बहुपापभाजम्। बहुत पाप करता है।

जीवनाथ—कुजोऽपाये यस्य प्रभवति यदा जन्मसमये तदा वित्तापायं सपदि कुरुते तस्य सततं। कलंकप्रख्यातिं पिशुनजनतश्चौरकुलतो भयं वा शस्त्रदेरपि रिपुकृतं दुःखमाधिक्यं॥ तात्काल धनहानि होती है। दुष्टों के द्वारा झूठा कलंक लगाया जाता है। चोरों से, शस्त्रों से और शत्रुओं से बहुत भय होता है।

पराशर—व्यये नेत्ररुजं भ्रातृनाशं च कुरुते। नेत्ररोग होते है। भाई का मृत्यु होता है।

हिल्लाजातक—पंचवेदमिते वर्षे हानिदो द्वादशः कुजः। ४५ वें वर्ष हानि होती है।

घोलप—दण्ड और कैद होती है। खर्चीला, क्रूर, झगडालू होता है। द्रव्यलाभ के समय दुष्ट लोग विघ्न उपस्थित करते हैं। यंत्र, सांप तथा आग से भय होता है। कारागृह में मृत्यु होता हैं।

गोपाल रत्नाकर—निर्धन, वातरोग से पीडित, ठगाने वाला, बहुत शत्रुओं से युक्त होता है। घर आग से जलता है। स्त्री की मृत्यु होती है। यह मंगल शुभ सम्बन्ध में हो तो सब दुःख दूर होते हैं।

यवनमत—वाणी कडवी होती है। क्रोधी, दुःखी, बहुत प्रवास से त्रस्त, उष्णता से आंखों का नाश होना, मोतियाबिन्दु होना आदि इस मंगल के फल हैं।

पाश्चात्य मत—गुप्त शत्रुओं से भय होता है। शनि के साथ अशुभ योग हो तो चोर-डाकुओं से भय होता है। कारागृहवास होता है। साहसी किन्तु कभी पागल होता है नीच राशि

में अथवा अशुभ ग्रहों के साथ यह मंगल हो तो यह फल मिलता है। जुंआ, अस्वस्थता, साहस, हिंसक वृत्ति, अनैतिकता और राज-द्रोही प्रवृत्ति के कारण अपराध करने की प्रवृत्ति होती है।

आज्ञात—द्रव्याभावः। पापयुते दाम्भिकः। शत्रुयुते राज-बन्धनम्। द्रव्यनाशादियोगकरः। दुर्बुद्धिमान्। मातृनाशस्तथा च भ्रातृकष्टः अष्टाविंशतिवर्षे। निर्धनता और दुर्बुद्धि होती है। यह के साथ हो तो दांभिक होता है। शत्रुग्रह के साथ हो तो कैद होती है। द्रव्यनाश होता है। २८ वें वर्ष माता की मृत्यु होती है तथा भाई को कष्ट होता है।

मेरे विचार—इस स्थान में आर्यग्रन्थकार छोड कर अन्य सभी ने अशुभ फल वतलाए हैं। ये फल सभी राशियों में मिश्र रूप से अनुभव में आते हैं। तथापि मेष, सिंह, धनु, कर्क तथा मीन में अशुभ फल मिलते हैं। मिथुन, तुला, कुम्भ में अशुभ फल कम मिलते हैं। वृश्चिक और मकर में बहुत अशुभ फल मिलते हैं। हिल्ला-जातक तथा यवनजातक में ४५ वें वर्ष धनहानि बतलाई उस का अनुभव नही आता। अज्ञात ने २८ वें वर्ष माता की मृत्यु, भाई को कष्ट बतलाया यह अनुभव से ठीक प्रतीत होता है। आर्य-ग्रंथकार ने जो अच्छे फल कहे वे मेष, सिंह, मिथुन, सिंह, कर्क तथा तुला राशि के हैं। पराशर ने इस स्थान में भाई के मृत्यु का फल कैसे कहा यह स्पष्ट नही। शायद यह पितृस्थान से तीसरा स्थान है इस लिए कहा होगा।

मेरा अनुभव—यह व्यक्ति बहुत खाता है। कामुक होता है किन्तु स्त्रीसुख कम मिलता है। एक पत्नी की मृत्यु होकर दूसरी से व्याह करना पडता है। गणित की शिक्षा पूरी नही होती। मार्फोलाजी

(वनस्पति तथा प्राणियों के आकार तथा गठन का शास्त्र) का अध्ययन होता है। प्रामाणिक, सत्यवादी, उदार, क्रोधी, त्यागी होता है। ये लोग बहुत दान देनेवाले, संस्था स्थापन करनेवाले होते हैं। नेता हों तो क्रान्तिवादी होते हैं। भाई और सन्तति को यह योग मारक है। वंशक्षय हो सकता है। नागपुर के दानवीर रायबहादुर डी. लक्ष्मीनारायण की कुण्डली में व्ययस्थान में तुला राशि में मंगल था। स्वर्गीय देशबन्धु दास की कुण्डली में व्यय में सिंह में मंगल था। लाहोर के लाला गंगाराम की कुण्डली में व्यय में वृश्चिक मंगल था। इन तीनों का वंशक्षय हुआ। (आम तौर पर नवम स्थान में वंश का विचार किया जाता है। किन्तु मातृस्थान से नौवां व्ययस्थान होता है। अतः माता के पूर्वकर्म के दोष से इस व्यक्ति का वंशक्षय होता है।) सन्तति कम होती है। अधिक हुई तो पुत्रसन्तति नही होती। तीखे, तले हुए पदार्थ खाने की रुचि होती है। विदेशयात्रा करनी पडती है। परस्त्री गमन करते है। सुधारक, नवमतवादी होते है। पतिपत्नी में दिन में अच्छे संबंध रहते हैं किन्तु रात में झगडे होते हैं। मन की इच्छा-आकांक्षाएं पूरी नही होतीं तथापि २६ वें वर्ष से प्रसिद्धि मिलती है। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध साहित्यिक श्री. खांडेकर की कुण्डली में व्यय में धनु राशि में मंगल है। दयालु, सब के लिए कष्ट करनेवाला होता है। यह अपना, यह पराया ऐसा भेदभाव नही रखते। क्रोधी, स्पष्टवक्ता होते हैं। सुख प्राप्त करने की हमेशा चिन्ता करते हैं। कर्ज हो तो मृत्यु के पहले सब कर्ज चुकाया जाता है। गिरना, विष बाधा होना, अपघात होना आदि का डर होता है। सिर दर्द, आधा सिर दुखना, खून बिगडना, गुह्य रोग, वार्धक्य में अपचन आदि विकार होते है। एक शास्त्रकार ने माता की मृत्यु की इच्छा करना ऐसा फल कहा है

किन्तु मुझे इस योग में पिता की मृत्यु की इच्छा करनेवाले मिले हैं। धनसंग्रह कभी नही होता। कोई पैसे उठा ले जाता है, उधार ले जाता है अथवा गुम जाते हैं। इस मंगल के अशुभ फलों का वर्णन सब शास्त्रकारों ने किया ही है।

प्रकरण ६

महादशा विचार

रविविचार में महादशा की संगति के बारे में लिखा है वही पद्धति मंगल की महादशा के लिए भी समझ लेना चाहिए।

मृग, चित्रा तथा धनिष्ठा नक्षत्रमें यह महादशा जन्म से ७ वर्ष तक होती है। इन व्यक्तियों की कुण्डली में लग्न, धन, पंचम, षष्ठ, अष्टम या व्यय स्थान में मंगल हो तो इन्हे बचपन में होने वाले बहुतसे विकार होते हैं। इनके मामा, मौसी या भाई की मृत्यु होती है। चेचक, अतिसार आदि रोग होते हैं। मां को तकलीफ होती है।

रोहिणी, हस्त तथा श्रवण नक्षत्र हो तो यह महादशा १० वें वर्ष से १७ वें वर्ष तक होती है। इस समय विषमज्वर आदि दीर्घ कालीन रोग होते हैं। स्कूल में ध्यान न देना, परीक्षा में फेल होना, पिता को तकलीफ होना, ये फल इस समय मिलते हैं।

कृत्तिका, उत्तराषाढा तथा उत्तरा नक्षत्र हो तो यह महादशा १७ वें से २४ वें वर्ष तक होती है। इस समय मां या पिता के मृत्युयोग का विशेष सम्भव होता है। बहिन की भी मृत्यु होती है। शिक्षा में कठिनाई उत्पन्न होती है। शरीर पर फोडे फुन्सी होती हैं।

भरणी, पूर्वा तथा पूर्वाषाढा इन नक्षत्रों में यह महादशा ३३ वें वर्ष से ४३ वें वर्ष तक आती है। इस समय शिक्षा समाप्त होकर

धन प्राप्ति का प्रारम्भ होता है। विवाह हुआ हो तो पत्नी की मृत्यु का योग होता है तथा दूसरा विवाह होता है। मां या पिता की मृत्यु होती है। इन नक्षत्रों में जन्म के समय शुक्र की महादशा होती है। उसके बीस वर्षों में कितने भुक्त हुए और कितने भोग्य रहे इसका विचार जरूर करना चाहिए। यदि भरणी की ६० घटिकओं में जन्म समय ४० घटिका व्यतीत हुई हों तो शुक्र की महादशा जन्म समय से छठवें वर्ष तक ही रहेगी और इस लिए मंगल की महादशा २३ वें वर्ष से ३० वें वर्ष तक होगी। इस समय कुण्डली में मंगल अच्छा हो तृतीय, पंचम, षष्ठ, दशम, एकादश या व्यय स्थान में हो तो विदेश में प्रवास करने का मौका मिलता है। शिक्षा पूरी होकर कीर्ति प्राप्त होती है। अनपेक्षित धन प्राप्त होता है। इस्टेट मिलती है। चुनाव में विजय प्राप्त होती है। कोर्ट के व्यवहारों में सफलता मिलती है। कुछ सन्तानों की या भाई या बहिन की मृत्यु की सम्भावना होती है। भाई भाई में बटवारा होने का योग होता है।

अश्विनी, मघा तथा मूल नक्षत्रों में यह महादशा ४३ वें वर्ष से ५० वें वर्ष तक होती है। इस समय इस्टेटकी व्यवस्था करनी पडती है। पुत्रोंस तकलीफ होती है। पत्नी और पुत्रोंके अनुरोधसे चलना पडता है।

पुष्य, अनुराधा, तथा उत्तराभाद्रपदा इन नक्षत्रों में ६९ से ७६ वें वर्ष तक यह महादशा होती है। इस समय मृत्यु ही एकमात्र फल कहा जा सकता है।

मंगल की दशा क फल के विषय में शास्त्रकार लिखते हैं—दशादौ सुखमाप्नोति दशान्ते कष्टमादिशेत्। अर्थात् इस दशा के आरम्भ में सुख और अन्तिम समय में कष्ट होता है। मध्यकाल का

फल वतलाया नहीं है अतः वह साधारणतः अच्छा समझना चाहिए। और एक वचन इस प्रकार है –भूनन्दनस्य पाकादौ मानहानि-धनक्षयः। मध्ये नृपाग्निचौराद्यैर्भीतिश्चान्ते तथा भवेत्॥ इस दशा के आरम्भ में मानहानि ओर धनहानि होती है तथा मध्य और अन्तिम भाग में सरकार, अग्नि और चोरों से डर पैदा होता है। एक उदाहरण से स्पष्टीकरण करते हैं। एक क्ष–जन्म ता० २६–९–१८८४ सुबह ९–२७ अक्षांश १९–३५
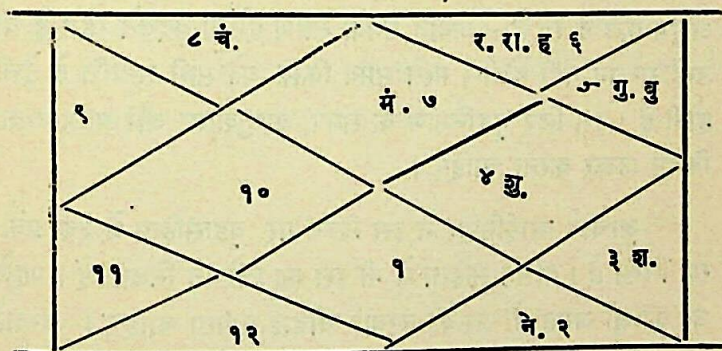
इन महाशय ने बहुत परिश्रम से एक अंग्रेजी हायस्कूल की स्थापना की तथा संस्था को बहुत प्रगति की। इन्हें ही मंगल की महादशा (जो १८–२–१९३० से १८ २ -१९३७ तक थी) आरम्भ होने पर गांव के लोगों द्वारा तरह तरह के आरोप लगाए गए और कोर्ट में भी इन की पराजय हुई। आखिर उन्हें वह संस्था छोड कर अन्यत्र जाना पडा।

मंगल की महादशा के बारे में विस्तृत विवेचन सर्वार्थचिन्तामणि, बृहत् पाराशरी आदि ग्रन्थों में देखना चाहिए।

प्रकरण ७

वास्तु विचार

आधुनिक युग में लोग घर बांधते समय सिर्फ कांट्रेक्टर के प्लान पर ही अवलम्बित रहते हैं। किन्तु उस घर के रहनेवालों पर उसका क्या प्रभाव पडेगा इसका बिलकुल ही विचार नहीं किया जाता। बम्बई में ऐसे कई बडे बडे बिल्डिंग हैं जो निर्माण होने के समय से ही अशुभ फल दे रहे हैं—अर्थात् उनके स्वामी हमेशा बदलते रहते हैं या उन्हें सन्तान नही होती। मरते समय किसी को सारी सम्पत्ति दे देनी होती है। इस लिए गृहनिर्माण के समय वास्तुशास्त्र और ग्रहमान का विचार जरूर करना चाहिए।

आचार्य वराहमिहिर ने इस विषय पर बृहत्संहिता में एक प्रकरण लिखा है। वसिष्ठ संहिता में भी इस का विवेचन मिलता है। पहले घर की जो जगह हो उसकी लम्बाई चौडाई नापना चाहिए। लम्बाई और चौडाई के गुणाकार से क्षेत्रफल प्राप्त होता है। इसे ८ आठ से भाग देना चाहिए। इसमें जो शेष रहता है उसे आय कहते हैं। इन आठ आयों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—१ ध्वज, २ धूम ३ सिंह ४ श्वान ५ वृष ६ गर्दभ ७ गज ८ ध्वांक्ष उदाहरणार्थ—किसी जगह की लम्बाई ९५ हाथ और चौडाई ८३ हाथ है। इस जगह का क्षेत्रफल (९५×८३) ७८८५ हुआ। इसे आठ से भाग देने पर ५ शेष रहे। यह वृष आय हुआ। इस इस प्रकार आयसाधन किया जाता है। इनमें सम आय अशुभ और विषम आय शुभ समझे जाते हैं। ब्राह्मणों के लिए ध्वज, क्षत्रियों के लिए सिंह, वैश्यों के लिए वृषभ तथा शूद्रों के लिए गज ये आय अच्छे होते हैं।

मंगल भूमि का कारक है उसी प्रकार नये घर बनवाने का भी कारक ग्रह है। अतः जन्मकुण्डली में मंगल नीच, वक्री, स्तंभित या अस्तंगत हो तो घर बनवाते समय ऊपर की रीति से आयसाधन जरूर करना चाहिए।

घर के आकार का भी उसमें रहनेवालों पर प्रभाव पडता है। जिस घर में हमेशा अदालती झगडे चालू रहते हैं, पत्नी और पुत्र बीमार रहते हैं, झगडे होते हैं, अन्न होकर भी खाने के वक्त ही तकरार होती है, अकाल मृत्यु होते हैं, एक या तीन साल के बाद एखाद मृत्यु होते रहता है, असमाधान रहता है, संकट आते हैं, शत्रुत्व बढता है, ऐसा घर लाभदायक नही होता यह स्पष्ट है। ऐसे घरों के चार प्रकार हैं। इनके आकार इस प्रकार हैं—
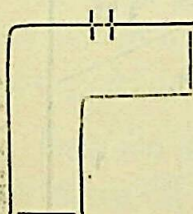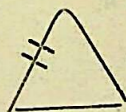
क्र. १ पुंचक   क्र. २ व्याघ्रमुख   क्र. ३ त्रिकोण   क्र. ४ वर्तुलमुख

पहले प्रकार में दारिद्रय और शारीरिक पीडा बहुत होती है। दूसरे प्रकार में वंशक्षय होता है। तीसरे प्रकार में हमेशा होनेवाले झगडों से मानसिक स्वास्थ्य नष्ट होता है। बीमारी, कर्ज, फौजदारी मामले आदि से तकलीफ होती है। चौथे प्रकार में चोरी, व्यभिचार, लापरवाही आदि की वृद्धि होती है। घर में असन्तोष बहुत होता है।

कुण्डली में मंगल बलवान हो तो खेत या घर खरीदने के बाद अच्छी प्रगति होती है। ऐसे घर दो प्रकार के हैं—

क्र. गोमुख क्र. २ चतुरस्र
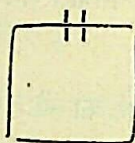
अब वास्तुविचार से सम्बन्धित एक उदाहरण देखिए—एक क्ष—जन्म ता. ४-२-१८९०।
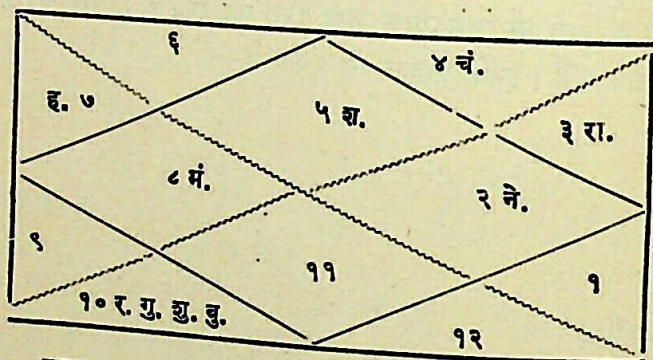
इनका घर व्याघ्रमुखी था। इसमें २१ वर्षों में ७ मृत्यु—तीन तीन वर्षों के अन्तर से और एक ही रोग से हुए। धन बहुत मिला किन्तु सन्तति नही हुई। सन १९२७ में वह घर बेचकर विवाह किया। तब संपत्ति विशेष नही रही किन्तु एक लडका और लडकी हुई। आनंद और सुख का वातावरण उत्पन्न हुआ।

यहां ध्यान में रखना चाहिए इस विषय में शनि के योग भी महत्त्वपूर्ण होते हैं।

परिशिष्ट १ सन्तति विचार

जिन स्त्रियों को सन्तति नहीं होती अथवा होकर चार वर्ष की आयु में ही मर जाती है उन्हें स्वप्नों में कई चमत्कारिक दृश्य दिखाई देते हैं। सांप को मारना अथवा मरवाना या उसके टुकडे किये जाना, गोद से किसी के द्वारा बच्चा छीना जाना, लडाई झगडों में फंसना, घर गिरता हुआ दिखना, वृक्ष अथवा उसके फल गिरते हुए दिखना, तालाव, नदी अथवा समुद्र में गिरना और उससे वाहर निकलने की कोशिश होना विधवा स्त्री दिखना—ये ऐसे कुछ दृश्य हैं जो ऐसी स्त्रियों को स्वप्नों में दिखाई देते हैं। ये पूर्व जन्म के कर्मों के फल हैं ऐसा समझना चाहिए। इन दोषों के परिहार के बाद ही सन्तति योग हो सकता है। रवि या गणपति की उपासना अथवा नागवलि, नारायणबलि आदि विधि करने से ये पूर्व जन्म के दोष दूर हो सकते हैं।

सन्तति योग का विचार करते समय इस युग में पति या पत्नी सन्तति नियमन के साधनों का कहां तक प्रयोग करते हैं इसका भी विचार करना आवश्यक है। यदि किसी पुरुष ने सन्तति प्रतिबन्धक आपरेशन कर लिया हो तो उसकी पत्नी की कुण्डली में सन्तति योग होने पर भी इन्हें पुत्र नही हो सकेगा। उदाहरणार्थ दो कुण्डलियां देखिए—

पति	पत्नी
जन्म ता. २१-९-१९११ मध्यान्ह	जन्म ता. २९-९-१९१४
अक्षांश १९-५० रेखांश ७४-४०	सुबह ४-४
	अक्षांश १६-४८ रे. ७५-४०

१० ८
११ ९ ७ गु
१२ ६ र.
श. रा. १ ३ चं ५ शु बु
२ मं. ४

र. बु. के. ६ ने. ४
७ चं. शु. ५ ३ मं.
८ २ श.
गु. ९ ११ १
ह. १० १२ रा.

ये दोनों वहुत सुन्दर थे। पत्नी की आंखें बडी और शुक्र के समान तेजस्वी थीं तथा केश लंबे और काले थे। कद ऊंचा और वर्ण गोरा तथा बहुत ही आकर्षक था। इन्हें एक कन्या हुई। फिर अधिक सन्तति होने से पत्नी का सौन्दर्य नष्ट होगा इस भय से पति ने सन्तति प्रतिबन्धक आपरेशन कर लिया। इस पत्नी की कुण्डली में सन्तति योग है फिर भी उसे सन्तति प्रान्त नही हो सकेगी। इस प्रकार की परिस्थिति समझ कर ही भविष्य कथन करना चाहिए।

वर्तमान युग में जो अविवाहित युवतियां नौकरी कर सम्पत्ति उपार्जन करती हैं उनकी कुण्डली में भी इसी प्रकार परिस्थिति का प्रभाव देखना होता है—अथात् इन कुण्डलियों में पंचम और सप्तम स्थान का कोई विचार नही हो सकता। सप्तम स्थान से पुरुष सौख्य का विचार अवश्य हो सकेगा। इस स्थान से उपजीविका का भी फल देखा जा सकता है। इस विषय में धनस्थान और धनेश का भी विचार करना होगा।

परिशिष्ट २ विवाहविचार

भारत में विवाह के समय वधूवरों की पत्रिकाओं में मंगल का बहुत विचार किया जाता है। आम तौर पर मंगल के वर को मंगल की वधू ठीक समझी जाती है। अथवा गुरु और शनि का बल देखा जाता है। मंगल के मारकत्व के बारे में एक श्लोक इस प्रकार है—लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृविनाशाय भर्ता कन्याविनाशकः॥ जिसकी कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या व्यय स्थान में मंगल है उस कन्या के पति का मृत्यु होता है और उस पति की पत्नी का मृत्यु होता है। इस योग के अपवाद भी हैं। लग्न में मेष, चतुर्थ में वृश्चिक, सप्तम में मकर, अष्टम में कर्क तथा व्यय में धनु राशि में हो तो यह मंगल वैधव्ययोग अथवा द्विभार्यायोग नही करता।

कन्या की कुण्डली से पति का विचार करते समय रवि और मंगल इन दो ग्रहों का विचार करना चाहिए। रवि की स्थिति से पति का बल, वय, शिक्षा, दिशा और प्रेम इन विषयों का विचार करना चाहिए। मंगल की स्थिति से पति की आयु, उत्साह, सामर्थ्य, इज्जत, व्यवसाय उन्नति आदि का विचार करना चाहिए। रवि शनिद्वारा दूषित हो तो पति अधिक उम्र का, दुर्बल, रोगी, निर्दय, दुष्ट मिलता है ऐसा पाश्चात्य ज्योतिषियों का मत है। मेरा अनुभव भिन्न है। ऐसी स्थिति में विवाह देर से होता है—पचास जगह यत्न करने के बाद सम्बन्ध पक्का होता है। विवाह के समय पिता दरिद्री होता है अथवा उसकी मृत्यु के बाद विवाह होता है। किन्तु पति तरुण होता है और प्रेमपूर्वक रहता है। विवाह के बाद पिता की प्रगति होती है। मंगल शनि द्वारा दूषित हो—इनमें

युति, केंद्र, द्विर्द्वादश अथवा प्रतियोग हो या मंगल से चौथे या आठवें स्थान में शनि हो तो अशुभ फल मिलते हैं—विधवा होना, पति से विभक्त होना, सन्तति न होना आदि फल मिलते हैं। सन्तति नही हुई तोही संपत्ति मिलती है। पुत्र होते ही दीवाला निकलना, नौकरी छूटना, सस्पेंड होना, रिश्वत खाने के अपराध में फंसना आदि प्रकार होते हैं और आत्महत्या अथवा देशत्याग का विचार करने लगते हैं। जब जन्मस्थ मंगल से गोचर शनि का भ्रमण होता है तब ये फल मिलते हैं। पति बुद्धिमान, कलाकुशल, उत्साही होकर भी कुछ कर नही पाता। ९० वें वर्ष तक स्थिरता प्राप्त नही होती। ऐसी कन्या के विवाह के बाद उसका पति दूसरा विवाह कर सकता है। सौत आनेपर भाग्योदय होता है। लग्नादि पांच स्थानों से अन्य स्थानों में मंगल हो तो बाधक नही समझा जाना। किन्तु शनि द्वारा दूषित हो तो उन स्थानों में भी ये ही अशुभ फल मिलते हैं। अब कुछ उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण देते हैं—

उदाहरण १.

पत्नी-जन्म पौष शु. ९ शक १८३३ सोमवार दोपहर १-४९

पति-जन्म भाद्रपद शक १८२४ इष्टघटी २२-१८

इसने पत्नी का परित्याग कर समाज में जिसे मान्यता नही एसी स्त्री से पुनर्विवाह किया। पत्नी की कुण्डली में मंगल के पीछे शनि है। पति के लग्न में भी शनि है अतः उसका मृत्युयोग नही हुआ।

उदाहरण २

पत्नी-जन्म ता. ७-१-१९१२ इष्ट घटी २१-३९ अक्षांश १९-५२ रेखांश ७४-३४	पति-जन्म कार्तिक शु. ९ शकः १८२६ बुधवार सुबह ८ अ० १७ रे. ७४-३०

इनका विवाह फरवरी, सन १९२४ में हुआ। छह वर्ष बाद यह कन्या विधवा हुई। यहां मंगल के पीछे शनि है।

उदाहरण ३.

एक स्त्री-जन्म-पौष शु. १९ शक १८३६ इष्टघटी ५९ स्थान रत्नागिरि।
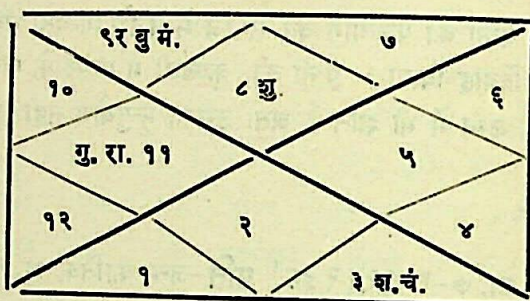
इस स्त्री का विवाह हुआ किन्तु पति से कभी सम्बन्ध नही हुआ–उसने इसका हमेशा के लिए त्याग कर दिया। इस कुण्डली में पतिकारक दोनों ग्रह रवि तथा मंगल शनि के सप्तममें हैं और चंद्र शनि के साथ अष्टम में है।

उदाहरण ४.

पत्नी–जन्म आश्विन व. शक १८४७ इष्ट घटी ९८-४६ बंबई | पति–जन्म आषाढ कृ. ३ शक १८३६ इष्ट घटी ९८–४३ स्थान रत्नागिरी
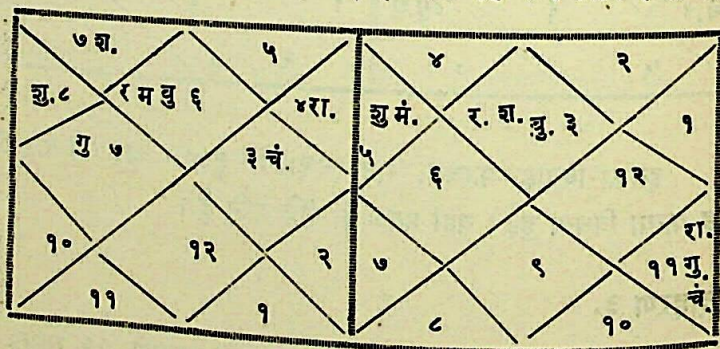
इनका विवाह मई, सन १९३९ में हुआ किन्तु उसी समय पति पागल हुआ। इस स्त्री को विवाहसुख बिलकुल नही मिला। यहां दोनों

के लग्न में रवि, शनि, बुध तथा रवि, मंगल, बुध ऐसे ग्रह हैं। किन्तु पत्नी की कुण्डली में मंगल शनि के पीछे है और शीघ्र ही उनकी युति हो रही है।

उदाहरण ५.

पत्नी–जन्म पौष कृ. ९ शक १८३६ इष्टघटी १६–१० | पति–जन्म कार्तिक कृ. १२ शक १८२६ इष्ट घटी १२–३०

इस स्त्री की कुण्डली में रवि, मंगल, बुध के सप्तम में शनि है। इन्हें पुत्रसन्तति नही हुई अतः पति का अच्छा भाग्योदय हुआ। पुत्र होते ही यह समृद्धि नष्ट होने का डर है।

उदाहरण ६.

एक स्त्री–जन्म भाद्रपद व. १४ सोमवार शक १८३५ इष्टघटी ३–३९ स्थान वाडे (जि. ठाणा)
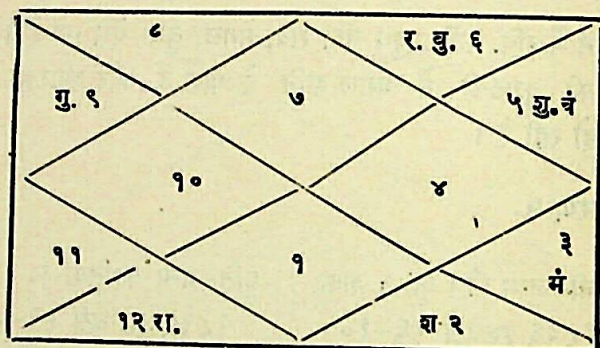
विवाह के बाद पति ने इस स्त्री का हमेशा के लिए परित्याग किया। यहां मंगल के पीछे शनि है।

उदाहरण ७.

पत्नी-जन्म भाद्रपद कृ. ९ शक १८४३ इष्टघटी ३-१०	पति-जन्म ता. २८-६-१९१९ बुधवार सुबह ७-४५ बम्बई
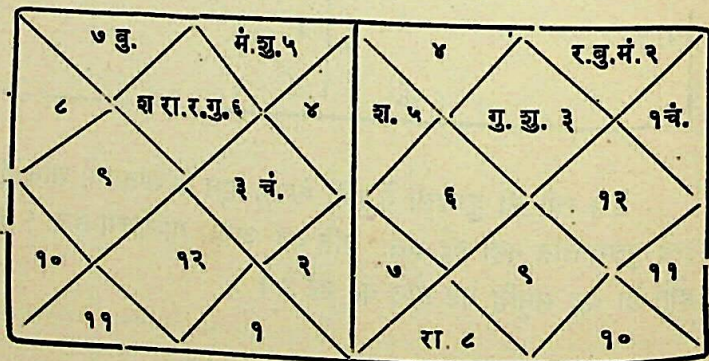
इनका विवाह मई, सन १९३९ में हुआ किन्तु पति तभी से बीमार हुआ और जनवरी, १९४१ में उसकी मृत्यु हुई। यहां दोनों के व्ययस्थान में मंगल है। अतः कई ज्योतिषियों ने इन्हें अनुरूप बताया।

किन्तु स्त्री के लग्न में शनि, राहु, रवि ये पापग्रह होने से वैधव्य योग हुआ। इस विषय में वसिष्ठ का वचन है—मूर्तौ राव्हर्कभौमेषु रंडा भवति कामिनी—लग्न में राहु, रवि या मंगल हो तो वह स्त्री विधवा होती है। इस तरह स्त्री की कुण्डली में पति को मारक तीन योग हैं और पति की कुण्डली में पत्नी को मारक एक ही योग है।

उदाहरण ८.

पत्नी—जन्म ता. १९-११-१९२३ | पति—जन्म ता. ७-४-१९२६
सूर्योदय,अक्षांश १८-३६रे.७२-५६ | सुबह ४-२०अ १८-१२ रे.७४-२०

गु शु. ८
मं. ६
९
र श.बु ७
५ रा.
चं. १०
४
११
१
३
१२
२

६
मं. ४
७
५
३श.
२ चं.
८
९
११
१
१० रा.
१२र बु शु.

यहां भी दोनों के व्यय में मंगल है यह देखकर विवाह करा दिया गया। किन्तु इन्हें विवाहसुख बिलकुल नही मिला। स्त्री को देखते ही पति को १०४ तक बुखार चढता था। अतः उसे पिता के घर ही रहना पडा। कन्या के लग्न के शनि, रवि का यह फल मिला।

उदाहरण ९

श्रीमती हरिगंगाबाई शहा, वसई, जन्म—भाद्रपद व० ४ शक १८११ सूर्योदय, स्थान सुरत।
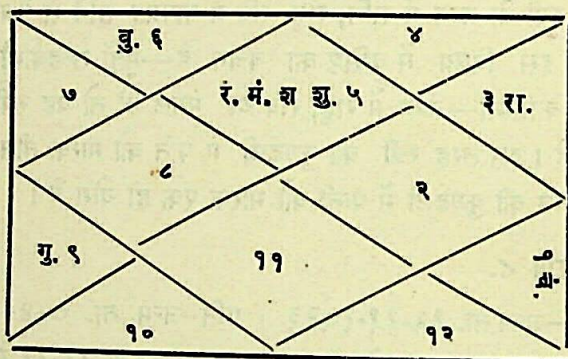
इसके जन्म के बाद तीसरे महिने में पिता का मृत्यु हुआ। तेरहवें वर्ष (मार्गशिर कृ. ११ शक १८२४) विवाह हुआ। उस के बाद तीसरे ही महिने में पति का मृत्यु हुआ। सन्तति नही हुई। यहां भी लग्न में रवि, शनि तथा मंगल हैं।

उदाहरण १०—

एक स्त्री—जन्म ता. १८-७-१९२३ दोपहर ११-२९ स्थानपूना।
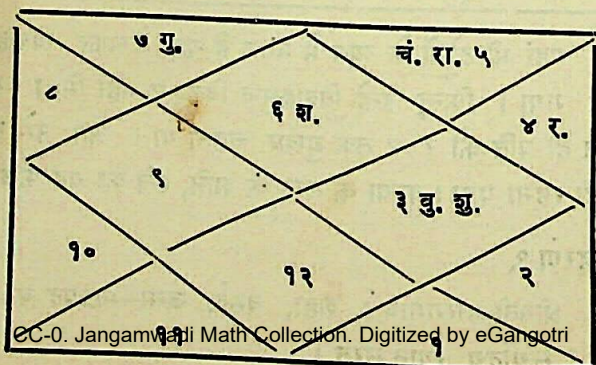
इसका विवाह ४-२-१९४१ को हुआ और १०-३-१९४१ को इसके पति की मृत्यु हुई। वह डाक्टर था और यह लडकी भी डाक्टरी पढने लगी। लग्न में शनि, व्यय में राहु, चंद्र तथा धनस्थान में गुरु इस योग से यह वैधव्य हुआ।

उदाहरण ११

पत्नी—जन्म मार्गशिर कृ. ९ शक १८२९ इष्ट घटी ३६-५४ | पति—जन्म श्रावण व ९ शुक १८१५ इष्ट घटी ०-३७ ता. ४-९-१८९३

इन दोनों ने विवाह के बाद गरीबी में ही दिन बिताए। विशेष समृद्धि की आशा बिलकुल नही। किन्तु दोनों में बहुत प्रेम है और सन्तति भी अच्छी हुई। यहां पत्नी की कुण्डली में अष्टम के मंगल के पीछे शनि है। किन्तु पति की कुण्डली में लग्न में रवि, मंगल और धनस्थान में शनि, शुक्र हैं। अतः दुष्परिणाम नही हो सका।

उदाहरण १२—

एक स्त्री—जन्म ता. २-१२-१९१२ रात ९ स्थान अमरावती।
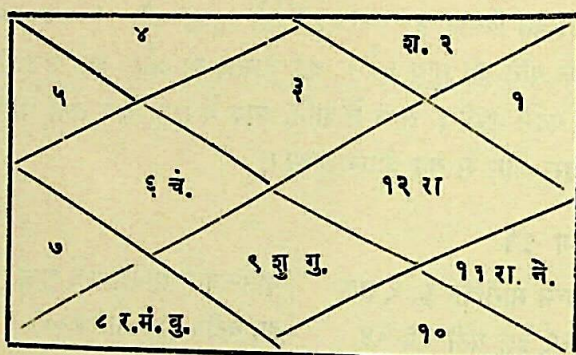
पति की कुण्डली में कुंभ लग्न में गुरु है, व्यय में शनि तथा दशम में मंगल है। यहां स्त्री की कुण्डली में रवि मंगल शनि द्वारा दूषित हैं। अतः भाग्योदय होने पर भी पुत्रसन्तति नही हुई।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होगा कि जिस कन्या की कुण्डली में शनि-मंगल का अशुभ योग है अथवा चतुर्थ में शनि है अथवा धन, चतुर्थ, या सप्तम में पापग्रह हैं उसका विवाह नही होता, हुआ तो संसारसुख नही मिलता अथवा वैधव्य प्राप्त होता है। ऐसी कन्या के वर की कुण्डली में शुक्र और शनि का अशुभ योग होना चाहिए—युति, प्रतियोग अथवा द्विर्द्वादश योग होना चाहिए। उन दोनों का जीवन गरीबी में किन्तु समाधानपूर्वक बीतेगा। जिस तरह कन्या की कुण्डली में मंगल दूषित हो तो पति पर अनिष्ट परिणाम होता है उसी तरह पति की कुण्डली में शुक्र दूषित हो तो पत्नी पर अनिष्ट परिणाम होता है इस लिए इन दोनों अशुभ योगों के इकट्ठे आने से सुखमय जीवन बीतता है। अतः विवाह के समय सिर्फ मंगल पर अवलंबित नही रहना चाहिए। रवि और शनि के संबंध भी देखना जरूरी है।

अद्वितीय सर्वोत्कृष्ट ज्योतिष ग्रंथ

कै. ज्यो. ह. ने. काटवे

				रु. आ.
१ रवि-विचार	मराठी	दुसरी आवृत्ति		२-०
२ चंद्र-विचार	,,	,,	...	२-०
३ मंगळ-विचार	,,	,,	...	२-८
४ बुध-विचार	,,	,,	...	२-०
५ गुरु-विचार	,,	,,	...	२-८
६ शुक्र-विचार	,,	,,	...	२-८
७ शनि-विचार	,,	,,	...	२-८
८ भाव-विचार	,,	,,	...	२-०
९ गोचर-विचार	,,	,,	...	२-८
१० शुभाशुभ ग्रहनिर्णय-विचार		पहिली आवृत्ति	...	२-०
११ भावेश-विचार	,,	दुसरी आवृत्ति	...	२-८
१२ ग्रहण विचार	,,	,,	...	३-८
१३ योग-विचार भाग १ ला	,,	,,	...	१-०
१४ योग-विचार भाग २ रा	,,	पहिली आवृत्ति	...	२-०
१५ योग-विचार भाग ३ रा	,,	,,	...	२-०
१६ योग-विचार भाग ४ था	,,	,,	...	१-०
१७ योग-विचार भाग ५ वा	,,	,,	...	१-८
१८ योग-विचार भाग ६ वा	,,	,,	...	२-०
१९ योग-विचार भाग ७ वा	,,	,,	...	२-०
२० अध्यात्म ज्योतिष-विचार हिन्दी		,,	...	१०-०
२१ रवि-विचार	,,	,,	...	१-८
२२ चन्द्र-विचार	,,	,,	...	२-०
२३ मंगल-विचार	,,	,,	...	२-८

नागपुर प्रकाशन, सीताबर्डी, नागपुर नं १